खण्ड-02 सत्र - 02 (भाग-02) / अंक- 26

मंगलवार 22 दिसम्बर, 2015 / 01 पौष 1937 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

छठी विधान सभा

द्वितीय सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड-02 (भाग-02) में अंक 26 तक सम्मिलित हैं)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-2 भाग (2) मंगलवार, 22 दिसम्बर, 2015/1 पौष, 1937 (शक) अंक 26

दिल्ली विधान सभा

सदन अपराह्न 2:00 बजे आरम्भ हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय **(श्री राम निवास गोयल)** *पीठासीन हुए।*

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए :

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुएः-

1. श्री शरद कुमार
2. श्री संजीव झा
3. श्री पंकज पुष्कर
4. श्री पवन कुमार शर्मा
5. श्री अजेश यादव
6. श्री महेन्द्र गोयल
7. श्री वेद प्रकाश
8. श्री सुखवीर सिंह दलाल
9. श्री ऋतुराज गोविन्द
10. श्री रघुविंद्र शौकीन
11. सुश्री राखी बिड़ला
12. श्री जितेन्द्र सिंह तोमर
13. श्री राजेश गुप्ता
14. श्री अखिलेश पति त्रिपाठी
15. श्री सोमदत्त
16. सुश्री अलका लाम्बा
17. श्री आसिम अहमद खान
18. श्री विशेष रवि
19. श्री हजारी लाल चौहान
20. श्री शिव चरण गोयल

21. श्री जरनैल सिंह (तिलक नगर)
22. श्री राजेश ऋषि
23. श्री महेन्द्र यादव
24. श्री नरेश बाल्यान
25. श्री आदर्श शास्त्री
26. श्री कैलाश गहलोत
27. सुश्री भावना गौड़
28. श्री सुरेन्द्र सिंह
29. श्री विजेन्द्र गर्ग
30. श्री प्रवीण कुमार
31. श्री मदन लाल
32. श्री सोमनाथ भारती
33. श्रीमती प्रमिला टोकस
34. श्री नरेश यादव
35. श्री करतार सिंह तंवर
36. श्री प्रकाश
37. श्री अजय दत्त
38. श्री सौरभ भारद्वाज
39. सरदार अवतार सिंह कालकाजी
40. श्री सही राम
41. श्री नारायण दत्त शर्मा
42. श्री अमानतुल्लाह खान
43. श्री राजू धिंगान
44. श्री मनोज कुमार
45. श्री नितिन त्यागी
46. श्री एस. के. बग्गा
47. श्री अनिल कुमार बाजपेयी
48. श्री राजेन्द्र पाल गौतम
49. सुश्री सरिता सिंह
50. मो. इशराक
51. श्री श्रीदत्त शर्मा
52. चौ. फतेह सिंह

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-2 भाग (2) मंगलवार, 22 दिसम्बर, 2015/1 पौष, 1937 (शक) अंक 26

दिल्ली विधान सभा

सदन अपराह्न 2:00 बजे आरम्भ हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय **(श्री राम निवास गोयल)** *पीठासीन हुए।*

(राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम्)

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, छठी विधान सभा के दूसरे सत्र के द्वितीय भाग में बुलाए गए इस सत्र में आप सबका हार्दिक स्वागत है। मुझे आशा है कि आप हमेशा की तरह सत्र की कार्यवाही में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे तथा सदन चलाने में मुझे पूरा सहयोग देंगे।

शोक संवेदना

माननीय सदस्यगण, जैसा कि आप सबको विदित है कि आज प्रातः एक अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुई जिसमें एक छोटे विमान के पालम एअरपोर्ट के समीप दुर्घटनाग्रस्त होने से उसमें बी. एस. एफ. के तीन अधिकारियों एवं सात टैक्नीशियन्स की मृत्यु हो गई।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से मृतकों के परिजनों प्रति गहरा शोक एवं हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

अब सदन दिवंगत आत्माओं के सम्मान में दो मिनट का मौन धारण करेगा।

(सदन द्वारा दो मिनट के लिए मौन धारण किया गया)

अध्यक्ष महोदय : ओम शांति, शांति, शांति।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष द्वारा व्यवस्था

अध्यक्ष महोदय : हां, विजेन्द्र जी, क्या कह रहे थे आप?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष महोदय, अभी प्रमिला टोकस के मामले में मैंने एक काम रोको प्रस्ताव दिया था।....

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैं आपको अवगत कराना चाहता हूं कि इस सत्र में विशेष मुद्दे को ही विचारार्थ लिया गया है।....

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष महोदय, जनहित का गंभीर मामला है।

अध्यक्ष महोदय : आप मेरी बात सुनिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष महोदय, इस सदन के एक सम्मानित सदस्य द्वारा जाति सूचक शब्दों का प्रयोग किया गया है और यह पहली बार नहीं हुआ है।

अध्यक्ष महोदय : ऐसा है, विजेन्द्र जी, मैं इसके लिए इस प्रस्ताव को सदन में उठाने की अनुमति नहीं दे रहा हूं। आज एक दिन का विशेष सत्र बुलाया गया है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, ये विषय उठाने की अनुमति मैं आपको नहीं दे रहा हूं। आप बैठिए।....विजेन्द्र जी, प्लीज बैठिए। मेरी रिक्वेस्ट है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मेरी रिक्वेस्ट है, प्लीज बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप प्लीज बैठिए दो मिनट।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैंने कोई रूलिंग दी है न।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : एक सेकेण्ड, मैंने कोई रूलिंग दी है न आपको।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप हमारे नेता विपक्ष हैं। मैंने पूरी रूलिंग दी है आपको।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैंने पूरी रूलिंग दी है आपको। आप बैठ जाइए। प्लीज बैठिए। मैंने रूलिंग दे दी है इस पर। आप बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अब गंभीर कितने मामले हैं, कितने नहीं हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, अब बैठिए। देखिए, मैंने अपनी व्यवस्था दे दी है।

अध्यक्ष महोदय : मैंने रूलिंग दे दी है इस पर। आप बैठिये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, यह गम्भीर मामला है....

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अब गम्भीर कितने मामले हैं कितने नहीं, विजेन्द्र जी, बैठिये। मैंने अपनी व्यवस्था दे दी है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इस तरह की भावना का प्रयोग करना*...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैंने अपनी व्यवस्था दी है। मैंने व्यवस्था दे दी, इस पर रूलिंग दे दी। अध्यक्ष की रूलिंग के बाद कोई विषय नहीं रहता। मैंने रूलिंग दी है ना। मैंने अपनी रूलिंग दी है आपको।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : सूचना दें, सदन को*...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : किसको, क्या सूचना दें? आप जब स्वयं दिए जा रहे हैं आप बैठिये जरा।

सुश्री राखी बिड़ला : अध्यक्ष जी, मैं खुद अनुसूचित जाति से संबंध रखती हूं। क्या इन्होंने अपने केंद्रीय मंत्री के ऊपर कार्रवाई की। झूठे-झूठे आरोप लगा कर हमारे विधायकों के ऊपर एफआईआर कराते हैं*...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आज मैंने जैसा कहा केवल एक विशेष सत्र बुलाया गया है, विशेष सत्र में इस ढंग के प्रश्न नहीं उठाये जाते। यह विशेष सत्र है।

सुश्री राखी बिड़ला : मैं अनुसूचित जाति से संबंध रखती हूं। हमारी

पार्टी का कोई भी चुना हुआ व्यक्ति इस तरह की हरकतें नहीं कर सकता। दलितों की तुलना जानवर के साथ करी, आप उस पर क्या कहना चाहते हो? ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : पिछली बार भी आपको बताया था। पिछली बार भी आपने यह बात की थी।

सुश्री राखी बिड़ला : विजेन्द्र गुप्ता जी, आप सदन का समय बर्बाद न करें, वीके सिंह को आप जवाब दीजिए...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : पिछली बार भी मैंने बोला था, आप बैठिये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इससे पहले भी यह घटना हुई है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मेरी रिक्वेस्ट है, आप बैठिये प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इस तरह की घटना...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, आप बैठ जाइये प्लीज।

सुश्री राखी बिड़ला : आज विशेष सत्र बुलाया गया है और अगर इस तरह से आप करेंगे तो सारे के सारे दलित आपका बहिष्कार करेंगे। ऐसा नहीं हो सकता...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैं आपको रूलिंग दे रहा हूं। मैंने नियम के अंतर्गत रूलिंग दी है। प्लीज बैठिये।

सुश्री राखी बिड़ला : वी के सिंह जी को क्यों बचाने की कोशिश कर रहे हैं? वी के सिंह जी के खिलाफ आपने क्या एक्शन लिया है? अध्यक्ष जी, इन्हें बिठाये।

अध्यक्ष महोदय : मैंने रूलिंग दी है आपको।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, मैं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैं कुछ नहीं सुनूंगा इस विषय पर। मैं कोई चीज नहीं सुनूंगा इस विषय पर।

सुश्री राखी बिड़ला : ये महिलाओं की शिकायत की राजनीति करते हैं। हम खुद इस बात को बोल रहे हैं कि आम आदमी पार्टी का कोई भी चुना हुआ नुमाइंदा इस प्रकार से नहीं करेगा, क्योंकि हम राजनीति का आपराधिकरण नहीं करते हैं। भ्रष्टाचार के खिलाफ आज आयोग के गठन के लिए सदन को बुलाया गया है।

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइये प्लीज। विजेन्द्र जी, मैं आपसे प्रार्थना कर रहा हूं बैठिये।

सुश्री राखी बिड़ला : अध्यक्ष जी, इन्हें बाहर भिजवाइये। गुप्ता जी, बैठ जाइये, आपकी बात में कोई दम नहीं है। आम आदमी पार्टी सभी लोगों के लिए समान है।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैंने सुन लिया। मैंने कहा है, रूलिंग दे चुका हूं। मैं रूलिंग दोबारा दे देता हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : हम कड़े शब्दों में इसकी निंदा करते हैं, कड़ी-कड़ी भर्त्सना करते हैं, अनुसूचित जाति के खिलाफ आम आदमी पार्टी का एक सदस्य ...*(व्यवधान)*

श्री मनोज कुमार : अभी कुछ समय पहले वीके सिंह जी ने जो अनुसूचित

जाति के लोगों पर टिप्पणी की। इतनी भद्दी टिप्पणी की कि पूरा समाज और उसके बावजूद ये भाषा का?

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, आप बैठ जाइये। प्लीज बैठिये। राखी जी, बैठिये। मनोज जी, बैठिये। विजेन्द्र जी, बैठिये। मैं रोक रहा हूं ना, आप नहीं रूक रहे थे, मैं उनको रोक रहा हूं। आप बैठिये जरा। राखी जी, बैठिये। मनोज जी, बैठिये। प्लीज बैठिये।

सुश्री राखी बिड़ला : इस देश का व्यक्ति बख्शेगा नहीं आपको। जवाब मांग रहे थे*...(व्यवधान)*

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इसका भी जवाब मांग रहे हैं, सदस्य का फेवर किया जा रहा है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : राखी जी, बैठिये। मनोज जी, बैठिये। राखी जी, प्लीज बैठ जाइये।

(सत्ता पक्ष के सदस्यों द्वारा सामुहिक नारेबाजी)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : क्या हो रहा है इस सदन के अंदर?

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बैठिये। मनोज जी, बैठिये। नियम 107 के अंतर्गत प्रस्ताव। अब श्री मनीष सिसोदिया जी, माननीय उप मुख्यमंत्री नियम 107 के अंतर्गत प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए सदन की अनुमति मांगेंगे।

उप मुख्यमंत्री (श्री मनीष सिसोदिया) : अध्यक्ष महोदय, मैं नियम 107 के अंतर्गत प्रस्ताव करने की सदन से अनुमति मांगता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : यह प्रस्ताव सदन के सामने है–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हां कहे,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें

श्री विजेन्द्र गुप्ता : यह जो प्रस्ताव है, बायस्ड है, ओपन करिये।

अध्यक्ष महोदय : अभी हो जायेगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इस प्रस्ताव में

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अभी हो जायेगा, हो जायेगा।

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता।

प्रस्ताव पास हुआ।

अब उप मुख्यमंत्री प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे।

नियम-107 एवं नियम-90 के अंतर्गत उप मुख्यमंत्री द्वारा प्रस्ताव

उप मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, 15 दिसंबर की सुबह दिल्ली सचिवालय में दिल्ली के मुख्यमंत्री के कार्यालय में सीबीआई का छापा डाला गया और वहां पर जिस कमरे में, मुख्यमंत्री के कार्यालय में जो फाइलें रखी जाती हैं मुख्यमंत्री के आवागमन का रजिस्टर, मुख्यमंत्री के यहां जितनी फाइलें आती-जाती हैं उनका,

14 तारीख को माननीय मुख्यमंत्री ने जिन फाइलों पर साइन किया होगा, उससे पहले जिनको साइन किया होगा, वो फाइलें, 15 तारीख को, 16 तारीख को और आगे आने वाले समय में जो फाइलें साइन की जानी थीं, उस दफ्तर में माननीय मुख्यमंत्री द्वारा उन तमाम फाइलों को जिस कमरे में रखा जाता है, उस कमरे में मुख्यमंत्री के दफ्तर में सीबीआई द्वारा छापा डाला गया और बाद में जब मुद्दा उठा तो कहा गया कि छापा मुख्यमंत्री के दफ्तर में नहीं डाला गया, यह छापा मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव के कार्यालय में डाला गया है।

अध्यक्ष महोदय, यह सदन पूर्ण बहुमत की एक सरकार को यहां भेजे हुए हैं, दिल्ली की जनता ने बहुत भरोसा करके एक ईमानदार सरकार को यहां भेजा है और उसके द्वारा बहुमत हासिल की हुई सरकार दिल्ली सचिवालय में बैठकर दिल्ली के लोगों के लिए योजना बना रही है, दिन-रात काम कर रही है, ईमानदारी से काम कर रही है। ऐसा कहा गया कि छापा मुख्यमंत्री के कार्यालय में तैनात प्रधान सचिव के दफ्तर में डाला गया है। मैं इस सदन के समक्ष बहुत जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूँ कि दिल्ली सचिवालय में मुख्यमंत्री कार्यालय के प्रधान सचिव जैसा कोई दफ्तर नहीं है, वहां मंत्रियों के दफ्तर हैं, वहां अलग-अलग विभागों के सचिवों के दफ्तर हैं, जहां मंत्री या मुख्यमंत्री के दफ्तर हैं, वहीं उनके स्टाफ के रूम्स हैं। वो मुख्यमंत्री के कार्यालय के रूम में आते हैं। जहां मंत्रियों के दफ्तर हैं वहां मंत्रियों के कमरे, मंत्रियों के आस-पास के स्टाफ के कमरे, कहीं मंत्रियों के टाइपिस्ट बैठते हैं, कहीं उनके स्टेनो बैठते हैं, कहीं उनके सेक्रेट्री बैठते हैं और वो कुल मिलाकर मंत्रियों का कार्यालय है। उस पर छापा डाला गया वहां उस दिन। यह भी कहा गया कि यह छापा मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव राजेन्द्र कुमार जी द्वारा कथित भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच के सिलसिले में डाला जा रहा है। हमें आश्चर्य हुआ कि उस दिन इस सरकार को काम करते

हुए और वो भी कहा गया कि 2006 के आस-पास के घोटाले का मसला है। हमें आश्चर्य हुआ कि 2006 में हुए किसी तथाकथित घोटाले की फाइलें वर्तमान मुख्यमंत्री, जिनको अभी दस महीने काम करते हुए हो गये, उनके कार्यालय में ढूंढी जा रही थी। हम लोग समझने की कोशिश कर रहे थे कि ये फाइलें, मान लीजिए अगर कहीं घोटाला हुआ भी था, जैसा कि कहा गया वैट के दफ्तर से संबंधित था या शिक्षा विभाग से संबंधित था या कुछ और विभागों से संबंधित था, उन विभागों के रिकार्ड रूम में 2006 की फाइलें ढूंढी जानी चाहिए थी। मुख्यमंत्री के कार्यालय में कोई भी फाइल आती है तो दो दिन, चार दिन, ज्यादा से ज्यादा अगर किसी पर ज्यादा स्टडी करनी हो तो पांच-छह दिन रूकती है, दस दिन रूकती होगी इससे ज्यादा तो शायद ही कोई फाइल कभी रूकती होगी और यही नहीं देश के शायद किसी भी मुख्यमंत्री के कार्यालय में फाइलों के आने-जाने का क्रम इसी तरह से रहता है। करंट फाइल्स आती हैं मुख्यमंत्री उन पर हां, या ना जो भी अपना डिसिजन लेते हैं उसके बाद वो वहां से चली जाती है, आगे जाती है नीचे डिपार्टमेंट में। मुख्यमंत्री कार्यालय में तो पुरानी फाइलों का मतलब ही नहीं होता। फिर मुख्यमंत्री के कार्यालय में छापा क्यों डाला गया। यह बेहद गंभीर स्थिति थी, क्योंकि यह बहुत ईमानदारी से काम कर रही सरकार है और किसी भी कीमत पर चाहे वो अधिकारियों का करप्शन हो, निचले स्तर पर किसी चपरासी का भी करप्शन हो या एमएलएज का करप्शन हो, पोलिटिकल लीडरशिप का करप्शन हो या मंत्रियों का करप्शन हो, किसी भी स्तर पर बर्दाश्त करने को तैयार नहीं है यह सरकार। सारे देश में यह चर्चा है, सब में यह चर्चा है उसके बावजूद मुख्यमंत्री कार्यालय में छापा डालना एक बेहद शर्मनाक घटना थी। में यह प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के सचिवालय में मुख्यमंत्री कार्यालय में सीबीआई द्वारा हाल ही में डाले गये छापे से उत्पन्न स्थिति के बारे में चर्चा करें।

अध्यक्ष महोदय : अब नियम 90 के अंतर्गत सरकारी संकल्प, अब श्री मनीष सिसोदिया जी, माननीय उप मुख्यमंत्री नियम 90 के अंतर्गत सरकारी संकल्प प्रस्तुत करने के लिए सदन की अनुमति लें।

उप मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, मैंने नियम 107 के अंतर्गत जो प्रस्ताव सदन के समक्ष रखा है, उसी के संदर्भ में नियम 90 के अंतर्गत एक और प्रस्ताव मैं सदन के समक्ष रखना चाहता हूँ, मुझे इसकी अनुमति प्रदान की जाये।

अध्यक्ष महोदय : यह प्रस्ताव सदन के सामने है–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हां कहे

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहे

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता

प्रस्ताव पास हुआ।

अब माननीय उप मुख्यमंत्री संकल्प प्रस्तुत करें।

उप मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, जिस सीबीआई छापे की मैं बात कर रहा था, उस सीबीआई छापे के बारे में जब हमें पता चला और उसके बाद हमने उसको समझना शुरू किया और मैं अभी कह रहा था कि मुख्यमंत्री के कार्यालय में तो आने-जाने वाली फाइलें दस-पन्द्रह दिन की होती हैं, पांच-दस दिन की होती है तो हमने यह सोचा कि कौन सी फाइलें थीं, तब हमें समझ में आया और तब तक अंदर जो कर्मचारी थे मुख्यमंत्री कार्यालय के, हमें वहां से भी सूचना मिली कि विशेष रूप से मुख्यमंत्री कार्यालय में रखी गई डीडीसीए की फाइल जो दिल्ली डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन (डीडीसीए) है, उसकी फाइलें

तलाश की जा रही थीं। उसकी फाइलों को छाना गया। उन फाइलों में क्या था, मैं इस सदन के सामने थोड़ी सी बात रखना चाहता हूं। वो फाइलें क्योंकि क्रिकेट से जुड़ी हुई थी, क्रिकेट इस देश के लिए कितना महत्वपूर्ण विषय है कि पूरे हिंदुस्तान के लोग अलग-अलग क्षेत्रा में, धर्म में, जाति में बंटे होते हैं और कई बार आपस में एक-दूसरे से इन मुद्दों पर लड़ भी रहे होते हैं, लेकिन उसके बावजूद पूरा हिंदुस्तान जिन मुद्दों पर एक सुर में एक होता है उनमें से एक क्रिकेट है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक पूरा हिंदुस्तान क्रिकेट से इतना ज्यादा प्यार करता है कि तमाम तरह के मतभेद भुला कर लोग क्रिकेट टीम जब भारत की खेलती है, भारत खेलता है तो उसके संदर्भ में आते हैं, क्रिकेट इस हिंदुस्तान के दिलों-दिमाग में बसा हुआ है। मैं आपके सामने ला रहा हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, मैं यह समझना चाहूंगा, आप नियम 107 में ला रहे हैं।

उप मुख्यमंत्री : नियम 107 में ला रहा हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : उसी पर बोल रहे हैं ना?

उप मुख्यमंत्री : जी। अध्यक्ष महोदय, दिल्ली में भी मैंने क्योंकि देश में क्रिकेट को लेकर जो दीवानगी है हिंदुस्तान के आम जनमानस में, उसके लिए आपके समक्ष रखी कुछ चीजें, दिल्ली में भी स्थिति यही है और दिल्ली में जब एक युवक क्रिकेट खेलना चाहता है तो उसे भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ता है। दिल्ली से जुड़े देश से जुड़े हुए हुए बहुत सारे क्रिकेटर्स ने जिन्होंने देश के लिए खेला, देश के लिए सम्मान अर्जित किया, कप लेकर आये जीत कर, ऐसे-ऐसे क्रिकेटर्स ने आकर दिल्ली सरकार से शिकायतें कीं। माननीय मुख्यमंत्री जी से मिलकर शिकायतें की कि साहब आप दिल्ली के मुख्यमंत्री हैं, स्पोर्टस का विषय

संविधान द्वारा ट्रांसफर्ड सब्जेक्ट में दिल्ली विधान सभा के अंतर्गत चुनी गई सरकार के अधीन आता है। स्पोर्ट्स के विषय में आपको तुरंत कुछ करना चाहिए और स्पोर्ट्स में जो क्रिकेट की एक तरह से कंट्रोलिंग संस्था है दिल्ली में डीडीसीए, उसमें बहुत बड़े घपले हैं, उसमें घपलों को रोकने के लिए आपको कुछ करना चाहिए, आपको जांच करानी चाहिए इनके घपलों की। कई तथ्य देकर गये, डीडीसीए के जुड़े हुए कुछ कर्मचारी आदरणीय मुख्यमंत्री के पास में आकर कुछ ऐसे तथ्य रखकर गये वहां पर जिनसे समझ में आता था कि बेहद घपला वहां पर हो रहा है। यहां तक कि भारत सरकार से भी हमारे स्पोर्ट्स डिपार्टमेंट को, हमारी सरकार को एक चिट्ठी मिली कि स्पोर्ट्स डिपार्टमेंट के डीडीसीए में जो घपले हैं, उनकी जांच कराई जाये। इन सब तथ्यों को देखते हुए हमने एक डिपार्टमेंट में एक इंटरनल कमेटी बनाई। मतलब आपके संज्ञान में मैं इसलिए ला रहा हूं कि डीडीसीए किस तरह से रूल्स को वॉयलेट कर रहा है। यहां तक कि पिछले एक मैच में 2 अक्टूबर के दिन डीडीसीए के ग्राउंड पर शराब बेची गई खोल कर, उस तक की जांच हुई थी। उस तक की जांच दिल्ली सरकार ने कराई थी, बहुत सारी शिकायतें थीं, मैं आपके संदर्भ में ला रहा था। हमने एक इंटरनल कमेटी का गठन किया। इंटरनल कमेटी दिल्ली सरकार के तीन लोगों को मिला कर बनाई गई जिसको कॉरडिनेट कर रहे थे चेतन सांघी जी, दिल्ली सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी, उनकी कमेटी ने बीसीसीआई से बात करके तमाम तथ्यों को स्टडी करके, लोगों से बात करके, अलग-अलग स्टेक होल्डर से बात करके, एक रिपोर्ट सरकार के सामने रखी और उस रिपोर्ट को देखकर तो हमें लगा कि क्रिकेट का दिल्ली में अगर भट्टा बैठा हुआ है, दिल्ली के नौजवान अगर क्रिकेट के खेल में आगे नहीं आ पा रहे हैं तो उसकी एकमात्रा वजह डीडीसीए का भ्रष्टाचार है। ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार है। अध्यक्ष महोदय, इस भ्रष्टाचार

को संज्ञान में लेते हुए माननीय अदालत में भी इस बार जो दिल्ली में क्रिकेट का मैच हुआ, वो सीधे डीडीसीए को नहीं दिया। माननीय अदालत ने भी इस बात को संज्ञान में लिया कि डीडीसीए में क्रिकेट का भट्टा बिठाने की पूरी तैयारी है और डीडीसीए में योग्यता ही नहीं है, डीडीसीए अपने भ्रष्टाचार के कारण इतना खोखला हो चुका है कि डीडीसीए दिल्ली में टेस्ट मैच तक नहीं करा सकता, इसलिए एक अवकाश प्राप्त माननीय न्यायाधीश के नेतृत्व में दिल्ली में मैच कराया गया। दिल्ली में इस बार का जो कोटला टैस्ट मैच हुआ, हम सब जानते हैं, सारा मीडिया जानता है, सब लोग जानते हैं इस बात को कि वो मैच सिर्फ डीडीसीए में चलते भ्रष्टाचार के कारण एक अवकाश प्राप्त माननीय न्यायाधीश के नेतृत्व में कराया गया। वहां उनकी देख-रेख में करवाया गया। हमारी रिपोर्ट भी वही कह रही थी। उस रिपोर्ट के आधार पर सरकार आगे का एक्शन लेने की योजना बना रही थी। सीबीआई रेड्स में उन फाइलों को पढ़ा गया, एक-एक पेज को वहां पढ़ा गया और नोट्स थे। मैंने आपसे कहा कि डीडीसीए के अधिकारी थे वहां पर, डीडीसीए के अधिकारी भी आकर व्हिसल ब्लोअर्स आकर डीडीसीए के करप्शन की और उनके पुराने अध्यक्षों के कार्यकाल की चर्चा करके गये थे, किस तरह से घोटाले होते रहे हैं। उन नोट्स के बारे में पूछा गया कि ये नोट्स कौन देकर गया था, कौन-कौन मुख्यमंत्री से मिलता था आकर, ये सब चीजें हुई वहां पर। अध्यक्ष महोदय, मेरा स्पष्ट आरोप एक तो यह है, स्पष्ट कहना है कि यह जो सीबीआई की रेड्स हुई उस दिन मुख्यमंत्री कार्यालय पर यह शुद्ध रूप से यह देखने के लिए हुई कि डीडीसीए की फाइल में क्या-क्या लिखा हुआ है, किस-किस तरह की शिकायतें आई हैं, उसमें क्या-क्या तथ्य दिये गये हैं और सरकार में अगर अभी तक कोई चर्चा हुई है, तो उस पर क्या चर्चा हुई है और सरकार उस पर क्या एक्शन लेने का प्लान बना रही है।

अभी जब हमने यह मुद्दा उठाया, मीडिया के सामने उठाना शुरू किया तो पूर्व क्रिकेटर्स ने, आप उनके क्रिकेट प्रेम का वो देखिये, पार्टी हित से ऊपर उठ कर, पार्टी लाइन से ऊपर उठ कर उन्होंने कहा कि मेरे लिए पार्टी बाद में है, देश का क्रिकेट पहले है। उन्होंने ऊपर कर अपनी ही पार्टी के नेता के खिलाफ जो कि डीडीसीए के अध्यक्ष हैं अरुण जेटली जी, उनके खिलाफ उन्होंने न सिर्फ बयान दिये, बल्कि बहुत ठोस सबूत भी पेश किए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, प्वाइंट ऑफ ऑर्डर है।

उप मुख्यमंत्री : उन्होंने प्रेस कान्फ्रेंस करके अध्यक्ष महोदय...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : किसलिए?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, मेरा प्वाइंट ऑफ ऑर्डर है। मैं पढ़कर बताता हूं।

उप मुख्यमंत्री : प्रेस कॉन्फ्रेंस करके उन्होंने बकायदा यह बात रखी... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : एक बार बोलने दीजिए।

उप मुख्यमंत्री : यह बात रखी कि किस तरह से अरुण जेटली जी को सारे घोटालों का न सिर्फ पता था...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : एक बार बोलने दीजिए, बीच में नहीं, बाद में ले लीजिएगा आप। आप बैठिये।

उप मुख्यमंत्री : बल्कि अरुण जेटली जी बाकायदा डीडीसीए के घोटाले बाजों को बचाने के लिए साजिशें रच रहे थे। बाकायदा अरुण जेटली जी के नॉलिज में मीटिंग्स की रिकार्डिंग में यह बात कही गई है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुझे मालूम है। अभी बैठिये प्लीज। मैं सुन लूंगा बाद में।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, व्यवस्था का...*(व्यवधान)*

उप मुख्यमंत्री : कि डीडीसीए के चेयरमैन रहते हुए घोटालों का पता था...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : पांच मिनट और बोलना है फिर मैं सुन लूंगा। उसको सुन लूंगा।

उप मुख्यमंत्री : और उन घोटालों को दबाने के लिए ऑन रिकार्ड कन्फेशन है अरुण जेटली जी का इस बात को लेकर।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, प्वाइंट ऑफ आर्डर है।

अध्यक्ष महोदय : इनके बोलने के बाद मैं सुन लूंगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मुझे लगता है कि रूल...*(व्यवधान)*

उप मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, उनका ऑन रिकार्ड कन्फेशन है इस बात को लेकर कि डीडीसीए में घोटाला है, डीडीसीए के घोटाले बाजों को बचाना है उन्होंने स्वीकार किया है कि हमारी जिम्मेदारी है।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैंने कहा है कि आपका जो भी विषय है, एक बार उप मुख्यमंत्री जी को बोलने दीजिए।

उप मुख्यमंत्री : यही हमारी फाइल का नोट कहता था। जो फाइल में

व्हिसल ब्लोअर्स के नोट्स लगे हुए थे, वही वो व्हिसल ब्लोअर्स के नोट्स कहते थे।

अध्यक्ष महोदय : आप एक बार मुझे लिख कर भेज दीजिए, क्या प्वाइंट ऑफ आर्डर है। आप दो मिनट लिख कर दे दीजिए।

उप मुख्यमंत्री : वही चेतन सांघी की रिपोर्ट कहती है। अध्यक्ष महोदय, वही सारी चीजें घूम-घूम कर आ रही है तो कहीं न कहीं डीडीसीए का घोटाला उसमें अरुण जेटली जी का रोल हमारी रिपोर्ट में भी साबित हो रहा था, जो खुद उनकी पार्टी के मैम्बर ऑफ पार्लियामेंट ने, जो कि देश प्रेमी, क्रिकेट प्रेमी व्यक्ति है उन्होंने भी यह मुद्दा उठाया, उसमें भी यह बात साबित हो रही है उन्होंने जो सबूत रखे, उसमें भी यह बात शामिल हो रही है कि अरुण जेटली जी के कार्यकाल में डीडीसीए में जबर्दस्त घोटाला हुआ और अरुण जेटली जी उनको लगातार बचाने की कोशिश कर रहे थे। कैसे-कैसे घोटाले हुए, 16-16 हजार में लेपटॉप एक-एक महीने में किराये लेने के घोटाले हुए...*(व्यवधान)*

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, प्वाइंट ऑफ ऑर्डर पर भी रूलिंग नहीं हो रही।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैंने कहा, मैं लेता हूं आपको। अभी पांच मिनट में लेता हूं।

उप मुख्यमंत्री : 16 हजार का लेपटॉप का किराया एक-एक दिन का, ऐसे-ऐसे घोटाले जिस संस्था में, जिस अध्यक्ष के होते हुए हो रहे हो अध्यक्ष महोदय, वैसे मैं क्योंकि यह सदन संविधान के तहत् स्पोर्ट्स के मसलों को देखने के लिए पूरी तरह अधिकार प्राप्त है, स्पोर्ट्स के घोटाले में कोई भी व्यक्ति हो,

चाहे वो केन्द्र में मंत्री हो, किसी पार्टी का हो, कहीं भी हो, उसको बख्शा नहीं जाना चाहिए। उसके खिलाफ सख्त से सख्त जांच होनी चाहिए और सख्त से सख्त कार्रवाई होनी चाहिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : पेज नंबर 43 है और पेज नंबर 109

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : पेज नम्बर फोरटी थ्री, पेज नम्बर थर्टी थ्री है और पेज नम्बर वन जीरो नाइन*...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मैं देख रहा हूं बैठिये दो मिनट*...(व्यवधान)*

उपमुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, मैं नियम 90 के अंतर्गत प्रस्ताव करता हूं कि डीडीसीए की कार्यप्रणाली में अनियमितताओं के गंभीर आरोपों से चिंतित यह सदन संकल्प करता है कि इन आरोपों की जांच हेतु जांच आयोग अधिनियम 1952 की धारा 3 के अनुसरण में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार द्वारा एक जांच आयोग का गठन किया जाए और यह सदन यह भी संकल्प प्रस्तुत करे कि सरकार जैसा उचित समझे, इस आयोग के लिए समुचित कार्यक्षेत्र निर्धारित करे।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : आपको बोलने का मौका मिला है आप....

उप मुख्यमंत्री : मंत्री जब बोल रहे होते हैं तो और लोगों को भी चुप हो जाना चाहिए अगर किताबों को पढ़कर ही पता चल रहा है तो

...(व्यवधान)....

अध्यक्ष महोदय : एक सेकेण्ड। बताइये, बताइये क्या है?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : देखिये, रूल 111 ये कहता है कि ऐसा प्रस्ताव प्रस्तुत करने की अनुज्ञा नहीं दी जाएगी जो किसी ऐसे विषय पर चर्चा उठाने के लिए है जो किसी न्यायिक या अर्धन्यायिक कार्य करने वाले किसी वैधानिक न्यायाधिकरण या वैधानिक प्राधिकरण के या किसी विषय की जांच या छानबीन करने के लिए नियुक्त किसी आयोग या जांच न्यायालय के सामने लंबित हों। दोनों मामले जो यहां चर्चा के लिए लाये गये हैं, दोनों मामले सबज्यूडिस है।

अध्यक्ष महोदय : नहीं एक सेकेण्ड, मैं कौन-सी कोर्ट में, क्या मामला है, कौन गया है। कौन गया है कोर्ट में।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मैं एक मिनट बताता हूं। मुख्यमंत्री जी को नोटिस हुआ है।

अध्यक्ष महोदय : किसका नोटिस हुआ है?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : हाईकोर्ट का।

अध्यक्ष महोदय : किस चीज में?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इसी मामले में जो।

अध्यक्ष महोदय : मानहानि पर हुआ है। वो तो मानहानि पर गये हैं। ये भ्रष्टाचार का विषय है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : और राजेन्द्र कुमार जी के मामले में।

उपमुख्यमंत्री : नेता प्रतिपक्ष के इस गलत बयान पर...*(व्यवधान)* वो सदन को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, मेरी बात पूरी होने दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : मैंने पूरा पढ़ लिया है ये। आप पढ़ के सुना रहे हैं। मैंने सुन लिया।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : चार ऑब्जेक्शन हैं अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय : मैं इसमें रूलिंग दे दूं। पहले मैं 111 में अपनी रूलिंग दे दूं।

विजेन्द्र गुप्ता : आप मुझे मौका दे रहे हैं। मैं अपनी बात तो पूरी कर दूं।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी आपने 111 पढ़ दिया। देखिये सदन का समय...*(व्यवधान)* नहीं अभी मैं 111 में तो रूलिंग दे दूं अपनी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : दोनों मामले में।

अध्यक्ष महोदय : नहीं 264 भी आपका...*(व्यवधान)* पहले 111 में मेरी रूलिंग ले लीजिए...*(व्यवधान)* पहले देखिये आपको।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : 111 में दूसरा मामला ही तो बता रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय : हां मैं 111 में दे दूं न आपको।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : दोनों मामले हैं, राजेन्द्र कुमार वाले मामले में बता रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय : फिर 264 में आ रहा हूं मैं। भाईसाहब मैं आपसे कह रहा हूं अभी 111 में मुझे रूलिंग दे देने दीजिये। मैं 111 में अपनी रूलिंग

दे दूं। ऐसे नहीं चल पायेगा। विजेन्द्र जी मैं ऐसे अलाउड नहीं करूंगा। अभी 111 पड़ा है मेरा उस पर डिसीजन ले लीजिए, फिर 264 पढ़ लेना।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मैं राजेन्द्र कुमार के मामले में आपके समक्ष रख रहा हूं। ये दिल्ली की विशेष अदालत में ये मामला विचाराधीन है और इसकी जो मजिस्ट्रेट हैं।

...(व्यवधान)....

अध्यक्ष महोदय : मुझे समझ नहीं आ रहा मैं विजेन्द्र जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : सुश्री पूनम चौधरी जो भ्रष्टाचार निरोधक शाखा की विशेष न्यायाधीश की स्पेशल कोर्ट में दिल्ली का ये मामला विचाराधीन है....

अध्यक्ष महोदय : आपकी बात हो गई? अब बैठिये। मैं रूलिंग दे रहा हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : दोनों मामलों में।

अध्यक्ष महोदय : हां मैं रूलिंग दे दूं दोनों मामलों में।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : और दूसरा भी बता देता हूं 264 में।

अध्यक्ष महोदय : भाई, बता तो दिया आपने 264।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मैंने 111 बताया है 264 और बता देता हूं। 264 देखिये। मंत्री जी दो मिनट बैठिये। व्यवस्था के प्रश्न पर बात हो रही हो तो बैठ जाते हैं। आप बैठिये न। आपका दबाव लग रहा है। ऐसा लग रहा है आपका दबाव है, ऐसे नहीं। चेयर को दबाव नहीं डाल सकते आप। 264 और बोल देता हूं...*(व्यवधान)* नियम 264 में कहा गया है बोलते समय पालनीय नियम।

इसके अंदर सदन चर्चाधीन विषय से सर्वथा सुसंगत होना चाहिए, एक। इसके अंदर किसी का नाम लेकर refer to the goverment officials by name ये अलाउड नहीं है। अभी आपने माननीय वित्तमंत्री जी का नाम लिया वो अलाउड नहीं है। आप नाम लेकर यहां पर चर्चा नहीं कर सकते।

...(व्यवधान)....

अध्यक्ष महोदय : अब मैं रूलिंग दे दूं। भाई अब सदस्य बोलेंगे नहीं, प्लीज। मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं कि दो मिनट शांत हो जाएं, विजेन्द्र जी बैठिये अब। नियम 111 की आपने बात की, नियम 111 में मेरा यह कहना है, जो आपने विषय रखा उसके नेक्स्ट पैरा भी पढ़ लीजिए परन्तु यदि अध्यक्ष संतुष्ट हो कि इससे न्यायाधीकरण वैधानिक परंपराधिकारी आयोग या जांच न्यायालय द्वारा उस विषय के विचार के जोन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका नहीं है, तो वे स्वविवेक से ऐसे विषय को सदन में उठाने की अनुमति दे सकते हैं। नहीं, अब रूक जाइये, मैं अपनी बात पूरी कर लूं, एक सेकेण्ड विजेन्द्र जी, भाई देखिये, प्लीज। मैं बात पूरी कर रहा हूं, आपको पूरी करने दी है। मेरी पूरी बात सुन लीजिए। जो कुछ भी उप-मुख्यमंत्री जी ने बोला सदन में, उसमें कहीं पर भी मुझे ऐसा नहीं लगा कि कहीं कोई....पूरी बात सुन लीजिए। फिर उसके बाद उतावले न होएं, उस पर कहीं असर पड़ेगा। दूसरी बात जो उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के कार्यालय पर छापा पड़ा, मुख्यमंत्री के कार्यालय पर छापा पड़ा वो किसी कोर्ट में कोई भी, कहीं विचाराधीन नहीं है, एक बात पूरी बात, सुन लीजिये, भाई विजेन्द्र जी आप पूरी बात सुन लीजिए, देखिये ऐसे नहीं। दूसरी बात डीडीसीए का जो मैटर है वो स्वयं मानहानि के लिए उधर से गये हैं सरकार की ओर से भ्रष्टाचार के विषय में किसी भी प्रकार का विषय

अभी तक कोर्ट में दाखिल नहीं किया गया है, सरकार की ओर से नहीं किया गया।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : विशेष न्यायाधीश सुश्री पूनम चौधरी जी के यहां ये पूरा मामला विचाराधीन है....

अध्यक्ष महोदय : किसका, कौन सा मामला विचाराधीन है?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : राजेन्द्र कुमार जी का।

अध्यक्ष महोदय : राजेन्द्र जी का कोई विषय ही नहीं लाये यहां पर। मनीष जी ने कहीं राजेन्द्र जी का कोई नाम ही नहीं लिया है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : दो प्रस्ताव दिये हैं न। आपने 107 में दिया है। 107 में एक प्रस्ताव।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, वो सीएम का, सीएम हाउस की बात की है, नहीं विजेन्द्र जी आप स्वयं राजेन्द्र जी का नाम ले रहे हैं। नहीं विजेन्द्र जी ऐसे नहीं आप दोनों चीजें दोनों हाथों में लड्डू लेकर चलेंगे ये क्या बात है? आप स्वयं राजेन्द्र जी का नाम ले रहे हैं। ये सेटिस्फाई हो गया।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : नियम 264

अध्यक्ष महोदय : ये हो गया, ये विषय अब नियम 264 पर आ जाईये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इन्क्वायरी कमीशन पर इन्क्वायरी वो गठित कर चुकी है, या तो मुख्यमंत्री जी बतायें कि गठित नहीं हुई है अभी....*(व्यवधान)* नहीं हुई है तो आपने अध्यक्ष पहले चुन लिया।

अध्यक्ष महोदय : मैंने दोनों विषयों का नियम 111 का नियम 264 का दोनों का सामूहिक उत्तर दे दिया आपको।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : और नियम 264 ?

अध्यक्ष महोदय : नियम 264 का भी इसी में आ गया।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : कहां आ गया, नाम लेकर कैसे बात कर सकते हैं ?

अध्यक्ष महोदय : नाम लेकर जो बात की है उन्होंने जेटली जी के लिए दो बात बोली हैं। एक बात बोली है कि जेटली जी अध्यक्ष थे डीडीसीए के उस समय...*(व्यवधान)* उन्होंने ये कहा कि वो डीडीसीए के अध्यक्ष थे। उन पर कोई आरोप नहीं लगाया, एक बात। बात दूसरी, वहां विषय खत्म हो जाता है, दूसरा उन्होंने कीर्ति आजाद जी को कोट किया कि कीर्ति आजाद जी बार-बार उन पर आरोप लगा रहे हैं, उन्होंने डायरेक्ट कोई आरोप नहीं लगाया, आप इसकी कार्यवाही पढ़ लेना, बैठिये, हां मनीष जी ?

उप मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, मैं सदन के समक्ष यही कहना चाहता था कि दिल्ली सरकार के अधिकारियों द्वारा तैयार रिपोर्ट, कीर्ति आजाद जी द्वारा लगाये गये तमाम आरोपों और पेश किये गये तमाम सबूत और अलग-अलग ह्विसिल ब्लोसर द्वारा माननीय मुख्यमंत्री के समक्ष लाये गये तमाम तथ्य, उनको मिली तमाम शिकायतें, पूर्व क्रिकेटर्स द्वारा मिली शिकायतें वो सब एक ही कहानी कह रही हैं कि दिल्ली में क्रिकेट का बंटाधार करने के लिए उन सबमें यही आरोप है कि अरूण जेटली जी की तरफ उंगली उठ रही हैं और मैं कह रहा हूं उसमें उंगली उठ रही है।

अध्यक्ष महोदय : देखिये ये कोट कर रहे हैं कि वो कह रहे हैं, हम नहीं कह रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : देखिये यहां पर...*(व्यवधान)* नियमों का उल्लंघन है। जो इस सदन में मौजूद नहीं है उसको आप नाम लेकर....

उप मुख्यमंत्री : रिपोर्ट्स में लिखा हुआ है मैं क्या कर सकता हूं? ये मैं थोड़े ही बदल सकता हूं? जो सच है, वो सच है।

अध्यक्ष महोदय : आप पढ़िये विजेन्द्र जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : नाम लेकर अलाउ नहीं होगा, बिल्कुल नहीं होगा।

उप मुख्यमंत्री : सर, मैं इनका नाम ले लेता हूं जी। इन्हीं की पार्टी के नेता हैं हो सकता है यही मैनेज कर रहे हों। हो सकता है कि उनका डीडीसीए का जो 16000 रुपये प्रतिदिन का किराया आता है, यही मैनेज कर रहे हों, हो सकता है। अब ये सदन में बैठे किसी आदमी का नाम नहीं लेने देंगे। बाहर बैठे किसी आदमी का नाम नहीं लेने देंगे तो बात कैसे होगी।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, आपको मैंने दोनों नियमों में, नियम 111 और नियम 264 में दोनों का मैंने पूरा विश्लेषण किया है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : नियम 264 में साफ ही तो लिखा हैं

अध्यक्ष महोदय : मैंने पढ़ लिया है। अब उसको मैं समय नहीं दूंगा।

उप मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, मैं नियम 90 के अंतर्गत प्रस्ताव करता हूं कि डीडीसीए की कार्यप्रणाली में अनियमितताओं के गंभीर आरोपों से चिंतित यह सदन संकल्प करता है कि इन आरोपों की जांच हेतु जांच आयोग अधिनियम

1952 की धारा 3 के अनुसरण में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार द्वारा एक जांच आयोग गठित किया जाए और यह सदन ये भी संकल्प करता है कि सरकार जैसा उचित समझे इस आयोग का समुचित कार्यक्षेत्र निर्धारित करे। यहां पर मैं ये भी सदन के समक्ष ऑन रिकॉर्ड कहना चाहता हूं कि कुछ अखबारों में, कुछ मीडिया संस्थानों में कुछ लोग यह अफवाह फैलाने की कोशिश कर रहे हैं कि ये सरकार की पॉवर नहीं है इन्क्वायरी कमीशन गठित करना। स्पोर्ट्स दिल्ली सरकार के अंतर्गत आता विषय है। स्पोर्ट्स में होने वाले किसी भी घोटाले पर 1952 के जांच आयोग अधिनियम के तहत राज्य सरकार के पास पूरा अधिकार है कि स्पोर्ट्स से संबंधित किसी भी घोटाले की जांच, वो जैसे चाहे वैसे उसे कराने के लिए जांच आयोग का गठन कर सकती है। एक और चीज में अध्यक्ष महोदय, इस सदन के समक्ष कहना चाहता हूं कि जिस तरह से फाइलें देखने के नाम पर एक तथाकथित घोटाले के संदर्भ में छापा मारने के नाम पर एक अधिकारी को निशाना बनाते हुए असली निशाना मुख्यमंत्री के दफ्तर को बनाया गया और माननीय मुख्यमंत्री जी को बनाया गया, इसी के संदर्भ में एक कड़ी और इस सदन के रिकॉर्ड में रहनी चाहिए कि जब हमारे अधिकारियों ने यह रिपोर्ट तैयार की कि डीडीसीए में बहुत घोटाला है और वहां किस-किस तरह के लोग शामिल हैं, उन रिपोर्ट्स में जब ये खुलकर सामने आया कि अरूण जेटली जी की ओर उंगली उठ रही थी, उस वक्त...

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मेरा ऑब्जेक्शन है।

उप मुख्यमंत्री : बार-बार नाम लिया जायेगा जी, अरूण जेटली जी की तरफ उंगली उठी है तो आपके ऑब्जेक्शन से बचने वाले नहीं हैं वो। अगर भ्रष्टाचार हुआ है तो जिसने भी भ्रष्टाचार किया है उसको हिट फेस करनी पड़ेगी

अपने एक्शन्स की। अध्यक्ष महोदय, स्थिति यह थी कि जिस दिन ये रिपोर्ट पेश हुई। उसके थोड़े दिन बाद इस रिपोर्ट को पेश करने वाले अधिकारी चेतन सांघी जी जो कि दिल्ली सरकार के एक अधिकारी हैं, उन्होंने रिपोर्ट तैयार की। उनके खिलाफ एसीबी में जिसको केन्द्र सरकार ने अपने अधीन ले रखा है उनके खिलाफ एफआईआर करवा दी गई तो अधिकारियों को परेशान किया जा रहा है अधिकारियों का काम करना मुश्किल किया जा रहा है, अधिकारियों को डराया जा रहा है, मुख्यमंत्री को छापा मारा जा रहा है ये कैसे लोकतंत्र की बात है अध्यक्ष महोदय? खेल में नौजवानों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है, क्रिकेट खेलने का सपना देखने वाले नौजवानों की जिंदगी के साथ खेल किया जा रहा है। अध्यक्ष महोदय, इस सदन की यह जिम्मेदारी बनती है कि इसमें बहुत जिम्मेदारी के साथ आज इस पर गंभीरता से चर्चा करें और कोई निर्णय दें। में यह प्रस्ताव सदन के समक्ष रखता हूं।

अध्यक्ष महोदय : अब दोनों विषय सदन के सामने हैं इन पर दोनों विषयों पर हम चर्चा करेंगे, सर्वप्रथम सीबीआई की जो रेड हुई थी, उसके विषय में चर्चा आरंभ करते हैं, सुश्री अलका लाम्बा जी।

सुश्री अलका लाम्बा : धन्यवाद अध्यक्ष जी, आपने इस प्रस्ताव पर मुझे अपनी बात रखने का मौका दिया, मैं सबसे पहले दिल्ली सरकार के मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल जी और पूरी सरकार का धन्यवाद करना चाहती हूं कि इस गंभीर मुद्दे पर आज आपने हमें भी इस सदन में बुलाकर शामिल किया है। अध्यक्ष जी, एक तरफ देश के प्रधानमंत्री अपने ही मंत्री पर भ्रष्टाचार के आरोप जिन पर लगे हैं और सबूतों के साथ और सबूत किसी और ने नहीं उन्हीं के भाजपा के ही एक सांसद कीर्ति आजाद जी ने आरोप लगाये हैं और

सबूतों के साथ लगाये हैं। इतना ही नहीं पूर्व क्रिकेटर आदरणीय बिशनसिंह बेदी जी भी जो इससे संबंधित रहे, उन्होंने आरोप लगाये हैं। आज एक तरफ देश के प्रधानमंत्री अपने ही भ्रष्ट मंत्री के जिसके ऊपर आरोप हैं उनके साथ खड़े हैं और दूसरी तरफ मैं देखती हूं कि एक ईमानदार सरकार के एक ईमानदार मुख्यमंत्री अपने एक ईमानदार अधिकारी के साथ इस हद तक खड़े हैं कि एक आंच भी नहीं आने देंगे। ये इन्होंने साबित कर दिया है और ये जरूरी भी था।

अध्यक्ष जी, जिस दिन सीबीआई का छापा पड़ा, उस दिन मैं सचिवालय में उपस्थित थी। अध्यक्ष जी, सचिवालय के दस फ्लोर हैं जो लोग जानते हैं। दस फ्लोर में हरेक को मालूम है तीसरा फ्लोर मुख्यमंत्री का दफ्तर है। इनका यह कहना है कि वो मुख्यमंत्री के दफ्तर पर नहीं, राजेन्द्र कुमार जी के दफ्तर में छापा मारा गया। मैं कहूंगी गुमराह मत करियेगा, आज इस विधानसभा के भीतर अगर सीबीआई आती है तो वो यह नहीं कह सकती कि हमने विधानसभा के अंदर विधानसभा में छापा नहीं मारा हमने तो किसी विधायक या किसी मंत्री के दफ्तर पर छापा मारा है। वो विधानसभा पर ही छापा सीबीआई का माना जायेगा। तो इसलिए गुमराह करना बंद कर दें। एक और ये बात कह रहे हैं कि ये सीबीआई का जो छापा राजेन्द्र कुमार जी के ऊपर पड़ा है ये इससे ध्यान भटकाने के लिये डीडीसीए का मुद्दा उठाया जा रहा है। मैं ये कहूंगी कि डीडीसीए का मुद्दा आज से नहीं है, कम-से-कम पिछले छह-सात सालों से ये मुद्दा जिसे पिछली कांग्रेस सरकारों का भी संरक्षण प्राप्त था, कीर्ति आजाद जी उठाते रहे। मैं उनकी हिम्मत की दाद देती हूं कि वे उनके अध्यक्ष अमित शाह जी द्वारा बुलाये जाने के बाद भी अपने फैसले से हटे नहीं और इस भ्रष्टाचार की लड़ाई को सिर्फ इसलिए आगे बढ़ा रहे हैं, क्योंकि उन्हें मालूम है कि दिल्ली में एक ईमानदार सरकार आ चुकी है जो इस तरह की कमीशन ऑफ इन्क्वायरी

तक का गठन करने की अगर हिम्मत रखकर इस जांच को आगे पहुंचाने का काम कर रहे हैं। अध्यक्ष जी, मैं ये भी कहूंगी जब मैं सचिवालय में थी, तब एक महिला अधिकारी के कमरे में मैं बैठी थी। उस समय जब ये सीबीआई का छापा पड़ा उस अधिकारी ने ये कहा कि हम लोग बहुत चिंतित हैं, हम सभी बहुत चिंतित हैं क्योंकि कहीं न कहीं मकसद सिर्फ सीबीआई के छापे में राजेन्द्र कुमार जी ही नहीं थे। हमें सब मालूम हैं राजेन्द्र जी तो बहाना था, असली निशाना अरविन्द केजरीवाल जी पर ही था और सिर्फ डीडीसीए की जो जांच चल रही थी जिसे खुद एक अधिकारी जिनका जिक्र अभी श्री मनीष सिसोदिया जी ने किया, चेतन सांघी जी जिसकी जांच कर रहे थे और उन्होंने जांच में पाया कि पर आरोप लगे हैं डीडीसीए तब के अध्यक्ष के ऊपर वो कहीं न कहीं सही पाये जा रहे हैं। इसलिए उन्होंने सरकार को वापस लिखकर दिया कि आप इस पर इन्क्वायरी ऑफ कमीशन बिठाइये और इसकी जांच को आगे बढ़ाइये। अध्यक्ष जी, होता क्या है कि उसी चेतन सांघी जी या जो इस कमेटी के चेयरमैन थे, उन पर एसीबी से कहकर एक नहीं दो-दो एफआईआर उन्हीं के ऊपर दर्ज करवा दी जाती है और उन्हें छुट्टी पर जाने पर मजबूर कर दिया जाता है यही महिला अधिकार....

श्री विजेन्द्र गुप्ता : Rule 264(2) (i) member while speaking shall not refer to govt. official by name....

सुश्री अलका लाम्बा : अध्यक्ष जी, गुप्ता जी को एक बात बता देती हूं, नहीं नहीं अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, इसको एक बार पूरा होने दें।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : क्योंक हमें मालूम है यहां पर जो कुछ हो रहा है, वो किस लिए हो रहा है इसलिए बैठे हैं यहां पर रूल्स को वायलेट नहीं होने देंगे।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, किसी अधिकारी पर जब आरोप लगाना हो तो नाम नहीं लिया जाता यह आरोप नहीं लगा रही हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इन्होंने कहा कि वहां पर रेड करवाई नाम लेकर एफएम का नाम लेकर कहा है इन्होंने।

अध्यक्ष महोदय : कहां?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : इन्होंने बोला है अभी xxx[1] ने रेड करवाई चेतन सांघी के मामले में एफआईआर करवाई। आप रूल पढ़िये, रूल में आप बताइये अगर मैं गलत हूं। साफ लिखा है Rules to be observed by speaking मैं उप-मुख्यमंत्री जी को बताना चाहता हूं, उप-मुख्यमंत्री जी कह रहे थे Rule -2] 264 .... a member was (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं ठीक करवा देता हूं, बोल देता हूं, आप बैठिये अभी।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैं बोल रहा हूं।

सुश्री अलका लाम्बा : गुप्ता जी मैं अभी अध्यक्ष जी अभी उत्तर प्रदेश के रायबरेली अमेठी में गई, वहां पर बच्चे क्या करते हैं जो मां कपड़े धोती है न एक थापी कहते हैं और क्रिकेट का बैट नहीं होता वो थापी से खेलते हैं, ये xxx[2] साहब जिन पर आरोप है, मैं कहूंगी...*(व्यवधान)* चलिए नाम नहीं लेती डीडीसीए के जो अध्यक्ष रहे आज तक उन्होंने जिन्दगी में कभी थापी भी नहीं थामी होगी जो अध्यक्ष का पद थाम कर बैठे हैं।

अध्यक्ष महोदय : अलका जी एक सेकेण्ड, विजेन्द्र जी, अगर ये कहा है कि xxx जी ने रेड करवाई है, वो शब्द निकाल दें। ठीक है, बैठ जाइये।

(xxx[1] चिह्नित अंश अध्यक्ष महोदय के आदेश से कार्यवाही से निकाले गए।)

(xxx[2] मान्नयी सदस्य द्वारा नाम वापस लिया गया।)

नाम निकाल दीजिए बस। अगर नाम लिया है उनका नाम हटा दीजिये *...(व्यवधान)* अलका जी वित्तमंत्री देश के वर्तमान वित्तमंत्री ऐसा बोल लीजिये।

सुश्री अलका लांबा : अच्छा देश के वित्तमंत्री। मैं कहूंगी, अध्यक्ष जी, देश के वित्त मंत्री एक वो बड़ी मछली हैं जिसके पेट में बहुत छोटी-छोटी मछलियां हैं, वो जितनी भी मछलियां अंदर गई हैं उन सबका जो ये है, मुझे लगता है कि इन्क्वायरी ऑफ कमीशन के बाद जरूरत बन जाती है क्योंकि हम उम्मीद नहीं कर रहे है कि केन्द्र में बैठी मोदी सरकार कोई भी जांच आयोग बनाएगी या कोई भी ईमानदारी से निष्पक्ष होकर जांच करेगी, उम्मीद इसलिए नहीं है। दिल्ली की आम आदमी पार्टी की सरकार और मुख्यमंत्री की दाद देती हूं कि मजबूर कर दिया देश के प्रधानमंत्री को अपने सभी सांसदों को बुलाकर ये जताने के लिए कि हम वित्तमंत्री जी के साथ खड़े हुए हैं। आज पूरा केन्द्र हिलाकर रख दिया है क्योंकि जो सीबीआई के नाम की कुल्हाड़ी इन्होंने चलाई थी, वो कुल्हाड़ी किसी और का पांव नहीं खुद वित्त मंत्री का पांव घायल करके चली गई है।

अध्यक्ष जी, एक और बात कहूंगी सीबीआई का दुरूपयोग, क्योंकि मैं सीबीआई पर बोल रही हूं भूलियेगा मत, तीस्ता को कौन नहीं जानते तीस्ता सीतलवाड़ 2002 के दंगों में वो एक मानव आयोग एक एनजीओ से किसी तरीके से वो काम कर रही थी उनके हक और उनके 2002 के न्याय की लडाई लड़ रही थी। सीबीआई का कितना दुरूपयोग किया गया, ये हम ने सब ने देखा। 2002 में उस महिला ने जिस तरीके से लोगों की मदद करनी चाहिए। आज प्रधानमंत्री बनते ही सरकार आने के बाद उन पर सीबीआई के छापे डलवाये गये और उनके खिलाफ भी बहुत सबूत तो नहीं मिले लेकिन हां, वही हुआ जो राजेन्द्र जी के यहां से हुआ कुछ शराब की बोतलें मिली। मुझे लगता है ये खोजने वही जाते

हैं, ये तो सिर्फ बहाना होता है और राजेन्द्र जी की मैं बात फिर कहूंगी मुझे खुशी है कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अगर एक भ्रष्ट अधिकारी और भी थे जो कुछ दिन पहले खुद दिल्ली के मुख्यमंत्री और सरकार ने उनके खिलाफ जब सबूत मिले, छापा पकड़वाकर सीबीआई को उनके खिलाफ सबूत दिये और वो अधिकारी आज सीबीआई की गिरफ्त में भी हैं। इस स्तर तक भी दिल्ली के मुख्यमंत्री और सरकार गई और जहां तक राजेन्द्र जी की बात है, आठ-नौ महीने हमें भी हो गये हैं, ईमानदार राजेन्द्र जी के साथ काम करते हुए हमें उन पर गर्व है। हमें गर्व है कि आठ-नौ महीनों में कभी ऐसा महसूस नही होने दिया कि उन्होंने कभी कोई काम किसी गलत मंशा से रोका हो। मैं जब उस महिला अधिकारी से, जब सीबीआई का छापा पड़ा, अध्यक्ष जी मैं सचिवालय में थी उस महिला अधिकारी ने साफ कहा हमें ये महसूस होता है कि जितने भी ईमानदार अधिकारी हम दिल्ली सरकार के अधीन काम कर रहे हैं, एक एक को चिन्हित करके निशाने पर लाने का प्रयास किया जा रहा है ताकि हम खुद यहां से एक ईमानदार सरकार में काम करने से मना कर दें। ताकि ये अपने भ्रष्ट अधिकारियों को इस सरकार के ऊपर थोप सके ताकि समय आने पर ये हर बार ये साबित कर पायें कि देखिये, हम भ्रष्ट सरकार हैं। मैं इनसे पूछना चाहूंगी मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान जी बीजेपी के मुख्यमंत्री हैं, व्यापम घोटाला होता है, पचास लोगों की हत्यायें हो जाती हैं। अध्यक्ष जी, क्यों केन्द्र ने जरूरी नहीं समझा कि मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री के कार्यालय पर छापा मारा जाये? ताकि इस तरह की हत्यायें जो एक साजिश के तहत हो रही है, उन्हें रोका जाये। इन्होंने ऐसा नहीं किया। राजस्थान की मुख्यमंत्री भी बीजेपी की मुख्यमंत्री है। किस तरीके से क्रिकेट से ही जुड़े हुए एक, जो लंदन में बैठे हुए हैं। क्रिकेट के बहुत बड़े मैं कहूंगी जो चलाते थे यहां पर मैं वहीं कहूंगी जरूरी नहीं समझा

कि जिस तरह से उनका लेन-देन हो रहा था। बीजेपी के राजस्थान की मुख्यमंत्री उनके खातों की जांच सीबीआई द्वारा करवाई जाये। कर्नाटका के पूर्व मुख्यमंत्री यदुरप्पा जी के ऊपर भी केस थे। उन्हें भी किस तरीके से बचाने का प्रयास किया जा रहा है। मैं अध्यक्ष जी यही कहूंगी सीबीआई का बिल्कुल दुरूपयोग किया जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी का मैं जिक्र करना चाहूंगी जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने कहा यूपीए की सरकार के समय पर कि सीबीआई पिंजरे का तोता है। उसे जब चाहे जैसे चाहे इस्तेमाल किया जाता है। मैं आपके माध्यम से, सदन के माध्यम से केन्द्र में बैठी मोदी सरकार से पूछना चाहती हूं कि पिछले दो सालों में, जब से आप सरकार में आये हैं आपने इन दो सालों में सीबीआई में ऐसे क्या बदलाव किये कि आज हम ये मान जायें कि सीबीआई अब उस पिंजरे का तोता नहीं रहा जिसे अब कोई भी जैसे चाहे इस्तेमाल नहीं कर सकता है। लेकिन ऐसा कोई कदम दो सालों में नहीं उठाया कि सीबीआई को इंडीपेन्डेंट बाडी बना दें। इवन कि आरोप ये लग रहा है कि एक एडिशनल डायरेक्टर जो सीबीआई में नियुक्त किये गये हैं और वो कोई और नहीं 2002 दंगों की जो एसआईटी के सदस्य के तौर पर जांच कर रहे थे जिनका कहा जाता है कि नरेन्द्र मोदी जी को देश के प्रधानमंत्री को 2002 के दंगों में क्लीन चिट देने में भी बहुत बड़ा हाथ रहा, आज वो यहां पर एडिशनल डायरेक्टर बन कर सीबीआई में नियुक्त कर दिये जाते हैं और इतना ही नहीं हमें ये लगता था कि ईमानदार आदमी को तो हम देख रहे हैं कि किस तरह से मुख्यमंत्री के कार्यालय तक में सीबीआई का छापा पड़वाया गया। लेकिन ये बात है कि बहुत लोगों को किसी समझौते के तहत भ्रष्ट लोगों को बचाने के लिये भी सीबीआई का इस्तेमाल होता आया है और अभी भी हो रहा है, उदाहरण दूंगी फिर बहुत से राज्यों के अभी भी के मुख्यमंत्री पूर्व मुख्यमंत्रियों के नाम आयेंगे कि किस तरह किसी समझौते के तहत केन्द्र में बैठी मोदी सरकार उन्हें बचाने का प्रयास आज भी कर रही है।

अध्यक्ष महोदय : अलका जी कन्क्लूड करिये प्लीज।

सुश्री अलका लाम्बा : अध्यक्ष जी, बीच में वो बोल पड़े थे, इसलिए मेरा बीच में रह गया।

अध्यक्ष महोदय : नहीं बहुत सदस्यों को बोलना है।

सुश्री अलका लाम्बा : मैं आपसे कहूंगी कि ठीक है मैं अपनी बात को यही समाप्त करूंगी पर मैं दिल्ली सरकार की इस कदम का, इस प्रस्ताव का स्वागत करती हूं कि आपने बिना डरे, बिना समय गंवाये इस बात को जनता के सामने लाकर रख दिया कि ये जो छापा पड़ा था, राजेन्द्र कुमार जी हमारे बीच में हैं मैं आपको राजेन्द्र जी को व्यक्तिगत भी जानती हूं हमें गर्व है आपकी ईमानदारी पर। हमें गर्व है, आपकी ईमानदारी पर आप बिल्कुल विचलित मत होइयेगा एक-एक अधिकारी जो आज सचिवालय में बैठा हुआ है, उस महिला अधिकारी से भी बात करूंगी जिन्होंने कहा कि हम आपके अधीन काम करके गौरवान्वित महसूस करते हैं और कभी ऐसा सोचते हैं हम पर कोई आंच नहीं आ सकती है। मुझे मालूम है, आपकी दो बेटियां है उसमें से एक बेटी नौवीं कक्षा में है जब आपको सीबीआई ने गिरफ्तार किया। आपका परिवार जितना चिन्तित था, उतना हम भी चिन्तित थे, क्योंकि आपको मोहरा बनाकर निशाना बनाया जा रहा है। राजनीतिक तौर पर क्योंकि असली मकसद है इस ईमानदार सरकार को किसी भी तरह से कमजोर करने का।

अध्यक्ष महोदय : अलका जी अब कन्क्लूड करिये प्लीज।

सुश्री अलका लाम्बा : मैं उम्मीद करती हूं।

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिये प्लीज।

सुश्री अलका लाम्बा : आप जिस ईमानदारी और ताकत से राजेन्द्र कुमार जी काम कर रहे हैं उतनी मजबूती ईमानदारी से आगे भी काम करते रहियेगा आपके परिवार के साथ ये परिवार भी आपके साथ खड़ा है इस लड़ाई को हम अंजाम तक पहुंचायेंगे और आपसे हमें मालूम है अध्यक्ष जी, सदन की जानकारी में लाना चाहती हूं। कहा गया कि राजेन्द्र कुमार जी पर 2002 में जब शिक्षा सचिव थे, तब के उन पर आरोप हैं।

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिये प्लीज, कन्क्लूड करिये।

सुश्री अलका लाम्बा : अभी मनीष सिसौदिया जी ने खुलासा किया कि 2002 के अगर आरोप थे।

अध्यक्ष महोदय : अलका जी, आप बैठिये।

सुश्री अलका लाम्बा : राजेन्द्र जी इस बात के गवाह हैं कि इनसे जो पूछताछ इनको दो बार बुलाकर सीबीआई दफ्तर में की गई ना शिक्षा विभाग, ना वेट विभाग के बारे में जानकारी दी गई।

अध्यक्ष महोदय : अलका जी, प्लीज बैठ जाइये आप।

सुश्री अलका लाम्बा : आप डीडीसीए की एक-एक फाईल की जानकारी हासिल करने के लिये आपको दो बार बुलाया गया और मुझे आप पर गर्व है आपने अपनी जुबान नहीं खोली। आपने उस सीबीआई डीडीसीए के एक भी भ्रष्टाचार की जो जांच के खुलासे हैं, उसे गोपनीय रखा, हमें गर्व है आप पर। जय हिंद जय भारत।

अध्यक्ष महोदय : अनिल बाजपेयी जी।

श्री अनिल बाजपेयी : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। आपने मुझे बोलने का मौका दिया और मैं एक बात बहुत स्पष्ट तौर पर कह देना चाहता हूं कि 20 तारीख को सीबीआई के द्वारा जिस तरह से सीएम आफिस में रेड की गई, ये सारी मर्यादाओं के खिलाफ था...*(व्यवधान)* सॉरी, सारी मर्यादाओं के खिलाफ था आप सभी लोग अच्छी तरीके से जानते हैं। सभी सम्मानित सदस्य भी यहां पर बैठे हुए हैं जो काम कांग्रेस की पिछली सरकार सीबीआई का दुरूपयोग करके करती रही, वहीं घिनौना, घृणित कार्य, मैं तो इसको कहूंगा इस देश की भ्रष्टाचारी भाजपा की सरकार और उस भ्रष्टाचारी सरकार के मुखिया देश के प्रधानमंत्री के आदेश पर सीएम हाउस में इस तरीके का छापा डलवाया गया इसकी जितनी भी निंदा की जाये, उतनी कम है।

आज प्रश्न ये है कि वो भाजपा के लोग वो केन्द्र सरकार के प्रधानमंत्री जिनको कि हिटलर कहें तो बहुत कम है। उसका तो अपना एक करेक्टर भी था। वो माननीय अरविंद केजरीवाल साहब की जीत को पचा नहीं पा रहे हैं वो। आज दिल्ली के लोगों ने साबित कर दिया। उनके विजयरथ को दिल्ली में रोक दिया। मैं समझता हूं कि आज वो हम से किसी ना किसी तरीके से बदला लेने की कोशिश कर रहे हैं। आज 'कार फ्री डे' पर बहुत से सरकारी अधिकारी भी थे, कई पत्रकार लोग भी मिलते हैं, कई सरकारी अधिकारियों से बात भी होती है। कहते हैं हमको दिल्ली सरकार में काम करने के लिए बड़ा भय लगता है, कब किसी के यहां सीबीआई की रेड ना हो जाये। प्रश्न राजेन्द्र कुमार जी का नहीं है निशाना तो अरविंद केजरीवाल जी हैं। आज भाजपा के अंदर जो लोग बैठे हैं। आज गुप्ता जी नाम ना लेने की कह रहे हैं। अगर सीबीआई की जांच होनी चाहिये तो डीडीसीए के जो प्रेसीडेट हैं, उनके खिलाफ सीबीआई की जांच होनी चाहिए। आज मैं दावे के साथ कह सकता हूं, कि आज

अगर सीबीआई जांच करे, आज कोई सरकारी एजेंसी जांच करे तो मैं शत प्रतिशत कह सकता हूं कि भ्रष्टाचार के मामले में सौ पर्सेंट डीडीसीए के प्रेसीडेंट उसके अंदर दोषी निकलेंगे। ये मैं ओपन आपको चैलेंज करके कह रहा हूं गुप्ता जी. ..*(व्यवधान)* xxx[1] की बात कर रहा हूं मैं। गुप्ता जी की बात थोड़ी कर रहा हूं मैं।

अध्यक्ष महोदय : भई नाम मत लीजिये वाजपेयी जी एक बार हुआ। नहीं आप उधर की मत सुनिये*...(व्यवधान)* आप इधर-उधर की बात क्यों सुन रहे हैं।

श्री अनिल बाजपेयी : मैं एक बात पूछना चाहता हूं कि आज कि लड़ाई उनके अपने घर से शुरू हो रही है। आज उन्हीं के एक सांसद उन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगा रहे हैं उन्हीं के एक सांसद ये कह रहे हैं, मेरे खिलाफ अवमानना का मुकदमा दर्ज करके देखिये। तो इनको कम से कम कुछ तो इन लोगों को लज्जा शर्म आनी चाहिये। और मैं कहता हूं कि जो आज यहां सुन रहे हैं, वो अच्छी तरीके से सुन लें अरविंद जी ने तो साफ तरीके से कह दिया है आप केन्द्र सरकार के कितने ही मंत्री हैं जो भ्रष्टाचार के मामलों में लिप्त हैं, क्यों नहीं उनकी सीबीआई की जांच कराई गई? लेकिन हमारे लोकप्रिय नेता ने ये तो कहा है छाती ठोक के कि हमारा कोई भी व्यक्ति अगर करप्शन में इन्वाल्व पाया गया तो हम उसको जेल भेज देंगे। देश के तानाशाह प्रधानमंत्री ये कह के तो देखें कम से कम। क्योंकि वो खुद ही लिप्त हैं उनके लोग खुद ना खुद कहीं ना कहीं लिप्त हैं। मैं ये भी एक बात कह देना चाहता हूं कि आज व्यापम जो घोटाला हुआ है मध्यप्रदेश के अंदर वहां के अधिकारियों के साथ धमकाया

[1]×××चिन्हित शब्द अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार निकाले गये।

जा रहा है उन लोगों को, आज दिल्ली के अधिकारियों को कहीं ना कहीं धमकाया जा रहा है लेकिन सुन लें xxx[2] साहब देश के प्रधानमंत्री जी कि अगर माननीय अरविंद केजरीवाल की तरफ अगर किसी ने आंख उठाकर देख दी तो ये समझ लीजियेगा...*(व्यवधान)* मेरी बात सुनियेगा गुप्ता जी, अगर हमारे डिप्टी सीएम के खिलाफ, हमारे सीएम के खिलाफ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ये xxx शब्द निकाल दीजिये।

श्री अनिल बाजपेयी : हमारे किसी मंत्री के खिलाफ एक बार भी उंगली उठाई गई...*(व्यवधान)* तो हम छोड़ेंगे नहीं उनको...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : बाजपेयी जी, मेरी बात सुन लीजिये। बाजपेयी जी, अनिल वाजपेयी जी। आप अपनी भाषा के तरीके से रख के अपनी बात को रखिये। आप अच्छा बोल रहे हैं, अच्छी बात रख रहे हैं लेकिन कुछ शब्दों का ठीक चयन करिये...*(व्यवधान)* प्लीज छोड़िये, नितिन जी चलिये...*(व्यवधान)*

श्री अनिल बाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी बैठिये। बैठिये...*(व्यवधान)* मैंने हटवा दिया भई...*(व्यवधान)*

श्री अनिल बाजपेयी : अध्यक्ष महोदय जी, आज मैं फिर बार-बार आपसे कह रहा हूं कि प्रश्न राजेन्द्र कुमार जी का नहीं है प्रश्न सिर्फ अरविंद केजरीवाल जी का है और बौखला गई है भाजपा की भ्रष्टाचारी सरकार। वो जीत को नहीं पचा पा रही है। वो अरविंद केजरीवाल की बढ़ती लोकप्रियता नहीं पचा पा रही है। आज क्या हुआ बिहार के अंदर? पता लग गया कि उनकी हैसियत क्या है और आज मैं ये कहना चाहता हूं कि हमारे रीडर को अगर आपने दबाने की कोशिश की तो हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। हम अपनी जान दे देंगे चाहे हम

(××× चिन्हित अंश अध्यक्ष महोदय के आदेश से कार्यवाही से निकाले गए।)

मर जायें लेकिन अरविंद जी के ऊपर उंगली नहीं उठाने देंगे। ये हम लोग आपके सामने कहना चाहते हैं और ये सदन पूरे तरीके से ये मांग करता है कि के xxx खिलाफ सीबीआई की जांच होनी चाहिये।

अध्यक्ष महोदय : अनिल वाजपेयी जी, आपको समझ नहीं आती बात? मैंने पहले भी कहा हैं

श्री अनिल वाजपेयी : सॉरी।

अध्यक्ष महोदय : क्यों माहौल इतना बढ़िया चल रहा है आप विषय की गंभीरता को खत्म कर रहे हैं*...(व्यवधान)*

श्री अनिल बाजपेयी : सॉरी सर मान लिया। मैंने अपनी गलती मान ली। चलिये मैं*...(व्यवधान)* दूसरे शब्दों में कह दे रहा हूं कि इस देश के जिनको के नंबर दो का, अब नंबर दो हैं नंबर दो होम मिनिस्टर हैं, या वित्त मंत्री हैं ये तो भाजपा के लोग जानते होंगे या गुप्ता जी जानते होंगे लेकिन मैं इतना कहना चाहता हूं कि इस केन्द्र सरकार के अपने आपको नंबर दो के बताने वाले देश के वित्त मंत्री के खिलाफ सीबीआई की जांच होनी चाहिये। उनकी संपत्ति की जांच होनी चाहिये और उनके खातों की भी जांच होनी चाहिये और मैं एक बात कहता हूं कि आज उनके खिलाफ अगर जांच होगी तो असलियत सबके सामने आ जायेगी। मैं यही आपके सामने और पुनः ये बात कहता हूं और ये भी कहता हूं कि ईमानदार अधिकारियों को घबराने की जरूरत नहीं है। अरविंद जी, जब अपने विधायकों को ये कह देते हैं कि अगर हमारा कोई विधायक भ्रष्टाचार में पकड़ा जायेगा तो दो मिनट में जेल भेज देंगे। अधिकारी हमारे रिश्तेदार नहीं हैं लेकिन अच्छे ईमानदार अधिकारी उनके लिये भी हम लोग अपनी जान देने के लिये तैयार हैं और उनका समर्थन हम लोग करते हैं। आपने बोलने का मौका दिया बहुत-बहुत धन्यवाद आपका।

(××× चिन्हित अंश अध्यक्ष महोदय के आदेश से कार्यवाही से निकाले गए।)

अध्यक्ष महोदय : श्री जगदीप सिंह जी।

श्री जगदीप सिंह : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया लेकिन इतिहास में एक ब्लैक डेमोक्रेटिक डे लिखा जा चुका है, 15 दिसंबर, 2015 भारतवर्ष के लिये एक ब्लैक डेमोक्रेटिक डे, एक प्रधानमंत्री जो कि एक डिक्टेटर की तरह काम कर रहा है उन्होंने इसको एक ब्लैक डेमोक्रेटिक डे बना दिया है। आज तक इतिहास में कभी नहीं हुआ। आज तक कभी इतिहास में नहीं हुआ कि एक मुख्यमंत्री के दफ्तर में जा के सीबीआई ने रेड मारी पूरा इतिहास निकाल के देख लें लेकिन उस दिन मुख्यमंत्री ने प्रेस कांफ्रेंस में बिल्कुल ठीक कहा कि राजेन्द्र कुमार तो बहाना था अरविंद केजरीवाल निशाना था। मुझे समझ नहीं आता कि सीबीआई जिसको कांग्रेस के टाईम पर कहा गया था कि जो सरकार का तोता है, हमारे यहां पर भी एक मैना बैठी हुई है खैर। तो ललित मोदी के इंस्पेक्टर जितने थे, जिन्होंने उनको कबूतर बाजी करने में हेल्प की थी चाहे वो सुषमा स्वराज थी या वसुंधरा राजे थी। ये सब दफ्तरों में सीबीआई क्यों नहीं रेड मारती? 37 मर्डर हो गये जी। 37 लोगों की हत्या कर दी गई और जिसमें से 6 जो लोग एक्यूज्ड थे, उनको मार दिया गया जिसमें वहां के मुख्यमंत्री भी इनवाल्व थे। वहां के मुख्यमंत्री को नहीं दिखाई दे रहा कि व्यापम घोटाले में मोदी जी को शिवराज चौहान के दफ्तर में भी रेड होनी चाहिये। हमारी एजुकेशन मिनिस्टर हैं। पिछले चुनाव में, लिखती हैं जी मैं बीए पास थी इस चुनाव में लिख देती हैं मैं बीकाम पास थी अरे ये कोई सीरियल नहीं है कि कभी सास भी बहू थी, के कभी सास बन गये कभी बहू बन गये। भाई साहब, ये चुनाव इलेक्शन कमीशन को देना है मुझे समझ नहीं आता। पता नहीं केड़ी किताबां ओने खरीदियां ने कामर्स दियां खरीदीयां सी या आर्ट दियां खरीदियां सी। मैंनू ते समझ नहीं आंदा ओनू ऐ ही नहीं पता कि केड़ी कताबां खरीदनियां

सी। उनके दफ्तर पर तो सीबीआई रेड नहीं मारती और आज सुबह मोदी जी सवेरे स्टेटमेंट देते हैं कि डान्ट वरी अरूण जेटली जी जो भाजपा के कलमाड़ी हैं। आप चिन्ता ना करें you will fly with the colour you will also pass out also का मतलब है के मैं भी निकल गया था बेटा तू भी निकल जायेगा चिन्ता न कर...*(व्यवधान)* चिन्ता मत करो गुप्ता जी...*(व्यवधान)* हमारी मैना...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : हां...*(व्यवधान)* किसका नाम लिया प्रधानमंत्री जी का उन्होंने जो आज का भाषण है वह कोट किया है भाषण कोट किया है। उनका भाषण कोट किया है।

श्री जगदीप सिंह : सुनने वाली बात है जी सर बीजेपी ने...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : जो आज के अखबारों में आया है वो उन्होंने पढ़ दिया मैं सुन रहा हूं। मैं एक एक चीज को बहुत ध्यान से सुन रहा हूं। जहां कहीं गलती होगी, मैं रोक दूंगा।

श्री जगदीप सिंह : सर इलेक्शन से पहले हमारे प्रधानमंत्री जी हर स्टेट में जा जाकर चिल्ला के कहते थे भ्रष्टाचार मुक्त। भारत बनायेंगे भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनायेंगे। मुझे लगता है सुन लीजिये उसमें एक गलती थी वो मुक्त की जगह युक्त था...*(व्यवधान)* जैसे मलाई युक्त दूध होता है ऐसे भ्रष्टाचार युक्त भारत बनायेंगे। उनकी जो कार्य शैली है, उनका काम करने का तरीका है, वो कह रहा है भ्रष्टाचार युक्त भारत बनायेंगे भ्रष्टाचार मुक्त भारत नहीं बनायेंगे। सर, ये उदाहरण है कि बीजेपी ने अभी जो एप्वाइंट किया था लोकायुक्त कर्नाटका में जस्टिस वाई भास्कर राव जो कि आलरेडी इतने सीरियस, इतने गंभीर भ्रष्टाचार के आरोपों से लिप्त हैं जिनमें हमारों करोड़ रूपये का उनके ऊपर घोटाले का

लिखा हुआ है जिसमें कमीशन कह रहा है कि उनका बेटा भी इनवाल्व है और कुछ ब्रोकर्स भी इनवाल्वड है वो मोदी जी को नहीं नजर आ रहा वहां पर उनके दफ्तर में रेड नहीं मारी जा रही। सर, मैं आपको एक और छोटी से बात कहे के खत्म करना चाहूंगा कि आठवीं फेल बच्चे से भी पूछ लोगों ना, जिसको पीयून लगा लिया जाता है सरकारी दफ्तर में उससे भी पूछ लोगों ना के किसी फाइलें किसके दफ्तर में पड़ी होती हैं उसको भी पता होगा सीबीआई में क्या आठवीं पास भी लोग नहीं हैं, जिनको पता नहीं है कि मुख्यमंत्री के दफ्तर में जो फाइलें हैं, वो मुख्यमंत्री की होंगी राजेन्द्र कुमार की 2002 से क्या फाइलों का ट्रक लेकर क्या साथ में लेकर चल रहे हैं? क्या अपने दफ्तरों में ले जाते हैं वो हर जगह? मुझे समझ नहीं आई इस बात में कि मुख्यमंत्री के दफ्तर में जो रेड मारी जाती है और हजारों पुलिस उन्हें ले के आते हैं हर जगह पर अरे इतने बड़े-बड़े टेररिस्ट पकड़े। वहां तो इतनी पुलिस ना लगाई तुमने और मुख्यमंत्री के दफ्तर में इतनी पुलिस लगा दी जाती है और this is a very un-constitutional thing कि वहां पर जो होना चाहिये राजेन्द्र कुमार जी को वहां पर होना चाहिये था जिसके ऊपर ये लोग शिकायत जिसकी लेकर आये, वो वहां पर नहीं थे। उनका कोई आफिसर नहीं था। अन्दर से एक रास्ता जो मुख्यमंत्री जी के दफ्तर में जाता है वहां पर भी ये लोग आगे जाते रहे हैं। जब मुख्यमंत्री जी ने बोला कि जो फाईलें हैं, वो फाईलें यहां थोड़ी मिलेंगी जो आईटी की फाईलें हैं। फटाफट इन लोगों ने ऊपर भेजा कि जाओ और नौवीं फ्लोर से आईटी की फाईलें उठा लाओ तो आप इसको समझ सकते हैं यह षड्यंत्र था जो कि भारत सरकार के चुनिंदा मंत्री हैं, जिनके ऊपर इनका नाम लेना चाहे कलमाडी कह लीजिये वित्त मंत्री कह लीजिये एक ही बात है।

अध्या महोदय : भई बात सुनिये, जगदीप जी प्लीज।

श्री जगदीप सिंह : सर, भाजपा के कलमाडी को बचाने की कोशिश की जा रही है। क्योंकि वहां पर डीडीसीए की फाईल मौजूद थी जिसको सीबीआई देखना चाहती थी। सुबह नौ बजे से लेकर रात के बारह बजे तक एक-एक फाईल का, एक-एक पन्ना लोग छानते रहे, पूरा खोजते रहे आज तक इतनी बड़ी रेड इन्होंने बड़े-बड़े जो करोड़पति या बड़े-बड़े जो भ्रष्टाचारी हैं, उनकी फाईल में नहीं मारे। एक ईमानदार मुख्यमंत्री के आफिस में ये लोग इतनी देर करते रहे, इनका जो मेन मकसद था ये लोग यही चैक करना चाहते थे कि ईमानदार सरकार किस तरीके से काम कर रही है। यह जानना चाहते थे कि किस-किस आफिस में हमारे मंत्रियों के ऊपर आरोप की तैयारी की जा रही है। इनको अपना डर था, इनको अपने मंत्रियों को बचाना था इसलिए यह रेड की गई है। राजेन्द्र कुमार तो बहाना था एक बार दोबारा बोलूंगा अरविन्द केजरीवाल निशाना है। जय हिन्द, जय भारत।

अध्यक्ष महोदय : श्री राजेन्द्र पाल गौतम जी।

श्री राजेन्द्र पाल गौतम : धन्यवाद अध्यक्ष जी कि इतने महत्वपूर्ण विषय पर मुझे बोलने का अवसर दिया। मेरा यह मानना है कि सीएम साहब के आफिस में पीएम साहब का पासपोर्ट तो नहीं था जिसे सीबीआई ढूंढने गई हो और इस 15 तारीख से दो दिन पहले शकूरबस्ती में इस ठंड के मौसम में झुग्गियों को तोड़ा गया इसमें एक बच्ची की डेथ हुई। उसमें कहने लगे कि गलत टाईम पर गलत काम हो गया और उस बच्ची की हत्या के लिए कहीं न कहीं केन्द्र सरकार दोषी हो गई तो इन्होंने एक साथ एक तीर से दो निशाने साधने की कोशिश की। पहला तो शकूरबस्ती वाले मुद्दे से ध्यान भटकाने के लिये इन्होंने प्लान

किया। और जो दो निशाने इन्होंने पहला तो ध्यान भटका दिया और दूसरा जो डीडीसीए में लगभग पिछले 13 सालों से जो घोटाले लगातार चल रहे थे जिस पर रूलिंग पार्टी के एक सांसद लगातार उस इशू को उठा रहे थे और केन्द्र सरकार उस इशू को इसलिए दबा रही थी चूंकि केन्द्र सरकार के पीएम साहब के सबसे नजदीकी और पावरफुल मिनिस्टर कहीं न कहीं उस षड्यंत्र में शामिल थे, उस फ्रॉड में शामिल थे जो डीडीसीए के फंड के साथ ऐम्बेजलमैंट हुआ तो मैं समझता हूं, जैसा मेरे साथी ने कहा कि वो वहां एजुकेशन डिपार्टमेंट की फाईल ढूंढने तो गये नहीं थे, न ही आईटी डिपार्टमेन्ट की फाईल ढूंढने गये थे और जिस तरह बार-बार केन्द्रीय सरकार सफाई देने की कोशिश कर रही थी कि ये सीएम आफिस पर हमला नहीं है। ये रेड सीएम आफिस में नहीं है, ये रेड एक अधिकारी के खिलाफ है। कोई छोटे से छोटा बच्चा भी इस बात को समझ सकता है कि 2002 से 2007 के बीच के जिस मुद्दे की बात की गई, 2002 से 2007 के उस मुद्दे की फाईलें तो सीएम आफिस में नहीं होंगी और यह भी हर कोई आसानी से समझ सकता है कि सीएम जिन फाईलों को साईन करते हैं, जिन फाईलों को पढ़ते हैं, उनको अपने कमरे में तो नहीं रखेंगे। वो फाईलें तो उनके सैक्रेटरीस के पास होंगी। मैं समझता हूं कि ये सीबीआई का इस्तेमाल जिस प्रकार से हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने किया, य बड़ी कायरतापूर्ण कार्रवाई थी और इस तरह उन्होंने भारतीय संघीय ढांचे पर हमला किया। भारत के संविधान परहमला किया। इस तरह की हरकत कभी भी नहीं होनी चाहिए। वो खुद जब मुख्यमंत्री थे तो बार-बार इस बात कहते थे कि सीबीआई का इस्तेमाल हमेशा कांग्रेस ने दूसरी पार्टियों को दबाने के लिये, परेशान करने के लिए किया है और आज जब वो खुद पीएम बने तो उन्होंने भी पीएम बनते ही सीबीआई का उसी तरह से इस्तेमाल करना शुरू कर दिया जिस तरह के आरोप वह कांग्रेस

पर लगाते थे। वो इस आरोप से बच नहीं सकते वो अपनी इस जिम्मेदारी से बच नहीं सकते। एक बात ओर मैं कहना चाहता हूं कि इस तरह सीबीआई का प्रैशर या किसी ओर ऐजेंसी का प्रैशर जितना ज्यादा दिल्ली की ईमानदार सरकार पर यह लोग बनायेंगे, उतनी ही ज्यादा स्ट्रैन्थ के साथ दिल्ली की यह सरकार और ज्यादा मजबूती के साथ खड़ी होगी और हमारी मजबूती का बहुत बड़ा कारण है क्योंकि हमारी सरकार ईमानदार सरकार है। हमारे मंत्री व विधायक ईमानदार हें। ईमानदार लोगों को किसी से कभी डर नहीं लगता तभी तो एक दिल्ली की छोटी सी सरकार जिसको अभी तक पूरे अधिकार भी नहीं मिले हैं वो इतनी मजबूती के साथ खडी है कि केन्द्र सरकार को आज नींद नहीं आ रही है और अपने स्वप्न में भी दिल्ली सरकार नजर आती है, दिल्ली के ऑनरेबल सीएम नजर आते हैं। मैं केन्द्र सरकार के इस कायरतापूर्ण एक्ट को कंडम करता हूं और जो दिल्ली सरकार ने आज पहल की है कमीशन आफ इंकवायरी गठित करने की, मैं उसका समर्थन करता हूं और यह सच्चाई सामने आनी चाहिये और एक अच्छा काम इन्होंने कर दिया कोर्ट में केस डाल कर। जो डिफेमेशन का सिविल और क्रिमिनल केस डाला है, यह काम इन्होंने बहुत अच्छा कर दिया क्योंकि जो फाईलें शायद हम नहीं निकाल पाते, अब कोर्ट में हम जरूर निकाल पायेंगे। आपने मुझे मौका दिया बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री विजेन्द्र गर्ग जी।

श्री विजेन्द्र गर्ग : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय आपने मुझे इस गम्भीर विषय पर बोलने का अवसर प्रदान किया। अध्यक्ष जी, डीडीसीए में कई तरह की हेराफेरी करके चौबीस करोड़ के बजट का कार्य 114 करोड़ में xxx एंड कम्पनी के द्वारा करवाया गया। यह सारा भ्रष्टाचार....

(××× चिन्हित अंश अध्यक्ष महोदय के आदेश से कार्यवाही से निकाले गए।)

श्री अध्यक्ष महोदय : नाम हटा दीजिये।

श्री विजेन्द्र गर्ग : बार-बार नाम जुबान पर आ जाता है सर क्योंकि यह भ्रष्टाचार का मामला है इसलिए नाम आ जाता है। मैं क्षमा चाहूंगा।

अध्यक्ष महोदय : आप डीडीसीए का अध्यक्ष इस्तेमाल कर लीजिये। कुछ भी कर लीजिये। वर्तमान वित्त मंत्री बोल लीजिये। लेकिन नाम मत रखिये प्लीज।

श्री विजेन्द्र गर्ग : क्षमा चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : चलिये।

श्री विजेन्द्र गर्ग : यह सारा भ्रष्टाचार उस व्यक्ति के कार्यकाल में हुआ जो आज हमारे देश का वित्त मंत्री बना बैठा हैं अध्यक्ष जी, जब बाढ़ ही खेत को खाने लग जाये तो खेत की रक्षा कौन करेगा? बहुत सी शिकायतें देश में अब तक ईमानदार सरकार के मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजेरीवाल से की गई। देश के कई नामी पूर्व क्रिकेटरों ने मुख्यमंत्री जी से मिलकर डीडीसीए में भ्रष्टाचार को लेकर अपनी पीड़ा बताई। भ्रष्टाचार की इन शिकायतों को गम्भीरता से लेते हुए दिल्ली के लोकप्रिय मुख्यमंत्री ने श्री चेतन सांघी जो वरिष्ठ अधिकारी हैं दिल्ली सरकार में, उनकी अध्यक्षता में एक जांच कमेटी का गठन किया और इस कमेटी ने जांच की रिपोर्ट मुख्यमंत्री जी को जो सौंपी उसमें उपरोक्त बातों का खुलासा हुआ कि इसमें बहुत भारी पैमाने पर भ्रष्टाचार हुआ है। इस जांच से केन्द्र में बैठी बीजेपी की सरकार और उसके वित्त मंत्री इतना घबरा गये कि उन्होंने इस अधिकारी को धमकाने और उस पर दबाव बनाने के लिये एसीपी का इस्तेमाल

किया। एसीपी का इस्तेमाल करके चेतन सांघी के खिलाफ पुराने किसी मुकदमे की एफआईआर दर्ज कर दी जाती है। यह बेहद शर्मनाक है। अध्यक्ष जी, यहां यह बताना भी जरूरी है कि 2006 में वर्तमान वित्त मंत्री भारत सरकार 23.86 करोड़ की सम्पत्ति उन्होंने 2006 में घोषित की जो 2012 में बढ़कर 120 करोड़ तक पहुंच गई। यह वो समय है जिसमें डीडीसीए में करोड़ों रूपये का भ्रष्टाचार हुआ था। अध्यक्ष जी वित्त मंत्री जी ने ऐसा कौन -सा व्यापार किया कि उनकी सम्पत्ति पांच साल में पांच गुना हो गई? हमारे भी बहुत सारे विधायक चुनाव से पहले व्यापार में थे, अब तो व्यापार छूट गया इसी काम में आ गये हैं तो वो पांच साल में अपनी सम्पत्ति को दुगुना नहीं कर पाते और वित्त मंत्री जी ने तो अपनी सम्पत्ति पांच साल में पांच गुना कर दी है। यह कौन-सी व्यापार किया विजेन्द्र गुप्ता जी बताने की कृपा करें। 30,000 की कीमत वाला लैपटाप का किराया एक दिन का 16,000 जिसकी कीमत 20,000 है उसका एक दिन का किराया 16,000 है। ऐसे भ्रष्टाचारी चुनाव में हारे व्यक्ति को प्रधानमंत्री जी द्वारा देश का वित्त मंत्री बनाना देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य हैं। इससे बड़ा दुर्भाग्य कोई नहीं हो सकता। दिल्ली की ऐतिहासिक बहुमत वाली सबसे ईमानदार सरकार को डराने धमकाने के मकसद से मुख्यमंत्री जी के कार्यालय में देश के इतिहास में पहली बार प्रधानमंत्री जी द्वारा सीबीआई की रेड करवा दी गई। यह देश के लोकतंत्र के इतिहास का सबसे काला दिन था। केन्द्र सरकार ने अपने तोते को डीडीसीए में हुए भ्रष्टाचार की फाईलें, विजेन्द्र जी सुन लीजिये, सच्चाई से मुंह मत मोड़िये, आप कहते हैं आप नाम न लें। नाम देश की जनता ले रही है उनका कि उन्होंने भ्रष्टाचार किया है।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैं कह रहा हूं। विजेन्द्र जी। देखिये एक चीज का ध्यान रखिये देश का प्रधानमंत्री कह लीजिये। नाम मत लीजिये। मैंने

बार-बार रिक्वेस्ट की है। यह मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं। आज का विषय बहुत गम्भीर है। उसकी गम्भीरता को समझिये।

श्री विजेन्द्र गर्ग : केन्द्र सरकार ने अपने तोते को डीडीसीए में हुए भ्रष्टाचार की फाईलें जो मुख्यमंत्री जी के कार्यालय में थीं, उनको लाने के लिये भेजा था। प्रैस कान्फ्रेंस में मुख्यमंत्री जी की खुली ललकार से केन्द्र सरकार सहम गई थी और सीबीआई केवल फाईलें खंगाल कर वापिस आ गई। उनको कुछ नहीं मिला वहां अगर हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी की ललकार सुन कर वो लोग सहम गये, भ्रष्टाचारी सहम गये। केन्द्र सरकार के नापाक इरादों पर मैं चेतावनी देना चाहता हूं कि सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है। मुख्यमंत्री कार्यालय पर सीबीआई की रेड यह सिद्ध करती है कि ईमानदार सरकार में ईमानदार आफिसर को टारगेट करके इन्हें प्रताड़ित किया गया, इसी कड़ी में एक ईमानदार आफिसर श्री राजेन्द्र कुमार जी से लगातार पांच दिनों तक क्वेशन किया गया, उन्हें प्रताड़ित किया गया। इसी कड़ी में एक ईमानदार आफिसर राजेन्द्र कुमार जी से लगातार पांच दिनों तक क्वेशनिंग की गई। उन्हें प्रताड़ित किया गया। केन्द्र में बैठी वर्तमान सरकार देश में अब तक की सबसे ईमानदार सरकार को दिल्ली मों काम ही नहीं करना देना चाहती। असल बात यह है। राजेन्द्र कुमार तो बहाना है केजरीवाल निशाना है। अपने गुनाह छुपाने के लिए कभी तो केन्द्र की सरकार हमारे विधायकों पर दिल्ली पुलिस का इस्तेमाल करके झूठे केस बनाकर जेल भेजना चाहती हैं जनता के मुख्यमंत्री को सीबीआई से डराना चाहते हैं। अधिकारियों को एसीबी से डराकर उनके काम में दखल डालना चाहते हैं। में केन्द्र में बैठी मोदी जी की सरकार को चेतावनी देना चाहता हूं कि भ्रष्टाचार से केजरीवाल की जंग जारी है। अब वित्त मंत्री की बारी है xxx

(××× चिह्नित अंश अध्यक्ष महोदय के आदेश से कार्यवाही से निकाले गए।)

अध्यक्ष महोदय : ये हटा दीजिये

श्री विजेन्द्र गर्ग : देश की जनता किसी भी भ्रष्टाचारी का मान नहीं करती। भ्रष्टाचारों का कोई मान नहीं होता। भ्रष्टाचारी कितना भी बड़ा आदमी क्यों न हो। भ्रष्टाचारी का कोई मान नहीं होता। जिसका मान ही नहीं होता उसकी मानहानि कैसे होती है ये जरा समझा दीजिये। अध्यक्ष जी आपने मुझे बोलने का अवसर दिया आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द, जय भारत।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अच्छा विजेन्द्र जी बैठिये। मैंने निकलवा तो दिया। राजेश जी विषय को देखिये। में माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं कि एक दिन का सत्र सरकार ने बुलाया है उसकी गम्भीरता को समझिये। इतना गंभीर विषय है और बार-बार मेरे आग्रह करने पर नाम लेने से अपने आपको वंचित करें इस बात का ध्यान रखें। श्री नारायण दत्त शर्मा जी। मैंने बोल दिया। नाम हटवा दिया। अभी आपके सामने चेतावनी दी है। अब आगे कोई नाम नहीं लेगा, ध्यान रखियेगा।

श्री नारायण दत्त शर्मा : सर धन्यवाद आपने मुझे इतने गंभीर विषय पर बोलने का मौका दिया। मैं इस सदन के माध्यम से अपने सीएम साहब अरविन्द केजरीवाल जी और दिल्ली सरकार के ईमानदार अधिकारी को आश्वस्त करना चाहता हूं कि यह पूरा सदन आपके साथ है और पूरा देश और दुनिया की नजरें आपके साथ है। क्योंकि गांवों में एक कहावत है कि जब गीदड़ की मौत आती है तो गामों की तरफ आता है। जितने भी वार यह ईमानदार सरकार पर करें यह वार अपनी ताबूत में ठोंक रहे हैं। कील ठोक रहे हैं। मेरा कहने का मतलब यह है कि पूरा देश इस चीज को देख रहा है कि एक ईमानदार

सरकार को जैसे उसकी गाड़ी थोड़ी सी स्पीड पर आती है बड़ा-सा ब्रेक लगा दिया जाता है और यह गाड़ी रूकने वाली नहीं हैं आपके साथ पूरा देश है, परे देश की जनता आपके साथ है। इन छोटी-छोटी चीजों से विचलित न हों। दूसरी चीज यह है कि अभी भाई ने कहा है कि भ्रष्टाचारी का कोई मान नहीं होता, तो मानहानि का मुकदमा ही क्या होता है। इसी के साथ मैं धन्यवाद करता हूं। और आज का जो प्रस्ताव है उसका मैं समर्थन करता हूं। जय हिन्द, जय भारत।

अध्यक्ष महोदय : जरनैल सिंह जी।

श्री जनरैल सिंह (तिलक नगर) : धन्यवाद अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी सुबह घर से निकला तो एक पार्टी के लोग नया नारा लगा रहे थे वो बताना चाहूंगा, एक तरफ एक आदमी बोल रहा था जी अपना अरूण कमाऊ है तो सामने वाले बोल रहे थे कल्माड़ी का ताउ है। डीडीसीए में भ्रष्टाचार का जो मामला आज सदन के सामने है, इसके मुख्य आरोपी के बारे में अभी थोड़ी देर पहले पीएम साहब ने उनको थोड़ा हौसला बंधाने के लिए कुछ टिप्पणी की है कि जेटली will be pass with the flying colours.

अध्यक्ष महोदय : जरनैल जी ये शब्द....

श्री जरनैल सिंह (तिलक नगर) : उनकी टिप्पणी है जी, मैं नहीं कह रहा, प्रधानमंत्री जी की टिप्पणी है। वो बड़े परेशान हैं कि उनके एक साथी सांसद ने ही उनके ऊपर बड़े गंभीर आरोप लगाए हैं। सारे जानते हैं कि वो आरोप भी सत्य हैं। बड़े विश्वास के साथ पीएम साहब ने भ्रष्टाचार में लिप्त अपने साथी को बधाई दी है, ढांढस बंधाया हे। इसमें कुछ अजीब नहीं है अध्यक्ष जी, क्योंकि इस देश में तो सड़कों पर सरेआम कत्लेआम करने वालों को, लाखों करोड़ों

के घोटाले करने वालों को कुछ नहीं हुआ, तो वो कह रहे हैं तुम क्यों परेशान हो रहे हो, मैं तो खुद इसकी एक जीती जागती मिसाल हूं। मेरा क्या किसी ने बिगाड़ लिया है, आज तो मैं प्रधानमंत्री बन गया। आज मैं पीएम हूं और तुमने तो सिर्फ एक छोटा-सा सौ-सवा सौ करोड़ का घोटाला किया है। 2002 में तो मैं बहुत कुछ कर चुका हूं और फिर भी आज क्लीन चिट लेकर मैं पीएम बना हूं। अध्यक्ष जी, इस घोटाले की कई बारी जांच हो चुकी है। हर बारी, हर जांच की रिपोर्ट में भारी इररेगुलैरिटी पाई गई है। फिर भी फाइनेंस मिनिस्टर साहब को अपनी जिम्मेवारी का कोई अहसास नहीं है। रिपोर्ट में साफ-साफ लिखा है कि फिरोहशाह कोटला स्टेडियम को बनाने मे 24 करोड़ का बजट सैंक्शन हुआ था पर 114 करोड़ खर्च हो गया। इसमें पैसे खर्चने के लिए किसी टैंडर प्रक्रिया का इस्तेमाल नहीं किया गया। इपीआईएम लाम्बा कंपनी है, उसको 24 करोड़ 26 लाख का काम करवाया गया जबकि 57 करोड़ 20 लाख की पेमेंट कर दी गई। कई कंपीनज को बिना काम किए एडवांस पेमेंट दे दी गई। evasion of entertainment tax का मामला साफ-साफ है जिसमें 24.45 करोड़ का टैक्स लेना, सरकार को देना दिखा रहे हैं। एक ही पते पर अलग-अलग फर्जी कंपनियां बनाई गई है, मिसाल के तौर पर स्टीम मार्केटिंग प्राइवेट लिमिटैड, एल्टीमेट सोल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड, एडवांस ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटैड। यू-23 अरविंद नगर का एड्रेस दिखाया गया है और जब वहां जाकर मालूम किया अध्यक्ष जी, तो कोई नरेश चंद शर्मा नाम का आदमी मिला, जो कि डारेक्टर था इन कंपनीज में और उन डारेक्टर साहब को मालूम ही नहीं है कि इतने बड़े-बड़े काम उनकी कंपनी ने इस फिरोशाह कोटला मैदान में, स्टेडियम में किए हैं जबकि वो तो एक साधारण से अगरबत्ती बेचने वाले व्यक्ति हैं। सारी चीजें बिल्कुल स्पष्ट है अध्यक्ष जी, फिर भी देश के महत्वपूर्ण पद पर बेठे लोग आंखें बंद करके बैठे

हुए हैं और ना ही सिर्फ आंखें बंद करके बैठे हैं बल्कि भष्टाचार का पूरा सपोर्ट दे रहे हैं और जो लोग इस भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ रहे हैं, आज सारे जानते हैं देश के आगे दो मिसालें हैं, एक मिसाल ये है कि दिल्ली की सरकार में एक मंत्री के ऊपर सिर्फ एक छोटा सा एक भ्रष्टाचार का मामला सामने आता है और उसको कुछ घंटों के अंदर मंत्री पद से हटा दिया जाता है। दूसरा मामला ये है कि सारे तथ्य, अलग-अलग कमेटियों की रिपोर्ट सामने हैं, फिर भी बेशर्मी की हद हो रही है कि प्रधानमंत्री जी खुद उसको टिप्पणी देकर सपोर्ट कर रहे हैं। अब ईमानदारी पर काम करने वालों के ऊपर अध्यक्ष जी, सीबीआई के छापे पड़ रहे हैं, एसीबी द्वारा फर्जी एफआईआर करवाई जा रही है, मान-हानि के मुकदमें करके डराने की कोशिश की जा रही है। अध्यक्ष जी, मैं इस सदन के माध्यम से उन लोगों को बताना चाहता हूं कि देश की जनता जाग चुकी है, अब आपके इन छापों से, इन सीबीआई के छापों से, ये मान-हानि के केसिज से कोई डरने वाला नहीं है और देश की जनता का, अगर ये मैसेज आप नहीं समझ रहे दिल्ली चुनाव के बाद, बिहार चुनाव के बाद तो आप सोच लीजिए की देश की जनता ने अब संसद से उठाकर तिहाड़ जेल में भेजने में ज्यादा समय नहीं लगाना अगर आपको समझ नहीं आएंगी ये बात तो। वैसे तो डीडीसीए कंपनी एक्ट के तहत 1956 के एक्ट सैक्शन 25 के अंतर्गत, डीडीसीए एक प्राइवेट कंपनी के तौर पर रजिस्टर्ड है पर केरल हाई कोर्ट ने अध्यक्ष जी, साफ-साफ कहा है क्योंकि इसमें सारी सरकारी ग्रांट यूज होती है क्रिकेट एसोसिएशन में that office bearer of Cricket Assoication will be treated as a Public Servant for the purpose of Prevention of Corruption Act and can be treated under it. तो मैं अंत में उपमुख्यमंत्री जी द्वारा जो प्रस्ताव पेश किया गया है कि इसकी एक जांच आयोग अधिनियम, 1952 की धारा 3 के अंतर्गत कमेटी बननी चाहिए, इस प्रस्ताव

का पूरी तरह समर्थन करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद, अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय : नितिन त्यागी जी।

श्री नितिन त्यागी : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, आपने इस विषय पर बोलने का मौका दिया। माननीय उप-मुख्यमंत्री जी ने ये प्रस्ताव लाकर एक बात सोचने पर मजबूर किया कि हमारे उप-मुख्यमंत्री जी जो एजुकेशन मिनिस्टर भी हैं और अक्सर अध्यापकों से और प्रधानाचार्यों से मिलते रहते होंगे तो पता भी चलता होगा कि क्लास का जो सबसे शैतान बच्चा होता है, अक्सर उसे मॉनीटर बना देते हैं। मैं उनसे अनुरोध करूंगा कि इस प्रथा को रोकने की कोशिश करें, प्रैक्टीस को रोकने की कोशिश करें, प्रैक्टीस थोड़ी आगे पहुंच गई है। आजकल जो कम पढ़े-लिखे होते हैं, पढ़ाई के बारे में, अपनी पढ़ाई के बारे में झूठ बोल देते हैं, उन्हें शिक्षा मंत्री बना दिया जाता है। जो भ्रष्टाचार में लिप्त पाए जाते हैं, वो वित्त मंत्री है, देश का पैसा खा रहे हैं, जनता का पैसा खा रहे हैं और वित्त मंत्री बन गए हैं। नाम नहीं बता पाऊंगा, सॉरी कुछ ब्रूसली से मिलता हुआ है। ये उदाहरण बड़े अटपटे हैं, इन्हें आगे प्रस्तुत भी नहीं करना चाहिए, लोगों पर बड़ा गलत इम्प्रेशन पड़ता है मैं बताना चाहूंगा। डेढ़ साल पहले पूरे देश की जनता ने बहुत विश्वास के साथ, बहुत विश्वास, बहुत उम्मीदों के साथ मैं और एक परिवर्तन के लिए, अच्छे दिनों के लिए एक सरकार को चुना, एक फीलिंग होती है, सर एक ना इंगलिश में सेइंग होती है de-ja-vu एक वैसी एक फीलिंग पूरे के पूरे देश में आ गई है। de-ja-vu का मतलब बता देना चाहूंगा विजेन्द्र जी, खासकर के आपको। de-ja-vu का मतलब क्या होता है? ये ऐसा महसूस करना कि जो हो रहा है वो मेरे साथ पहले किसी काल में या किसी काल या किसी और के काल में हो चुका है। तो जैसा भ्रष्टाचार चल रहा था पहले, जिसके खिलाफ सब लोगों ने वोट किया था, बड़ी उम्मीदों के साथ किया था

इस केंद्र सरकार को, वैसा ही आज भी चल रहा है। 25 करोड़ की लागत से बने स्टेडियम में सवा सौ करोड़ रूपए आप ठीक कराने में लगा देते हैं। आप डीडीसीए के अध्यक्ष है, आप कह सकते हैं कि ये भ्रष्टाचार नहीं है, ये इररेगुलेटिज हैं। मान लेते हैं, ये मान लेते हैं कि आपने जो कहा वो सही है, ये भ्रष्टाचार नहीं है इररेगुलेटिज हैं। तो आप भी मान लीजिए कि आप नालायक हैं, लायक होते तो रोक लेते और चलिए आप लायक नहीं हैं तो कम से कम जिम्मेदार तो बन जाइये। अपनी इस नालायकी की जिम्मेदारी को उठाइये और त्यागपत्र दे दीजिए, नहीं वो भी नहीं होगा। इस देश के लोगों का किसी भी तरीके से कोई भी भला ना हो जाए। पंजाब के लोगों ने कोशिश की थी, बहुत समझदार है, बहुत मेहतनी लोग होते हैं पंजाब के। इतनी बड़ी लहर में, इतनी बड़ी लहर में भी हरा दिया, नहीं जीत पाए। शायद उन लोगों को आपकी असलियत पता थी, नहीं जीत पाए। बहुत से बेनाम लोग जीत गए, उनका नाम हो गया पर आप फिर भी नहीं जीत पाए, पर पता नहीं ऐसी क्या मजबूरी पड़ी कि फिर भी देश की जनता पर आपको थोप दिया गया। ये पार्टी में सोच का वैक्यूम है या सोचने वालों का वैक्यूम है, ये समझ में नहीं आता। इन्हीं की पार्टी के कुछ लोग आज बहुत जोर-जोर से चिल्ला रहे हैं फाउल-फाउल। बहुत गलत इन्होंने किया है। इन्हीं के ऊपर उंगली उठा रहे हैं पर क्या प्रधानमंत्री जी इसको संज्ञान में नहीं ले पा रहे, हो सकता है अगले भारत दौरे पर इसके संज्ञान में ले ले। केंद्र सरकार की मैं एक चीज में हमेशा दाद देता हूं कि वो कुछ करे ना करे, खुद कुछ काम करे ना करे और जो काम कर रहे हैं, काम करने वाले हैं, उन्हें करने दें, ना करने दे पर इमैज बिल्डिंग बहुत अच्छी करते हैं। उनकी इमैज भी इन्होंने खराब करके रख दी। किसी भी तरीके की कोई इमैज ही नहीं छोड़ी। मैं प्रधानमंत्री जी से कहना चाहूंगा कि सर, 'हर शाख पे उल्लू बैठा है, अनजामे गुलिस्ताँ क्या होगा

बर्बादे गुलिस्ता करने को, बस एक ही उल्लू काफी है।'

ये एक और उन्होंने कहा, आज ही क्या है कि जो है he will pass with flying colours जगदीप जी ऐसे ही कुछ कहा था he will pas with flying colours, he will also pass with flying colours पर मेरे को लगा ये flying colours जो है वो रंग उड़ने को भी कहते हैं, उड़ते हुए रंग। तो रंग तो आपने उड़ा दिए हैं, पूरी पार्टी के उड़ा दिए। सीबीआई की रेड मत पड़वाओ। हम लोग आंदोलन के मतवाले हैं, इससे डराने की कोशिश मत करो। मैं सर, पूरे दिल से इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और इस पर जल्द से जल्द जांच होनी चाहिए, इसका रिजल्ट आना चाहिए सामने और जिन लोगों को शर्म नहीं आती, उन्हें शर्म लाने की थोड़ी प्रैक्टीस करनी चाहिए। कोशिश करे, अपने अंदर के इंसान को जगाए तो बेहतर हिंदुस्तान हम लोग साथ मिलकर बना पाएंगे।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद, राखी बिड़ला जी।

सुश्री राखी बिड़ला : धन्यवाद, अध्यक्ष जी, आपने मुझे इतने महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष जी, पहले में, सबसे पहले मैं सदन के माध्यम से बीजेपी को बधाई देना चाहती हूं, नहीं बीजेपी का तो नाम लेंगे क्योंकि मात्र 19 महीनों के अंदर कड़ी मेहनत के साथ बीजेपी ने अपना खुद का कल्माडी ढूंढ लिया, ये बहुत बड़ी बात है। तो बेहद दिल की गहराईयों से इन्हें मैं बधाई देना चाहती हूं, मुबारकबाद देना चाहती हूं कि जिस प्रकार से इन्होंने अपना कमाऊ पूत ढूंढा, जो कांग्रेस का कमाऊ पूत था, जब सीडब्ल्यूजी का घोटाला सामने आया तो बीजेपी उसकी बदोलत ही सत्ता में आई क्योंकि कल्माड़ी जी सामने आ गए थे कांग्रेस के और आज डीडीसीए को क्रिकेट का सीडब्ल्यूजी बना दिया तो मुबारक है आप लोगों कि आप लोगों को खुद का

कल्माड़ी मिला। जिस प्रकार से कामन वैल्थ गेम्स के दौरान स्टेडियम के नाम पर, खिलाड़ियों के नाम पर, अन्य सुविधाओं के नाम पर सरकारी खजाने की बंदर-बांट कांग्रेस ने की, ठीक उसी प्रकार डीडीसीए के अंदर दिल्ली डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के अंदर डीडीसीए ने लगातार घपले की परतें चढ़ाई, भ्रष्टाचार की परतें चढ़ाई और क्रिकेट का एक और नया आयाम लिखा सीडब्ल्यूजी वहां पर गठित हुआ। अध्यक्ष जी, अब केंद्र सरकार की ओर से आज आ रहा है कि डीडीसीए में हो रही लगातार अनियमितताओं और घोटाले जो है वो दिल्ली सरकार अपने कुकर्म या अपनी हरकतों को छुपाने के लिए कर रहा है जो कि बेहद ही शर्मनाक है। डीडीसीए की जो ये घटना है, जो इसका भ्रष्टाचार है वो पहली बार कोई दिल्ली की सरकार के द्वारा नहीं उठाया गया। इससे पहले भी डीडीसीए के भ्रष्टाचार को, इसमें हो रही अनियमितताओं, के खिलाफ बहुत सारे लोगों ने आवाज बुलंद की और उसमें खुद बीजेपी के एक सांसद का नाम कल से और बहुत सालों से मीडिया पर और उसके पत्र जो है माननीय कीर्ति आजाद के पत्र आपके पटल पर भी रखे गये हैं। लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि क्यूं केंद्र सरकार इस तरह की घिनौनी हरकत को छुपाने की कोशिश कर रही है? लेकिन जब भी इसके खिलाफ आवाज उठाई गई तो हमेशा बोला गया कि डीडीसीए एक प्राइवेट फर्म हे। इसके खिलाफ केंद्र सरकार वो कार्रवाई नहीं कर सकता, जो करनी चाहिए लेकिन में धन्यवाद देना चाहती हूं माननीय सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के उस फेसले को जिस पर उन्होंने साफ रूप से ये कहा कि जब डीडीसीए केंद्र सरकार से करोड़ों रूपए लेकर, डीडीसीए के विकास और खिलाड़ियों के विकास का हक रखती है तो ये प्राइवेट फर्म ना होकर एक सरकारी फर्म है और इसकी जिम्मेदारी बनती है और दिल्ली कि सरकार अगर इसके खिलाफ कोई कार्रवाई करती है तो उन्हें पुख्ता सबूत पेश कराए जाएं। लेकिन हर बार

इसे नजरअंदाज किया गया। डीडीसीए का घोटाला पहली बार दिल्ली सरकार ने नहीं उठाया। आज से पहले इसमें व्याप्त घोटाले की जांच के लिए तीन जांच आयोग बनाए गए। पहला जांच आयोग जो बना वो एसएफआईओ का बना, Serious fraud Investigation Officer का। इस पहली जांच में ये पाया गया कि डीडीसीए के अंदर पर्याप्त, कहें तो बिल्कुल डीडीसीए की गहराइयों तक घोटाले चरम सीमा पर हैं। यहां पर डीडीसीए को कोई सपोर्ट करने वाला नहीं मिला, उनकी आवाज दबा दी गई। फिर खुद डीडीसीए ने एक प्रैशर में आकर कि उनकी जितनी भी गर्वनिंग बॉडी के सदस्य हैं, उन्होंने जब इसके खिलाफ आवाज बुलंद की तो डीडीसीए ने खुद एक फैक्ट फाइडिंग कमेटी बनाई और उस फैक्ट फाइडिंग कमेटी की भी रिपोर्ट ये कहती है कि लगातार डीडीसीए के अंदर घोटाले होते आए हें। जब यहां पर भी किस्सा नहीं थमा, यहां पर भी इन लोगों की आवाज दबा दी गई तो तीस हजारी कोर्ट का एक फैसला आया जिसमें तीस हजारी कोर्ट ने दो रिटायर्ड जजों की एक कमेटी का गठन किया क्योंकि यहां पर ना सिर्फ खिलाड़ियों के चयन के लिए भ्रष्टाचार होता था बल्कि जब इलैक्शन इस कमेटी का होता था, डीडीसीए का इलैक्शन होता था तब भी पर्याप्त तौर पर धांधलेबाजी पाई जाती थी। तो डीडीसीए के इलैक्शन की जो जिम्मेदारी सौंपी गई वो तीस हजारी कोर्ट के मार्गदर्शन में बनी कमेटी के अंतर्गत सौंपी गई फिर भी इस आवाज को दबा दिया गया, कभी इसको सामने नहीं आने दिया गया। लगातार कहा जा रहा है कि डीडीसीए के अंदर कोई घोटाला नहीं हुआ, अपने मुद्दे से भटकाने के लिए दिल्ली सरकार इस तरह के काम कर रही है। तो हम पूछना चाहते हैं कि 1999 से लेकर 2013 तक लगातार डीडीसीए के अध्यक्ष रहे माननीय वित्त मंत्री साहब देश के कि एक अगरबत्ती बनाने वाली कंपनी से अगर हम इतना बड़ा स्टेडियम बनवा लेंगे, जिसको कंस्ट्रक्शन का कोई ज्ञान नहीं, जिसको आर्किटेक्ट

का कोई ज्ञान नहीं है, जिसके पास कोई लाइसेंस नहीं, जिसके पास कोई एक्सपीरियंस नहीं, ये घोटाला नहीं तो और क्या है?

पूजा की थाली, ये देश भारत देश एक ऐसा देश है जहां पर देवी-देवताओं को पूजा जाता है। संस्कृति, देखिए हमारा इतिहास देखे तो भगवान के लिए हम क्या-क्या करते हैं और यहां पर इन लोगों ने भगवान के नाम भी भ्रष्टाचार किया और पूजा की थाली पांच-पांच हजार रूपए में इन लोगों ने खरीदी। ये बहुत शर्मनाक है, भगवान दिखावे से खुश नहीं होता, भगवान आपके कर्मों से खुश होता है और आपके तो कर्म ही इतने गंदे हैं कि भगवान को शर्म आ रही है। आप लोगों ने तो राम का नाम बेच खाया और आज उसी राम के नाम की पूजा की थाली भी आप पांच-पांच हजार रूपए के बेचते हैं, ये बेहद शर्म की बात है।

इसके अलावा चालीस हजार का जो लैपटाप हम लोग खरीद सकते हैं, उस लैपटोप का प्रतिदिन का किराया इन लोगों ने 16-16 हजार रूपए दिया, बेहद ही शर्म का विषय है। और ये कहते हैं कि हमने घोटाला नहीं किया। अगर ये घोटाला नहीं है तो और क्या है? आप अगर घर की साग-सब्जी भी आपकी धर्मपत्नी, आपकी माताएं-बहनें ले जाती होंगी तो 20 रूपए किलो कि पालक को या तो 18 रूपए या 17 रूपए में खरीदती होगी और यहां पर चालीस हजार के लैपटाप के लिए इन्होंने 16-16 हजार रूपए प्रतिदिन का किराया दिया और कहते हें हमने घोटाला नहीं किया। बेहद शर्म की बात है। इसी प्रकार से माननीय अध्यक्ष जी, स्टेडियम बनाने से लेकर गर्वनिंग बॉडी के इलैक्शन तक जिस-जिस चीज की भी जरूरत पड़ी इस बॉडी को, डीडीसीए को कभी भी टेंडरिंग प्रोसेस

को नहीं अपनाया गया और कहते हैं हमने घोटाला नहीं किया। अगर ये घोटाला नहीं है तो और क्या है? आपने टेंडरिंग प्रोसेस अपनाया नहीं, मन मिले का मेला हुआ और जिसको मन चाहा, उसको आपने टेंडर दे दिया। औने-पौने दामों पर। और कहते हैं कि हमने घोटाला नहीं किया।

इसी प्रकार से दस रूपए की चीज को हजार रूपए का खरीदा, डेढ़ हजार रूपए का खरीदा और फर्जी बिल बनवाकर, बिल पास करवाए गए और कहते हें कि हमने घोटाला नहीं किया।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपको बताना चाहती हूं कि केंद्र सरकार लोगों को भ्रमित कर रही है दिल्ली की जनता को, देश की जनता को और कहती हैं कि माननीय वित्त मंत्री हमारे पाक साफ है और अपने प्रधान सचिव को बचाने के लिए दिल्ली सरकार ऐसा काम कर रही है। तो मैं बता दूं इस सदन के माध्यम से, मीडिया भी जानती है और हम सब लोग जानते हैं दिल्ली सरकार एक ऐसी सरकार है, दिल्ली का मुख्यमंत्री वो मुख्यमंत्री है जिसको महज 12 घंटे पहले अपने मंत्री की काली करतूतों का पता चला और उसने आन एयर प्रैस कांफ्रेस में अपने मंत्री को बर्खास्त किया। ऐसा इतिहास में अगर कोई मुख्यमंत्री मुझे नहीं मिला और इस देश को तो बता सकते हैं, आन रिकार्ड है सब कुछ। ऐसी सरकार के ऊपर जो ये आरोप लगा रहे हैं अगर हमारे प्रधान सचिव गलत हैं, अगर हमारे प्रधान सचिव भ्रष्टाचारी है, अगर मैं भ्रष्टाचारी हूं, हमारे सदन का कोई भी साथी भ्रष्टाचारी है तो हम पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई हो, हमें फांसी पर लटका दिया जाए, सूली पर टांग दिया जाए। लेकिन किसी मुख्यमंत्री का इस तरह से दफ्तर हथियाने की कोशिश करेंगे, उसके अधिकारों को नष्ट करने की कोशिश करेंगे तो ये देश की जनता, दिल्ली की जनता ये बर्दाश्त

नहीं करेगी। हम लोग माफ नहीं करेंगे। तो मैं आपको बता दूं कि केंद्र सरकार कही रही है कि ये अपने प्रधान सचिव को पाक साफ दिखाने के लिए ऐसी हरकतें कर रहे हैं। लेकिन माननीय अध्यक्ष साहब, ये पुख्ता जानकारी है और हमारे पास वो लैटर है, ये पड़े वो लैटर, केंद्र सरकार की सपोर्ट मिनिस्ट्री ने दिल्ली सरकार को लिखकर इस बात का संज्ञान दिया था कि डीडीसीए में हो रहे घोटाले की वो जांच करे और उसके खिलाफ अगर सबूत पाए जाते हैं तो जांच आयोग का गठन किया जाए और जब ये जांच अपनी चरम पर पहुंची, जब ये जांच अपनी अंतिम दिशा पर पहुंची तो इस जांच के तथ्यों से ये साफ हो चुका था कि डीडीसीए के इस महाघोटाले के अंदर इस देश के माननीय वित्त मंत्री पर गाज गिरनी तय है। फिर क्या था पीएमओ से लेकर बीजेपी के हर छोटी-बड़ी दफ्तर के अंदर हलचल मच गई।

छोटे-बड़े हर दफ्तर के अंदर हलचल मच गई इन सबूतों को किस तरह से हथियाया जाए तो पीएमओ में बैठकर माननीय प्रधानमंत्री के आवास पर बैठकर एक पूरा का पूरा ड्रामा रचा गया। उस षड्यंत्र में क्या था कि माननीय सीएम के दफ्तर पर छापा डाला जाएगा, वो 15 दिसम्बर का दिन इस देश के लोकतंत्र के लिए, इस देश के लिए काला दिन है। बेहद शर्म आती है हमें ये सोचते हुए कि इस लोकतंत्र में जहां एक चुना हुआ मुख्यमंत्री इस दिल्ली के ओर इस देश के विकास के लिए है और वहां पर ये सीबीआई की रेड डलवाते हैं और इन्हें सीबीआई की रेड में और कुछ नहीं चाहिए था। चाहिए था तो सिर्फ और सिर्फ डीडीसीए की फाइलें जिन पर सीधे तौर से हमारे देश के वित्त मंत्री दोषी करार हो रहे थे, भ्रष्टाचारी पाए जा रहे थे और क्या किया उस सीबीआई ने? केंद्र सरकार के उस तोते ने वो सारी की सारी फाइलें ली और माननीय प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री जी के सामने जाकर रख दी और सबूतों पर भी जांच

चल रही है कि किस प्रकार से माननीय वित्त मंत्री जी को पाक साफ किया जाए, मैं अपनी बातों को खत्म करते हुए माननीय अध्यक्ष साहब आपके सामने दो-तीन बहुत अहम बिंदु रखना चाहती हूं कि जिस पार्टी का अध्यक्ष तड़ीपार हो और जिस पार्टी का प्रधानमंत्री के हाथ खून में रंगे हो हम उनसे कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि वे लोगों का, देश हित के बारे में सोच सकते हैं, हम कैसे उनसे ईमानदारी की उम्मीद कर सकते हैं माननीय अध्यक्ष साहब मैं बार-बार कहूंगी जिस पार्टी का अध्यक्ष तड़ी पार हो और जो प्रधानमंत्री के हाथ खून से रंगे हों हम उनसे किस प्रकार से ईमानदारी और न्याय की उम्मीद कर सकते हैं ऐसे लोगों से तो सिर्फ हम गुड़ागर्दी की उम्मीद कर सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय : कन्कलुड करिये राखी जी।

सुश्री राखी बिड़ला : ये लोग गुंडागर्दी कर रहे हैं लोकतंत्र में गुंडागर्दी है, लोकतंत्र की हत्या है।

अध्यक्ष महोदय : कन्कलूड करिये राखी जी आप, बैठिए प्लीज।

सुश्री राखी बिड़ला : ये गुंडागर्दी है ये हम नहीं होने देंगे। एक चुने हुए मुख्यमंत्री के अगर....व्यवधान....सारे आधार हैं 2002 गुजरात

अध्यक्ष महोदय : राखी जी, मैं बार-बार कह रहा हूं, आपकी बात पूरी हो गई है।

सुश्री राखी बिड़ला : बहुत-बहुत धन्यवाद आपने इतने महत्वपूर्ण विषय पर मुझे बोलने का मौका दिया और माननीय उप मुख्यमंत्री साहब ने जो प्रस्ताव आप लोगों के सामने रखा है, मैं उसका दिल से समर्थन करती हूं और उसको पास होना चाहिए। जय हिंद-जय भारत।

अध्यक्ष महोदय : अमानतुल्लाह जी। अमानतुल्लाह जी जरा संक्षेप में रखिएगा। प्लीज।

श्री अमानतुल्लाह खान : अध्यक्ष जी मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहूंगा कि आपने इस मौके पर बोलने की इजाजत दी। मैं आज सुबह लोगों से मिलने के लिए बैठा था तो वहां एक शख्स आया मेरे पास आया कुछ लोग थे उसके साथ में, उसने कहा कि आप xxx[1] अध्यक्ष जी मैं तो एक बात कह रहा हूं, एक शख्स कह रहा था मुझसे।

अध्यक्ष महोदय : नहीं आप नाम कोट मत कीजिए प्लीज।

श्री अमानतुल्लाह खान : उसने कहा कि आपकी विधान सभा में जो अपोजिशन के लीडर हैं, बीजेपी के विजेन्द्र गुप्ता जी उनकी भी जांच करा दो क्योंकि जब ये बीजेपी के दिल्ली प्रदेश के सदर के अध्यक्ष थे तो मैं उस वक्त बीजेपी में था इनके पास में टिकट मांगने गया था।xxx

अध्यक्ष महोदय : हटा दीजिए ये, मैंने बोल दिया है ये। भई अमानतुल्लाह जी हम विषय को थोड़ा-सा मैंने बोल दिया हटा दीजिए। अमानतुल्लाह जी आज का विषय है।

श्री अमानतुल्लाह खान : जो काम 24 करोड़ में ईपीआईएल नाम की कंपनी को जो काम 24 करोड़ में करना था उसने वो काम उसको जो पेमैंट हुई वो 57 करोड़ की हुई टोटल ये काम जहां 24 करोड़ में होना था वो 114 करोड़ में हुआ, 90 करोड़ का हिसाब कहां है और जिस कंपनी को 24 करोड़ में करना था, उसको पेमैंट 57 करोड़ की हुई बाकी 57 करोड़ कहां गया इसका

(××× चिन्हित अंश अध्यक्ष महोदय के आदेश से कार्यवाही से निकाले गए।)

कुछ नहीं पता। दूसरा 14 कंपनी ऐसी थी जिनके एड्रस फर्जी थे और उनके पास जब उन कंपनियों के एड्रस मिले वहीं पर वो कंपनियां मिली तो उन्होंने डीडीसीए से कोई लेन-देन नहीं किया। दूसरा दो कंपनियों को ऐसे काम के लिए पेमैंट मिली जो काम पहले से किया जा चुका था। अब हम ये पूछना चाहते हैं जिस वित्त मंत्री की 2006 में टोटल जो प्रोपर्टी थी 26 करोड़ थी, 2012 में वो 170 करोड़ कैसे हो गई ये एक विषय है और जो घोटाला है वो भी तकरीबन 90 करोड़ के आसपास है और इनकी जो प्रोपर्टी है, उसमें इजाफा भी तकरीबन 90 करोड़ के आसपास है और ऐसे आदमी को वित्त मंत्री बनाना बड़े अफसोस की बात है कि जिसके बारे में पहले से ये है कि वो तो भ्रष्टाचार में लगा हुआ है और ऐसे आदमी को इलेक्शन हारने के बाद नरेंद्र मोदी जी ने वित्त मंत्री बनाया ये बात हमारी भी समझ में नहीं आई। दूसरी बात ये की मैं ये पूछना चाहता हूं कि 20 हजार रूपये पेमैंट या उससे ज्यादा कई बार की और कैश में की जो की गैर कानूनी है इसकी भी जांच होनी चाहिए दूसरा एक 21 सैंचूरी मीडिया कॉर्पोरेशन ये ग्रुप है, इसने जो कॉरपोरेट बॉक्स, 10 बॉक्स इनको दिए गये इनसे इनका क्या रितश है ये भी सामने आना चाहिए दूसरा आज जिस तरह नरेंद्र मोदी जी ने मुल्क के प्रधानमंत्री कहूंगा। प्रधानमंत्री ने आज पार्लियामेंट में कहा कि भई, हम इनको सपोर्ट किया और कहा कि इनको हम निकाल लाएंगे जिस तरह से आडवाणी जी को निकाला, जब आडवाणी जी पर एल्जाम लगा था तो उन्होंने इस्तीफा दे दिया था और उस वक्त तक वो सरकार में नहीं आए थे, जब तक की उनको क्लीन चिट नहीं मिली। तो हम ये पूछना चाहते हैं कि क्या वित्त मंत्री जिस तरह से नरेंद्र मोदी जी ने कहा कि आडवाणी

जी जिस तरह साफ सुथरे निकल कर आए थे उसी तरह से ये निकल कर आएंगे तो उन्होंने उस वक्त में इस्तीफा दे दिया था तो क्या xxx

अध्यक्ष महोदय : भई अमानतुल्लाह खान जी हम अपने विषय को रखिए प्लीज, हम अपने....व्यवधान....विजेंद्र जी मैं रोक रहा हूं ना, मुझसे बात करिए, मैं खुद रोक रहा हूं। अमानतुल्लाह जी प्लीज मैं बार-बार सदन का माहौल खराब होता है। xxx

अध्यक्ष महोदय : xxx हटा दीजिए।

श्री अमानतुल्लाह खान : आज ये लोग उनको ना इस्तीफा देने पर मजबूर कर रहे हैं, ना हटा रहे हैं तो हम ये पूछना चाहते हैं ये कौन से अच्छे दिन है जिनका इन लोगों ने हिन्दुस्तान के लोगों से वायदा किया था? ये कौन-से अच्छे दिन की ये बात करते थे? कौन सा भ्रष्टाचार मुक्त भारतीय की ये बात करते थे? आज उनको साथ में लिए बैठे हैं। शर्म आती है मुझे ऐसे प्रधानमंत्री पर जो एक भ्रष्टाचारी को सपोर्ट कर रहा है, खुले आम सपोर्ट कर रहा है और मिसालें देकर कह रहा है कि हम इसको निकाल लाएंगे जिस तरह से आडवाणी जी निकल कर आए थे अरे शर्म करो, आडवाणी जी ने तो इस्तीफा दे दिया था और उन्होंने उस वक्त तक ज्वाइन नहीं किया था जब तक कि ये साबित नहीं हुआ कि ये क्लीन चिट इनको नहीं मिली थी। ये तो बड़े शर्म और अफसोस की बात है कि आप इस मुल्क से भ्रष्टाचार खत्म करने की बात करते हो। ऐसे आदमी जिसने 90 करोड़ रूपये का, 90 करोड़ साबित हो रहा है, कि जिसने 90 करोड़ का जिसने भ्रष्टाचार किया हो आप उसको अपनी बगल में लिए बैठे

(××× चिह्नित अंश अध्यक्ष महोदय के आदेश से कार्यवाही से निकाले गए।)

हो उसको सपोर्ट कर रहे हो बड़े अफसोस की बात है। मैं इन्हीं बातों के साथ अपनी बात को खत्म करता हूं और इसको पूरी तरह से इसको सपोर्ट करता हूं शुक्रिया।

अध्यक्ष महोदय : सौरभ भारद्वाज जी।

श्री सौरभ भारद्वाज : अध्यक्ष जी बहुत धन्यवाद आपने मुझे बोलने का मौका दिया। डीडीसीए का मुद्दा है जिसका फुल फॉर्म है दिल्ली डिस्ट्रीक्ट क्रिकेट एसोसिएशन। मैं गूगल में सर्च कर रहा था कि माननीय वित्त मंत्री का नाम और क्रिकेट तो बार-बार ब्रेट ली का नाम आ रहा था, कभी गूगली का नाम आ रहा था, पर उनका नाम क्रिकेट से एसोसिएटिड कहीं पे भी मुझे नहीं मिला। मैंने कुछ लोगों से भी पता किया क्या माननीय वित्त मंत्री बचपन में क्रिकेट खेला करते थे? तो मुझे किसी से जवाब नहीं मिला कि उन्होंने कभी भी क्रिकेट खेला हो। तो पहली बात तो मैं ये नहीं समझ पाया कि जब माननीय वित्त मंत्री महान वित्त मंत्री कभी क्रिकेट खेला ही नहीं करते थे तो वो 14 साल से क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष क्यों बने हुए थे। उनको वहां से क्या लालच था, उनको उसके अंदर क्या इंट्रस्ट था और ऐसे खेल को वो क्या बढ़ावा दे रहे थे? और देखिए अब अरविंद केजरीवाल हैं या मनीष सिसोदिया हैं थोड़े फिट दिखते हैं अगर कहें हम क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष हैं तो कोई मानेगा भी, अब यहां मोदी जी अच्छे खासे हट्टे कट्टे थे, अमित शाह जी अच्छी सेहत है वो भी क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे हैं, वो क्या क्रिकेट खेला करते थे, वो गुजरात क्रिकेट ऐसोसिएशन के अध्यक्ष क्यों थे, क्या कारण था? क्रिकेट के प्लेयर तो थे नहीं। तो हम लोगों को इस बात पर सोचना चाहिए और सब लोगों को इस बारे में चिंतन करना चाहिए कि क्या कारण है कि इतने सारे

क्रिकेटर्स होने के बावजूद भी ये राजनीतिक लोग क्रिकेट एसोसिएशन्स के ऊपर कब्जा करके बैठ जाते हैं ऐसी क्या स्वार्थों की सिद्धि इसके अंदर होती है और दूसरी बात ये है कि राजनीतिक दलों के बीच में एक-दूसरे के ऊपर आरोप-प्रत्यारोप हमेशा से लगते रहे हैं और इसी तरीके की राजनीतिक होती है क्योंकि जब कोई सत्ता धारी दल होता है तो सीबीआई उसके पास होती है, ईडी उसके पास होता है, बाकि जितनी भी इंफोर्समैंट एजेंसीज हैं, उसके पास होती हैं दिल्ली पुलिस उसके पास होती है, तो जांच तो उसकी होती नहीं है। तो जांच आप कराएंगे नहीं, साबित आप कुछ होने देंगे नहीं और अगर कोई बोलेगा तो आप उसके ऊपर डिफेमेशन का केस लगा देंगे। तो ये तो एक तरह की दादागिरी हो गई फिर तो आप ये कह रहे हैं कि आप जिसके पास पैसा है, जिसके पास कोर्ट के अंदर खड़े करने के लिए बड़े-बड़े वकील हैं, जिसके पास 10 करोड़ का दावा करने के लिए स्टैंप ड्यूटी भी 10 लाख रूपये देनी पड़ती है, जो बड़े-बड़े लोग हैं, अमीर लोग हैं, सत्ताधारी लोग हैं, वो बड़े-बड़े वकीलों को इस्तेमाल करके कोर्ट फी सबके मुंह पर ताले लगा देंगे। सबके मुंह पे डेफेमेशन का चार्ज लगा देंगे ये तो बहुत गलत बात है और मुझे लगता है कि पूरे के पूरे राजनीतिक लोगों को, पूरे के पूरे हमारे समाज को इसके बारे में सोचना चाहिए कि क्या इस तरीके की सोच बात-बात पे डेफेमेशन केस करना ठीक है या नहीं? मैं याद दिलाना चाहूंगा हमारे प्रधानमंत्री ने हमारे मुख्यमंत्री को नक्सली कहा। उनको ए. के. 49 कहा, उनको पाकिस्तान का एजेंट कहा और पता नहीं क्या-क्या कहा। कोई भी वकील, कोई भी कानून का ज्ञाता ये कह देगा कि ये सारी की सारी चीजें क्रिमिनल डेफेमेशन को एट्रैक्ट करती हैं। अभी बिहार गए थे। उन्होंने वहां के मुख्यमंत्री के डीएनए पर सवाल उठा दिया। किसी ओर नेता को

उन्होंने कह दिया। एक पूरी की पूरी कौम थी, जिसके बारे में वो कहते थे हम दो हमारे पच्चीस उसके अंदर तो उस पूरी कौम के करोड़ लोगों को मुझे लगता है उनके ऊपर क्रिमिनल डेफेमेशन कर देना चाहिए था मगर अब तक हमारे सामाजिक लोगों में या राजनैतिक लोगों में एक सोच थी कि भई, इन चीजों को ये जो एक-दूसरे के ऊपर पॉलिटिकल आरोप होंगे, उनको हम पॉलिटिकली ही सैटल करेंगे। मगर मुझ लगता है कि आज से या मान लीजिए कल से जब वित्त मंत्री ने ये काम किया है भाजपा कहीं न कहीं सैद्धांतिक रूप से ये मान रही है कि आज के बाद वो कोई प्रैस कान्फ्रेंस नहीं करेंगे किसी के ऊपर कोई आरोप नहीं लगाएंगे। जब तक कि वो कोर्ट से सिद्ध ना हो वर्ना आप अपने सिद्धान्त से पीछे हट रहे हैं, वर्ना आप ये कह रहे हैं कि हम किसी के ऊपर आरोप लगाएं तो वो ठीक है, मगर कोई ओर आरोप पर आरोप लगाएगा तो हम उसके अंदर डेफेमेशन का केस दायर कर देंगे उसके ऊपर क्रिमिनल केस ले आएंगे, उसके ऊपर क्रिमिनल केस ले आएंगे। उसको 10 करोड़ रूपये लेके डराएंगे। अब बताइये राघव चड्ढा की तो शादी भी नहीं हुई वो बेचारा 10 करोड़ रूपये कहां से लाएगा? तो हमारे बेचारे गरीब लोग उनके ऊपर आप 10 करोड़ रूपये का दावा लगा के आप उनको डरा रहे हैं। ये तो बहुत गलत बात है।

अब मैं डीडीसीए पर आता हूं देखिए किसी भी संस्था का एक मैकेनिजम होता है उसके अंदर अध्यक्ष की एक भूमिका होती है। उसका अगर प्रेजिडैंट है चाहे किसी भी कमिशन का प्रेजिडैंट है, किसी कम्पनी का प्रेजिडैंट है, किसी भी आर्गनाइजेशन का प्रेजिडैंट है। तो प्रेजिडैंट का मतलब ये है कि वो उसका लीडर है, उसकी लीडरशिप है वो उस जगह का नेता है और उसके कंट्रोल में पूरी की पूरी ओर्गेनाइजेशन चल रही है। अब वित्त मंत्री जी वहां के लीडर रहे, नेता

रहे, प्रेजिडैंट रहे वो लगातार 1999 से लेकर 2013 दिसम्बर तक वो 14 साल तक उसके प्रेजिडैंट रहे। तीन अलग-अलग कमिशनों ने सबसे पहले एसएफआईओ ने ये कहा कि इसके अंदर फाइनेन्शियल इररेगुलेरिटिज हो रही हैं, ठेके जिस तरह से दिए जाने चाहिए, उसके अंदर नॉमिनेशन की प्रक्रिया का इस्तेमाल किया जा रहा है, बहुत सारी इररेगुलेरिटिज हैं, उसके बाद डीडीसीए की fact findings कमेटी ने भी ये कहा कि करोड़ों की घपलेबाजी हो रही है, हेराफेरी हो रही है, फर्जीवाड़ा हो रहा है। उसके बाद दो रिटायर्ड जजों की कमेटी ने वहां पर इलैक्शन कराया और उसके अंदर भी ये कहा गया कि जो क्लब्स हैं, ये प्रोक्सी के रूप में काम करते हैं कई-कई क्लब्स एक ही एड्रस के ऊपर रजिस्टर्ड हैं तो पूरे का पूरा जो election process है, उसको भी आपने मेन्युप्लेट किया हुआ है। इन तीनों की तीनों इंक्वायरीज में ये बात साफ हुई कि ये जो डीडीसीए था, उसमें घोर भ्रष्टाचार चल रहा है। जबरदस्त करोड़ों रूपये की हेराफेरी चल रही है। अब अगर उसके अध्यक्ष के पास मुझे लगता है कि ले देके एक ही डिफैंस बनता है कि वो ये कहे कि भई मुझे नहीं मालूम था कि नीचे के लोग गड़बड़ी कर रहे थे। मुझे मालूम नहीं चला। मगर आप ही के मैंबर ऑफ पार्लियामैंट, कीर्ति आजाद जी ने माइक पर बोलते हुए एजीएम की वीडियो सबके सामने सार्वजनिक कर दी है, 2011-12 की एन्युअल जनरल मीटिंग में कई सौ लोगों के सामने वो जेटली को कन्फ्रैंट कर रहे हैं और कह रहे हैं कि देखिए साहब करोड़ों रूपये की हेराफेरी हो रही है, धांधली हो रही है और आप कुछ नहीं कर रहे, वित्त मंत्री जी उनको चुप कराने की कोशिश कर रहे हैं। फिर उन्होंने कहा कि साहब मैंने पिछले साल भी यही सारे सवाल पूछे थे, आपने उनका जवाब भी मुझे अब तक नहीं दिया है। अब हमारा मुंह बंद कराना चाहते हैं और वित्त मंत्री जी उस बात को घुमा रहे हैं और किसी तरीके से उनको शांत कर रहे हैं और ये डिफेंस भी आपके सामने नहीं आ रही क्योंकि आपको मालूम नहीं था क्योंकि

आपका खुद का मैंबर ऑफ पार्लियामेंट आपको बार-बार बता रहे हैं ऑन रिकार्ड वीडियो पर ये बता रहे हैं कि धांधली चल रही हैं। तो मैं चाहूंगा कि भाजपा के प्रवक्ता जब टीवी पे आएं और यहां पे भी जो भाजपा के प्रवक्ता बोले या भाजपा की तरफ से नेता प्रतिपक्ष बोले तो मुझे लगता है कि बिल्कुल स्पेसिफिक एण्ड प्रेसाइजली इस चीज पे जरूर बात करें कि ये कैसे हो गया। ये चमत्कार कैसे हुआ कि करोड़ों रूपये की धांधली जब चल रही थी डीडीसीए में, उस दौरान 14 साल तक वित्त मंत्री उस जगह के अध्यक्ष थे।

ये जो पूरे का पूरा जो घोटाला हुआ मैं नाम नहीं ले रहा। अच्छा गुप्ता जी मैं नाम नहीं लूंगा बस। आज प्रधान जी कीर्ति आजाद से मिलने गए हैं क्या गुप्ता जी तो मैं ये कहना चहा रहा हूं कि जो इतना बड़ा घोटाला हुआ, मैं चाहूंगा नेता प्रतिपक्ष जब सदन के आगे अपनी बात रखें तो वो ये बात जरूर बताएं, स्पेसिफिक बताएं प्रेसाइज बताएं कि भई 14 साल तक एक समझदार आदमी, एक इतना बड़ा वकील जो कानून की बारीकियां जानता है, जो कंपनी लॉ पर मुझे लगता है कि उन्होंने पूरा का पूरा उंगलियों पर कंपनी एक्ट रटा हुआ है। उसके साथ ये घटना कैसे हो गयी कि 14 साल तक इतना बड़ा घोटाला चलता रहा और उनको इसके बारे में पता नहीं चला। अध्यक्ष जी, इसके बाद मैं आपको और भी बताऊं कि ये चालाकी यहीं पर नहीं रूकी। एक वकील थे मिस्टर चौधारी। जो डीडीसी को कई जगह रिप्रजेन्ट करते रहे। डीडीसीए के वकील थे। जब माननीय वित्त मंत्री, वित्त मंत्री बने उस दौरान उन वकीलों को, वकील साहब को कम्पनी लॉ बोर्ड मेम्बर बना दिया और इन्होंने सोचा कि बेवकूफ बनाने की एक और नई स्कीम बनायी जाये। इन्होंने सोचा कि ये सारी की सारी अनियमिततायें जो सामने आ चुकी हैं। एसएफआईओ ने भी कह दिया है, डीडीसीए ने भी कह

दिया कि भई आपने तो घपलेबाजी की है तो इस घपलेबाजी के अन्दर आपके ऊपर कोई क्रिमिनल चार्ज न लग सके या कल को कोई आपको कोर्ट न ले जा सके या हमेशा परमानेन्टली आप इस मामले को रफा दफा कर दो। इन्होंने कहा कि वो सारी की जो सारी अनियमिततायें हैं, उनको धीरे-धीरे लोक अदालत के अन्दर कम्पाउन्ड कराते रहें। कहने का मतलब ये कि आपने कोई जुर्म किया और आप वहां पर माफी मांग लो कि जी, मैंने किया। आपको कहा गया कि लाओ एक लाख रूपये जमा करो। आपने कहा कि जी, जमा किया। आपने कहा जी कि मैं अब बरी हो गया क्योंकि अदालत में गया। अदालत ने एक लाख रूपया जुर्माना लगाया। मैंने जुर्माना दे दिया और मैं बरी हो गया। मगर इस षड्यंत्र को भी मुझे लगता है कुछ लोग, कुछ व्हिसल ब्लोवर्स माननीय हाईकोर्ट की निगाह में ले आये और इसी महीने दिल्ली हाईकोर्ट ने उन सब कम्पाउन्डिंग वाली प्रोसीडिंग्स के ऊपर भी स्टे लगा दिया। तो अध्यक्ष जी, मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं। मैं आपको ये कहने की कोशिश कर रहा हूं कि पूरी की पूरी केन्द्र सरकार का पूरा का पूरा तन्त्र इस डीडीसीए के घोटाले को किसी न किसी तरीके से दबाने की कोशिश में लगा हुआ था और बहुत ही टेक्नीकली, बहुत ही लीगली इस चीज को वो दबा रहे थे। अगर आज डीडीसीए का ये मामला दिल्ली विधान सभा में डिसकस हो रहा है तो ठीक वैसे ही डिसकस हो रहा है। मुझे लगता है जैसे कि कहा जाता है कि राबर्ट वाड्रा साहब का एक मामला था जो बहुत सालों से पब्लिक डोमेन में था पर उसको कोई उठाने की हिम्मत नहीं करता था। क्योंकि देखिये, कांग्रेस, बीजेपी के जो भी नेता हैं इनके भी अपने-अपने तरीके के सम्बन्ध होते हैं। ये एक-दूसरे के इस तरीके के मामले नहीं उठाते हैं। क्रिकेट एसोसियेशन के अन्दर भी एक वर्ग हावी है। कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता हैं। राजीव शुक्ला जी हैं, सिन्धिया जी हैं, एन. सी.

पी. के शरद पवार जी हैं और भी बहुत सारे बड़े-बड; नेता हैं जो क्रिकेट एसोसिएशन के अन्दर अपनी एक राजनीति करते हैं और इन ज्यादातर नेताओं का मुझे लगता है कि ऐसा मानना है कि हम तुम्हारी नहीं बतायेंगे तुम हमारी मत बताओ। 'Don't ask don't tell policy'. तो मुझे लगता है कि बार-बार ये कहा जाता है कि एसएफआईओ ने हमें क्लीनचिट दे दी थी यू. पी. ए. के जमाने में। वो भी मुझे लगता है किसी दबाव के अन्दर एसएफआईओ ने इनडाइरेक्टली वित्त मंत्री को इन्डिक्ट किया था। डाइरेक्टली कहने से वो बचे थे। क्योंकि दो ढाई साल से पहले की राजनीति जो देश के अन्दर होती थी, वो इसी तरीके की राजनीति थी कि वो एक-दूसरे को इन्डिक्ट नहीं करते थे।

अध्यक्ष महोदय : सौरभ जी, कन्क्लूड करिए।

श्री सौरभ भारद्वाज : धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमनाथ भारती जी।

श्री सोमनाथ भारती : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। सबसे पहले विजेन्द्र जी को मुबारकबाद दे दें कि उनको अपोजिशन का कमरा मिल गया है। आपको बहुत-बहुत मुबारक। अब खुश हो जाओ। तो ये हमारे मुख्यमंत्री की उदारता है। कुछ वहां भी करिये। पार्लियामेन्ट में भी करिये कुछ और आज बड़ा आप ब्रीफ लेके आये हैं। उसमें ये दिख रहा है कि आप सिर्फ कागज पर नाम मत लेने देना बाकी कुछ भी कह देना। भई, मुझे समझ में नहीं आता कि हम कह रहे हैं कि माननीय वित्त मंत्री तो नेचुरली उनका नाम आ रहा है। आप कह रहे हैं कि वित्त मंत्री कहके जितनी बात कहनी है कह दो। चलो आपको ब्रीफ यही मिली है। बहुत-बहुत धन्यवाद आपको।

अध्यक्ष महोदय, आज सदन का जो स्पेशल सेशन।...*(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, आज जो सदन का स्पेशन सेशन आपने हमें बार-बार याद दिलाया है कि ये बहुत गम्भीर विषय पर है। जो कुछ दिल्ली में 15 दिसम्बर को घटा। ये कोई मामूली घटना नहीं है। इस घटना के पीछे क्या है। क्यों किया गया। माननीय मुख्यमंत्री जी ने जिस कद्र उस दिन अपनी बातें प्रेस के सामने रखीं। अगर किसी को समझना था या समझना है तो उनके शब्दों में वो पीड़ा, वो दर्द दिखेगा। आप एक सीटिंग चीफ मिनिस्टर के ऑफिस में सीबीआई की रेड डालते हैं। किसके लिए डालते हैं। क्यों डालते हैं। हम सब जानते हैं।

अभी पिछले दिनों अरूणाचल प्रदेश में भी वहां की सरकार को अस्थाई करने का प्रयास किया गया। हाईकोर्ट की फटकार मिली वहां के गवर्नर को कि जो आपने किया, वो बिल्कुल असंसदीय है, असंवैधानिक है। पूरे देश में एक माहौल पैदा किया गया। जहां-जहां की सरकारें हैं। क्योंकि चुनाव तो जीत नहीं पाये तो गवर्नर के ऑफिस को मिसयूज करते हुए वहां की सरकारों को आप डि-स्टेबल करिए। हमारे साथियों ने इस बात को रखा कि पूरे राजनीतिक इतिहास में हिन्दुस्तान में आजादी के बाद आज तक कभी भी मुख्यमंत्री कार्यालय में सीबीआई का रेड नहीं हुई। उसके पीछे मंशा क्या थी? क्या ये मंशा थी कि राजेन्द्र जी के 2007 के किसी भी ऐसे फैसले के खिलाफ कुछ हमें कार्रवाई करनी है। माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस तरह से बाबा साहेब ने संविधान लिखा होगा तो इस संविधान के तहत एक फेडरल स्ट्रक्चर जो संविधान ने दिया। इसके स्टेट और सेन्ट्रल के रिलेशनशिप को डिफाईन किया और आर्टिकल 239 एए में बकायदा कहा गया कि दिल्ली सरकार के क्या-क्या राईटस हैं, क्या-क्या दायित्व हैं। उसके बावजूद ऐसे नहीं तो वैसे। अपने एक साथी ने कहा एक मैना तो कोई प्वाईन्ट कर दिया गया। भई आप अपने तोते को इस्तेमाल करने का प्रयास करते रहे

कम से कम मैना तो न देते हम। लेकिन अध्यक्ष महोदय, आज जो दिल्ली के माध्यम से प्रधानमंत्री जी पूरे देश में एक सन्देश देना चाह रहे हैं कि या तो हमारे कहने पर काम करो या फिर हम कुछ भी कर सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय, डीडीसीए का भ्रष्टाचार आज का नहीं है। मानीनय वित्त मंत्री 15 साल से उसके अध्यक्ष हैं और पिछले दिनों एक महिला मेरे विधान सभा क्षेत्र में मेरे पास आयी। वो कह रही थी कि अण्डर सिक्सटीन में मेरे बेटे का करवा दीजिए। हमने कहा, जी, कि ये कैसे होता है? कहा, ''जी कि बस आप जी जो कहेंगे, हो जायेगा। आप फोन कर दीजिए हो जायेगा।'' मुझे उस वक्त सारी बातें समझ में आयी कि किसी तरह से अण्डर सिक्सटीन के टीम में 18 साल के और बीस साल के बच्चों को झूठा एज सर्टिफिकेट देकर के उनको अण्डर सिक्सटीन की टीम में शामिल किया गया। और ये बकायदा उस पर एफ.आई.आर. किया गया। उस पर एफ.आई.आर. दर्ज है विजेन्द्र जी। आप हंस रहे हैं। मुझे मालूम हैं कि आपको मन में लग रहा है चलो पकड़े गये आखिरकार लेकिन अब ये अध्यक्ष महोदय, बड़ा गहरा मामला है और ये दो मामले हैं जिसको कि हमने....आप चलिए कोई बात नहीं हम अभी अपनी बात रख लें। आप बोलेंगे तो अपनी बातें रख लीजिएगा। अध्यक्ष महोदय, डी. डी. सी. ए. के जरिये जो प्रहार किया जा रहा है दिल्ली सरकार के ऊपर। बड़ा गहरा विषय है। जब 27 जुलाई, 2015 को केन्द्र सरकार ने एक चिट्ठी लिखकर के दिल्ली सरकार को कहा कि आप इस पर जांच करिए तो क्या कहा था? क्या केन्द्र सरकार का हिस्सा माननीय वित्त मंत्री नहीं है? क्या कैबिनेट उसका हिस्सा नहीं है? जब ये कहा तो दिल्ली सरकार कोई कांग्रेस का तो नहीं है, कोई भाजपा का तो नहीं है। यहां शब्दों तक ही हमारा कार्य सीमित नहीं रहता। हम करके दिखाते हैं। उनको शायद लगा था कि चिट्ठी भेज देंगें। उसके

बाद कुछ नहीं होगा। जैसे हम कुछ नहीं करते। लेकिन चिट्ठी आई। माननीय मुख्यमंत्री ने संज्ञान लिया। सरकार ने तीन सदस्यों की समिति बनायी और तीन सदस्यों की समिति पर रिपोर्ट 17 नवम्बर, 2015 को आयी और जो समिति के अध्यक्ष थे माननीय चेतन सांघी जी। एक बहुत अव्वल दर्जे के ऑफिसर है। उनके खिलाफ 9 दिसम्बर, 2015 को एफ. आई. आर. दर्ज कर दिया गया। क्यों किया गया? किस मामले में किया गया। कोई 2007-08 के बहुत पुराने मामले में। अगर इस कदर से हम करने लगे, मुझे लगता है आज दीपेन्द्र मिश्रा जी जो माननीय प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव हैं, उनके ऊपर कोल स्कैम, टू जी स्कैम के दाग हें। करके देखिये। आर्टिकल 14 कहता है बराबरी का थोड़ा हिम्मत तो दिखायें। लेकिन वहां पर नहीं सी. बी. आई. रेड डालेगी। वहां पर सी. बी. आई. रेड डालने की ताकत नहीं है। जिस कदर से पिछले दिनों जो हंगामा दिल्ली में हुआ जिसको पूरे देश ने देखा। मैं चूंकि आम आदमी पार्टी का साउथ का प्रभारी हूं। वहां से आ रहा हूं। वहां पर लोग थू-थू कर रहे हैं। इनको लग रहा है कि ये ऐसे करके कुछ हमें परेशान कर रहे हैं। जनता देख रही है। जनता समझ रही है। जिस तरह से बिहार में धूल चटाया, पंजाब में चटायेगी और उसके बाद पूरे हिन्दुस्तान में चटायेगी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, 27 जुलाई, जो क्रोनोलोजी है उसके बाद 17 नवम्बर, 9 दिसम्बर और उसके बाद जब माननीय मुख्यमंत्री ने अपना जो उनका मेसेज था एक इनडाईरेक्ट मेसेज था माननीय प्रधानमंत्री का, भारत सरकार का। उस पर, उसको नजरन्दाज करते हुए उन्होंने उस रिपोर्ट पर आगे फैसला लेने को कहा, सोचा और करने का प्रयास किया और कमीशन ऑफ इन्कवायरी बैठने की बात चली तो उनको लगा कि ये तो रूक नहीं रहा है। हमने इसके एक बड़े अधिकारी को फंसा दिया फिर भी ये मानने को तैयार नहीं। उस वक्त उन्होंने माननीय राजेन्द्र जी के ऊपर एक एफ.आई.आर. दर्ज करके सीबीआई के जरिये ये कार्य करने का फैसला किया। और किया क्या?

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिए। सोमनाथ जी। प्लीज।

श्री सोमनाथ भारती : दो मिनट। और किया क्या? रेड कहां डाला? माननीय मुख्यमंत्री के कार्यालय पर। बिना एफ. आई. आर. किये रेड चल रही है। अब इसमें कपिल भाई का धन्यवाद करता हूं। ये तीन जांच होने के बावजूद जिनमें पाया गया कि इतनी इर-रेगुलरटीज हुई है, इतना हेराफेरी उसमें हुई हैं। ये कहां का न्याय है कि एक इन्सान के ऊपर तो आप तीन रिपोर्ट आने के बावजूद कुछ नहीं कर रहे हो और राजेन्द्र जी के ऊपर कौन सी रिपोर्ट आ गयी। जिसके कारण आप ने रेड कर दी। ये तो बहुत बड़ी विषमता है और हम सबको ये बात समझ में आ रही है कि पीड़ा मोदी जी के मन में कहां से पैदा हुई। वो इस बात को झेल ही नहीं पा रहे हैं कि दिल्ली में जो अद्‌भूत घटना घटी। इसमें जो कि बिहार में रिपीट हुआ। वो कहां-कहां रिपीट होगा। ये आम आदमी पार्टी इनके पोलिटिकल अनइम्प्लायमेन्ट का कारण बनेगी। इनके पोलिटिकल डेथ का कारण बनेगी। इनको समझ में आ गया है।

अध्यक्ष महोदय : सोमनाथ जी, अब कन्क्लूड करिए। प्लीज। विषय पूरा हो गया है।

श्री सोमनाथ भारती : दो मिनट और। ये एक हमारे पास कुल मिलाकर के एक एन्टी करप्शन ब्रान्च था। उस पर इन्होंने कब्जा जमा लिया। मैं इनको चैलेन्ज करता हूं आज आपे माध्यम से। इनके पास सीबीआई, इनके पास इन्फोर्समेन्ट डाईरेक्टोरेट, इनके पास दिल्ली पुलिस, इनके पास दिल्ली सरकार का एसीबी। हमारे पास अगर एक एजेन्सी होती। इनके सारे करप्ट नेता आज जेल में होते। मैं ये बात आपके जरिये बताना चाहता हूं। लेकिन इनको डर है। अरविन्द केजरीवाल कांग्रेस नहीं हैं। जो कि इनके डराने से डर जायेगा। अरविन्द केजरीवाल की सरकार

ने फैसला कर रखा है कि जितने करप्ट है, वो जितने करप्ट है विजेन्द्र जी हो सकता है आप अपना एकाउन्ट थोड़ा देख लीजिए। जितने करप्ट हैं। उन करप्ट को नींद नहीं आ रही है। जब तक अरविन्द केजरीवाल जी दिल्ली के मुख्यमंत्री हैं, उनको नींद नहीं आ रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, दो बात और ये एक जो ये हमारे साथी राखी ने बड़े विस्तार से बताई। जो फ्राड हुआ है। उसकी बातें रखीं। उसमें एक बात बड़ी इम्पार्टेन्ट थी। एक कम्पनी जो कि 2009 में बनी और उसको 11 करोड़ का प्रोजेक्ट 2008 में ही दे दिया था। इसके फ्राड्स और एक बड़ी नामी-गिरामी चैनल है देश का जो हर वक्त कहता है Nation wants to know, nation wants to know वो nation wants to know आजकल चुप है। nations wants to know जो चैनल है वो पूरे हिन्दुस्तान में कहां-कहां ऐसे मामलों में वो घर-घर जाके, ऑफिस जाकर ढूंढता था कि भई यहां डाईरेक्टर नहीं मिला, यहां कुत्ता मिल गया, यहां बिल्ली मिल गयी, यहां ड्राइवर मिल गया। इन्हीं के एक और मंत्री थे नितिन गडकरी जी, उनके ऊपर जो इन्वेस्टीगेशन कर रहा था वो चैनल। वो हर वक्त हर घर में गया और हर ड्राईवर को ढूंढा। हर कुक को ढूंढा लेकिन आज क्यों चुप है? मीडिया से ऐसी प्रैस कान्फ्रैन्स नहीं दिखायी। मीडिया से ऐसी अपेक्षा नहीं है। चूंकि देश के नामी-गिरामी चैनल है उनसे आशा करता हूं कम से कम बराबरी का nation wants to know, they are under obligation....

अध्यक्ष महोदय : सोमनाथ जी, अब कन्क्लूड करिए। प्लीज। नहीं अब ये कन्क्लूड करिए प्लीज।

श्री सोमनाथ भारती : अब ये मैं आता हूं डिफर्मेशन केस पर। ये डिफेमेशन हुआ कहां? पहली बार देश में ऐसा देखा कि जिस दिन केस फाईल हुआ, same

day filing, same day marking and same day listing. ये तो बड़ा अगर अर्डिनरिली कोई फाईल करता है तो अगले दिन लिस्ट होता है। यहां सेम डे लिस्ट हो गया। अब ये जो कह रहे हैं डिफेम हुआ। कहां हुआ थोड़ा जो दो लाईनें हैं, बता देना चाहता हूं माननीय सदन को। माननीय मुख्यमंत्री ने कहा है CBI raided his office to locate files related to corruption in DDCA, the files name Finance Minister, Arun Jaite\ley which files were CBI looking in my office, DDCA files in which Arun Jaitleyji is in dock I was about to order oa Commission of Enquiry यहां पर डिफमेशन कहां हुआ। जो कानून कहता है जो एक्सेप्शन है। वो तो बहुत बड़े वकील हैं। लेकिन उनको एक्सेप्शन शायद समझ में नहीं आया या ये समझना नहीं चाहते। एक्सेप्शन कहता है imputation of truth which public good requires to be made or pablished वो ऐसी सच्चाई जो कि जनता जानना चाहती है और जिसको जनता को बताना भी चाहिए। तो वो तो उन्होंने कहा। इसमें कहां कह दिया कि आप भ्रष्टाचारी है। फिर उन्होंने अरविन्द जी ने अगले दिन ट्वीट किया why Jaitleyji is so sacred of DDCA, probe what is his role in the DDCA Scam? इसमें कहा हो गया इनका मानहानि हमारे राघव चड्ढा जी ने का कि Arun Jaitleyji has shielded the Delhi and District Cricket Association over 15 years इसमें कहां हो गया मानहानि? फिर हमारे कुमार विश्वास साहब ने कहा। सर, हो सकता है उससे उनकी मानहानि हो रही हो। उन्होंने कहा–''अपना अरूण कमाऊ निकला। कलमाडी का ताऊ निकलां''*...(व्यवधान)* कलमाडी का ताऊ निकला। इसमें क्या, इसमें कहां से।*...(व्यवधान)*

श्री विजेन्द्र गुप्ता : ये जो हो रहा है और बोला जा रहा है यहां।

अध्यक्ष महोदय : ये तो नहीं विजेन्द्र जी ये तो कोर्ट में जो फाईल हुआ है।

श्री सोमनाथ भारती : ये तो फाईन्ड है।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, कोट वहीं कर रहा है न।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : आप नाम नहीं ले सके।

श्री सोमनाथ भारती : इसमें ऐसे किसी भी लाईन में।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप मत बोलिये। आप मत बोलिये जगदीप जी। प्लीज। चलिए, सोमनाथ जी अब कन्क्लूड करिए। प्लीज। कन्क्लूड करिए।

श्री सोमनाथ भारती : और जो भाजपा के मित्र चैनलों पर जाकर ये कह रहे हैं और कुछ चैनल। और एक बात और बता दूं।

अध्यक्ष महोदय : अब कन्क्लूड करिए। नहीं, सोमनाथ जी अब करिए। प्लीज। अभी बहुत लोगों को बोलना है।

श्री सोमनाथ भारती : इसमें लिस्ट ऑफ विटनेस बड़ी इन्ट्रेस्टिंग है।

अध्यक्ष महोदय : अभी बहुत लोगों को बोलना है। हो गया, हो गया ये सारा विषय।

श्री सोमनाथ भारती : देश में पहले नम्बर पर रजत शर्मा जी। अब इण्डिया टी. वी. के जो ऑनर हैं वो इसके विटनेस हैं। तो क्या इम्पार्शल न्यूज देंगे वो? ये देश शर्मसार है ऐसे लोगों से।

अध्यक्ष महोदय : अच्छा अब बैठिए जरा प्लीज।

श्री सोमनाथ भारती : कनफिल्क्ट ऑफ इण्टरेस्ट है। दूसरी बात जो

भाजपा के मित्र जाकर कह रहे हैं चैनलों पर कि कॉगनिजेन्स ले लिया। अरे भाई कानून के ज्ञाता हैं xxx[1]। उनकी तो कम से कम मत अवमानना करो।

अध्यक्ष महोदय : अब बैठो जरा।

श्री सोमनाथ भारती : कानून में।

अध्यक्ष महोदय : सोमनाथ जी देखिए मैं रिक्वेस्ट कर रहा हूं। बैठ जाइए।

अध्यक्ष महोदय : लास्ट लाईन। चैनलों पर जाकर कह रहे हैं कि कॉगनिजेन्स ले लिया। इनको समझ में नहीं आता।

अध्यक्ष महोदय : अब सोमनाथजी, आप मुझसे बात करिए।

श्री सोमनाथ भारती : एक लाईन I Under Section 200 read with 190 कोई भी जा सकता है कोर्ट में। 5 तारीख को अरूण जेटली जी को बुलाया गया है। केस प्रूव करिए अपना। जब 5 तारीख को केस प्रूव करेंगे उसके बाद जज समन करने की सोचेगा।

अध्यक्ष महोदय : चलिए। हो गया।

श्री सोमनाथ भारती : तब जाकर के होता कॉगनिजेन्स। भाजपा के मित्रों को बता दें कि कॉगनिजेन्स अभी बहुत दूर है। हो सकता है उसके पहले माननीय कीर्ति आजाद जी दूसरा सी. डी. लेकर आ जायें।

अध्यक्ष महोदय : अब हो गया। विषय पूरा हो गया।

(××× चिह्नित अंश अध्यक्ष महोदय के आदेश से कार्यवाही से निकाले गए।)

श्री सोमनाथ भारती : और ये कीर्ति आजाद जी पर कोई कॉगनिजेन्स नहीं लगा।....व्यवधान। भ्रष्टाचार न भ्रष्टाचारी होगा और न मेरा नाम इन्क्लूड किया। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : महेन्द्र जी, आप अब। बैठिए-बैठिए। धन्यवाद। भई महेन्द्र जी देखिए सदन का समय जो मुझे आदेश हुआ है।

अध्यक्ष महोदय : भई महेन्द्र जी, देखिए सदन का समय जो मुझे आदेश हुआ है।

श्री महेन्द्र गोयल : xxx[1]

अध्यक्ष महोदय : महेन्द्र जी ये विषय नहीं है।

श्री महेन्द्र गोयल : अध्यक्ष जी मैं कानून के तहत बात कर रहा हूं ये। ये कानून के तहत....

अध्यक्ष महोदय : नहीं महेन्द्र जी बैठ जाइए आप। प्लीज ये कोई विषय नहीं है। ये व्यक्तिगत नहीं है। नहीं बैठ जाइए आप महेन्द्र जी बैठ जाइए। मैं कह रहा हूं बैठ जाइए। यह व्यक्तिगत बात नहीं चलेगी। आप बैठ जाइए। व्यक्तिगत बात नहीं चलेगी। नहीं आप बैठ जाइए। नहीं, मैं कोई समय नहीं दे रहा हूं। आप बैठ जाइए। महेन्द्र जी, मैं आग्रह कर रहा हूं। महेन्द्र जी, आप गलत बोल रहे हैं। ये मेरी रूलिंग है आप मेरी रूलिंग को चैलेज कर रहे हैं। बैठ जाइए। मैंने रूलिंग दी है ये। आप मेरी रूलिंग को चैलेज कर रहे हैं। बैठ जाइए।

अध्यक्ष महोदय : कपिल मिश्रा जी।

श्री कपिल मिश्रा (पर्यटन मंत्री) : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय। शुरूआत करने

(xxx चिह्नित अंश अध्यक्ष महोदय के आदेश से कार्यवाही से निकाले गए।)

से पहले मैं गुप्ता जी से बस यह कहना चाहता हूं, ''तुम इतना जो गुस्सा हो रहे हो, क्या खुशी है जिसको दबा रहे हो।'' दिल्ली भाजपा में और पूरी भाजपा में क्या चल रहा है, ये आपको भी पता है और हमें भी पता है। आज दिखाने के लिए तो पूरी दिल्ली की भाजपा, पूरे दमखम के साथ दिल्ली की विधान सभा के गेट पर प्रदर्शन करने के लिए पहुंची, पूरी एक बस भर गई थी। भाजपा के आज सदन में आने लायक जितने सांसद उसके आधे सांसद पहुंचे नहीं सदन में आज। आधे सांसद आपके सदन में नहीं आए। मैं यह कहना चाहता हूं और ये बात रखना चाहता हूं कि आपने भी देखा और हमने भी देखा, दिल्ली के बच्चे-बच्चे को पता है बवाना में कोई क्रिकेट खेलता था, बुराडी में कोई क्रिकेट खेलता था किराड़ी में, कोई क्रिकेट खेलता था और क्या होता था, कहां जाकर अटक जाते थे वो बच्चे जो अपनी गली में। एक-एक मैदान को हर बॉल पर पार कर देने वाले बच्चे उनको किसी क्लब में खेलने का, किसी डीडीसीए तक पहुंचने का मौका नहीं मिला। कौन से बच्चे पहुंचे, कैसे बच्चे पहुंचे और वो कैसे पहुंचे हैं, वो हम नहीं बता रहे हैं वो भाजपा के सांसद कीर्ति आजाद बता रहे हैं, कैसे लोग पहुंचते थे वहां पर। आज लेकिन हमारे भी कई साथियों ने प्रधान मंत्री....एक चीज मैं कह दूं साहब, जो नाम बोलने पर गुप्ता जी को गुस्सा आ रहा है और जो नाम नहीं बोलना चाहिए वो गलती से मेरे मुंह से निकल जाए अगर वो नाम तो उस नाम को हटा दिया जाए। उसकी जगह लिख दीजिएगा सॉफिस्टिकेटेड कलमाडी। अगर गलती से निकल जाए मुंह से कोशिश करूंगा कि निकले ही नहीं मुंह से। लेकिन निकल जाए तो लिख दीजिएगा सॉफिस्टिकेटेड कलमाडी। पढ़ा-लिखा कलमाडी और वो नारा भी बदल देना। हमारा कलमाडी कमाऊ निकला, उनके कलमाडी का ताऊ निकला। कुछ ज्यादा कहने-सुनने की जरूरत नहीं है सबको समझ में आ रहा है। आज प्रधान मंत्री जी ने एक बात बोली है, मैं इस बात को कहना चाहता हूं। हमारे कई साथियों ने भी ये बोला है

कि प्रधानमंत्री कुछ क्यों नहीं कह रहे? प्रधानमंत्री कुछ क्यों नहीं कह रहे? आज प्रधानमंत्री जी ने बोली है और वो बात बोली है जिसके लिए वो मशहूर हैं, अपने मन की बात। मन की बात बोली है और इशारों ही इशारों में संकुचाते हुए, शर्माते हुए, लज्जाते हुए, डरते-डरते उन्होंने बोला है, इस्तीफा देना चाहिए। आज जो प्रधान मंत्री महोदय ने बोला है कि जैसे अडवाणी जी पाक साफ निकले थे, अडवाणी जी सदन के अंदर नहीं घुसे थे जब तक साफ नहीं हो गया था। जो उनके ऊपर लगा हुआ आरोप था। संसद के अंदर उन्होंने पैर नहीं रखा था। जिस दिन आरोप लगा, उस दिन इस्तीफा दे दिया था अडवाणी जी ने। मोदी जी ने नसीयत दी है। कहा इससे ज्यादा कह नही सकते। कोई डीडीसीए में था तो कोई गुजरात क्रिकेट एशोशिएशन में था इससे ज्यादा क्या बोलेगा। लेकिन बोला है कि अडवाणी जी के रास्ते पर चल कर दिखाओ। मुझे लगता है यह बहुत बड़ा संदेश है, समझदार के लिए इशारा काफी होता है और समझदार कितने है ये तो तभी पता लग गया था जो आदमी एक लैपटाप को 16000/-रूपये किराये पर दे दे प्रतिदिन के। समझदार तो होगा, बेवकूफ तो नहीं होगा। प्रिन्टर 3000/- हजार रूपये पर और ये उन्होंने पहले दिन जिस दिन आरोप लगने शुरू हुए थे, पहले दिन बता दिया था। उन्होंने कहा मैंने तो फिरोजशाह कोटला 114 करोड़ रूपये में बनाया है, जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम तो 900 करोड़ में बना था। उन्होंने ये बता दिया कम्पीटिशन किससे था उनका। किससे कम्पीटिशन कर रहे थे। मलाल भी है उनके मन में लेकिन किया है साहब खेल छोटा-मोटा नहीं, खेल बहुत बड़ा किया है। बहुत बड़ा खेल किया है। दिल्ली में और देश में क्रिकेट के चाहने वालों के साथ इस प्रकार का मजाक, इस प्रकार का बेहूदापन नहीं होना चाहिए था। मुझे लगता है हर वो व्यक्ति जो पूरे-पूरे दिन छुट्टी ले लेते हैं, लोग अपने आफिसों में जाने से, जब क्रिकेट मैच आ रहा होता है सड़कें

सुनसान हो जाती हैं। बच्चे स्कूल नहीं जाते और स्कूल जाते है तो स्कूल में भी छोटा सा ट्रांजिस्टर लेकर पहुंच जाते हैं, सुनने के लिए। उन सब के साथ ये धोखा है। इस देश में हर क्रिकेट के चाहने वाले, क्रिकेट को पसंद करने वाले के साथ ये धोखा हुआ है। हमारी नाक के नीचे से करोड़ों रूपये और सबसे मजेदार बात जिस दिन पहले दिन आरोप लगे, उस दिन ये सॉफिस्टिकेटिड कलमाडी साहब ने बोला कि मैं निराधार आरोपों का जवाब नहीं देता। निराधार आरोप है। मैं इनके जवाब में कुछ नहीं बोलूंगा। दूसरे दिन पूरा का पूरा ब्लाग लिख दिया। यानी कि ये तो मान लिया कि आरोप निराधार नहीं है। वरना जवाब नहीं देते। पूरा का पूरा ब्लाग लिखा। ब्लाग लिखने से पहले एक और केन्द्र सरकार के मंत्री आते हैं, प्रेस कांफ्रेस करते हैं, बचाव में कुछ-कुछ बोलते हैं और बदहवासी का आलम ये कि ये भी भूल जाते हैं कि राजबाला किस आन्दोलन में शहीद हुई थी, कहां शहीद हुई थी, कुछ भी बोलते हैं। बदहवासी थी, घबराहट थी, कोई तथ्य नहीं था, दो मिनट के लिए टीवी के सामने आए और दो मिनट के अंदर चले गए और ऐसे लगता था जितने भी लोग बोल सकते थे, भाजपा के अंदर बात रख सकते थे, इस मामले में सब ने कह दिया हम नहीं बचाएंगे। कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति नहीं आया। जो आए, उनके पास कहने के लिए कुछ तथ्य नहीं था और हालत यह हुई कि एक प्रेस कांफ्रेस होने के पांच मिनट बाद दोबारा इनको अपनी प्रेस कांफ्रेस करनी पड़ी। ब्लाग लिखना पड़ा। एक दिन पहले संसद भवन के अन्दर सदन में झूठ बोला। सदन के अंदर झूठ बोला कि सीबीआई की इस कार्रवाई का मुख्य मंत्री से कोई लेना देना नहीं है। यह सफेद झूठ था। हिन्दुस्तान की संसद के अंदर बोला गया झूठ था क्योंकि सीबीआई मुख्य मंत्री के दफ्तर में बैठी हुई थी। सीबीआई उन फाईलों को देख रही थी जिन फाईलों को पिछले एक हफ्ते में दस दिन में मुख्य मंत्री ने साईन

किया है या आने वाले एक से दो दिन में साईन करने वाले थे। सीबीआई उन कम्प्यूटरों को देख रही थी, जिन कम्प्यूटर में मुख्यमंत्री के इस कार्यकाल के दौरान की हुई फाईलें और कार्यों का विवरण होता है। और वहां सदन में बयान दिया जा रहा है, सदन में बयान दिया जा रहा है कि 2006 व 2007 के घोटाले उनकी फाईलों को देखने के लिए सीबीआई पहुंची है, तो वहां क्यों नहीं पहुंची जहां वो फाईलें रखी थीं? क्यों नहीं पहुंची सीबीआई वहां? वैट डिपार्टमेंट में तो नहीं गई सीबीआई। ऐजूकेशन डिपार्टमेंट में तो नहीं गई सीबीआई। सीबीआई पहुंचती है मुख्य मंत्री के दफ्तर। हिन्दुस्तान के इतिहास में पहली बार बिना किसी आरोप के मुख्य मंत्री के दफ्तर में सीबीआई पहुंच रही है। कोई केस नहीं है और मुख्यमंत्री के फाईलों को टटोल रही है, घोटाले की फाईलों को टटोल रही है। मुझे यह लगता है कि सीबीआई को छोड़ दिया गया है विपक्ष के पीछे। किसी भी विपक्षी को छोड़ो मत। बख्शो मत। इनके पीछे सीबीआई को वैसे इस्तेमाल करो जैसे कांग्रेसी करते थे। लेकिन गलती हो गई इनसे ये कि इन्होंने सीबीआई अरविंद केजरीवाल के पीछे छोड़ी। किसके पीछे? अरविंद केजरी वाल के पीछे। राम चरित मानस में एक दोहा है—

जासू दूत बल बरिन न जाई, तैही आए पुर कमल भलाई

अरे जिसके सचिव को तीन दिन पूरे दिन पूछताछ कर ली उसके घर में छापा मार लिया। दफ्तर में छापा मार लिया। जिसके सचिव के पास तुम्हें कुछ नहीं मिला उसके पीछे सीबीआई लगाकर तुम्हें वो ही मिलने वाला है जो कपिल शर्मा कहता है। मुझे नहीं पता वो संसदीय है कि नहीं है, मुझे नहीं पता वो शब्द संसदीय है या असंसदीय हो तो हटा देना लेकिन अरविंद केजरीवाल के पीछे सीबीआई को भेजकर केंद्र सरकार को बाबा जी का ठुल्लु मिलेगा। मैं एक

बात कहना चाहता हूं जिसको DDCA financial इररेगुलैरिटी बोल रहा है उसको शुद्ध हिन्दी में भ्रष्टाचार बोलते हैं। जिसको वो प्रोसीजरल लैप्स बोल रहे हैं, उसको घोटाला कहते हैं। चार झूठ लिखे थे ब्लॉग में अगले दिन चार झूठ। पहला झूठ ब्लॉग में लिखा कि 114 करोड़ रूपये का पेमेंट ईपीसीआईएल को हुआ था और उसी डीडीसीए ने प्रेस कांफ्रेस करके बताया कि 57 करोड़ रूपये का पेमेंट हुआ था। दूसरा झूठ अपने ब्लॉग में लिखते हैं कि कारपोरेट बाक्सेज तो लीगल हैं, वो तो एक्स्पैशन का प्लान था। सैन्ट्रल की गवर्नमैंट की यूथ अफयेर्स मिनिस्ट्री दिल्ली सरकार को जो अभी चल रही है एनडीए की सरकार उसकी मिनिस्ट्री दिल्ली सरकार को लैटर लिखकर बोलती है कि इल्लीगल कारपोरेट बाक्सेज के बारे में जांच कीजिए। तीसरा झूठ कहते हैं ये कम्पाउन्डिंग ऑफेन्स है। वकील हैं, वकालत पढ़ी है और उनको ये मालूम है जिस प्रकार का ये फर्जीवाड़ा किया गया है, इसमें जेल तक की सजा हो सकती है। ये कम्पाउन्डिंग ऑफेन्स नहीं है। और चौथा झूठ ये बोला कि हमने तो क्रिकेट एडमिनिस्ट्रेशन से बहुत पहले ही छुट्टी ले ली थी। चौदह साल तक प्रेजीडेंट बने रहे और उसके बाद चीफ पैटर्न मुझे लगता नहीं डीडीसीए के अलावा किसी और संगठन में ये पोस्ट भी होती होगी चीफ पैटर्न की। खासतौर पर बनाया गया पद है। लेकिन बनाया गया है। कुल मिलाकर एक बात समझ में आ रही है कि विपक्ष को दबाने की कोशिश है। झूठ को छुपाने की कोशिश है। ये ईशारा भी दिया जा रहा है कि अब इस्तीफा दे दो पानी सिर से ऊपर निकल गया है। वो ईशारा भी समझ में आएगा कि नहीं आएगा। लेकिन अंत में केवल इतना कह सकता हूं कि सीबीआई हमारे पीछे छोड़कर कुछ नहीं मिलेगा। क्योंकि–

हाथ जिनमें में हो जुनू कटते नहीं तलवार से,
सिर जो उठ जाते हैं वो झुकते नहीं ललकार से।।

एक बड़ा सवाल अभी बचा हुआ है इस देश के सामने आज की तारीख में। अब ये बच्चे-बच्चे को पता है किसने घोटाला किया है, किसने कितने पैसा खाया। दूध का दूध, पानी का पानी कोर्ट में हो जाएगा, हम तो कह रहे हैं जो आपने केस किया है उसकी रोज सुनवाई होनी चाहिए। लेकिन एक सवाल इस देश के सामने बचा हुआ है। वह बहुत बड़ा सवाल यह है कि जिस प्रकार से अपने मंत्री ऊपर दाग लगने पर अरविंद केजरीवाल ने कार्रवाई की थी क्या वो कलेजा देश के प्रधान मंत्री के पास है या नहीं है वो कलेजा? क्या उनके अंदर ये हिम्मत है कि अपने दागी मंत्री को बोलें कि जब तक तुम पाक साफ साबित नहीं हो जाओगे तब तक तुम मंत्रालय में नहीं बैठ सकते। इसी सवाल के साथ इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए आपकी अनुमति चाहूंगा। धन्यवाद। जय हिन्द।

अध्यक्ष महोदय : श्री विजेन्द्र गुप्ता जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, आज यहां पर उप मुख्यमंत्री द्वारा एक प्रस्ताव रखा गया और उस प्रस्ताव के तथ्यों पर चर्चा न करके यहां पर राजनैतिक, लच्छेदार और अपनी पार्टी के आकाओं को खुश करने के लिए ऐसी अभ्रद अन-पार्लियमैंटरी भाषा का प्रयोग किया गया, उसमें तथ्य नहीं और सिर्फ लफ्फाजी है। लेकिन ये मेरा दायित्व बन जाता है और जब से सदन प्रारम्भ हुआ है हमने कोशिश की है कि यहां पर एक सार्थक बात हो, इस लिए पूरे समय सदन में विपक्ष की उपस्थिति आपके समक्ष है। कुछ तथ्य आपके समक्ष रखना चाहता हूं। 19 जून को धारा 55 के अंतर्गत हमने चर्चा के लिए एक विषय लगाया था, दिल्ली के मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों से उत्पन्न हुई स्थिति पर चर्चा। लेकिन इसकी चर्चा यहां नहीं हुई, नहीं करवाई गई। अगर

दिल्ली के मुख्य मंत्री इतने पाक साफ हैं, उनकी सरकार इतनी पाक साफ हैं, नियम 89 के तहत हम एक प्रस्ताव लाए कि यह सदन संकल्प करता है कि प्रधान सचिव, मुख्य मंत्री पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच पूरी होने तक उन्हें निलम्बित रखा जाए। ये भी लगभग 6 माह पूर्व हमने सदन में लगाया था लेकिन संख्या बल पर यहां पर हमारे दोनों प्रस्तावों को बिना चर्चा के रोक दिया गया। अगर ये ईमानदार सरकार है तो चर्चा से क्यों भागती है? 6 महीने पहले लगे हुए आरोपों पर चर्चा क्यों नहीं हुई? आज तक इस सदन में जब भी विपक्ष ने भ्रष्टाचार के इन मामलों को उठाया कभी सरकार ने उनका स्वागत नहीं किया कि आईए, आपको लगता है, आप बताईए। हम जवाब देंगे। अगर आपके तथ्यों में दम है तो कार्रवाई करेंगे और आपके तथ्य तथ्यविहीन है तो हम जनता के सामने विपक्ष को बेनकाब करेंगे। क्या लोकतंत्र में सदन की मर्यादाओं के तहत भ्रष्टाचार के मामलों को एक बार नहीं एक दर्जन बार बिना सरकार की तरफ से जवाब आए, उनको दबाया गया। मैं कुछ और फैक्टस आपके सामने रख रहा हूं और वे तथ्य ये है कि भ्रष्टाचार निरोधक शाखा ने प्रमुख सचिव के सीएनजी घोटाले के मामले में एफ.आई.आर. दर्ज की और जांच के उपरान्त एक चार्ज शीट विशेष न्यायाधीश सुश्री पूनम चौधरी के पब्लिक प्रोसीक्यूटर के माध्यम से कोर्ट में जमा करने की बात थी। पब्लिक प्रोसीक्यूटर को कार्यालय मुख्यमंत्री के में बुलाया गया यानी कि प्रधान सचिव के कार्यालय में प्रधान सचिव द्वारा और डराया और धमकाया गया। मेरी बात एक-एक नोट की जाए। अगर तथ्य गलत हो मेरे खिलाफ सदन जो चाहे कार्रवाई करे। क्यों धमकाया गया? अगर सब कुछ ठीक था। एक पब्लिक प्रोसीक्यूटर को क्यों धमकाया गया निलम्बित करने की धमकी दी और कहा कि चार्ज शीट जमा न करें। कोर्ट में ड्यूटी का पालन मत करो। चार्ज शीट सबमिट मत करो। फिर क्योंकि वो बाध्य था और

उनको वो चार्ज शीट सबमिट करनी थी उन्होंने उसको जमा किया। उसके बाद जो कहा गया तनख्वाह सरकार से लेते हो और एक हजार पन्नों की जार्चशीट एक दिन में जमा कर देते हो ''फाईल को देरी करो फाईल ए. सी. ब्रांच से मंगवाओ, हमारे सामने पेश करो। यदि ऐसा नहीं किया तो सस्पैंड कर दिये जाओगे।'' मुख्य मंत्री जरूर अपने वक्तव्य में कहें कि ये जो मैं कह रहा हूं इसकी उनको जानकारी थी या नहीं थी या मैं झूठ कह रहा हूं। तीनों में से एक आप्शन जरूर चुने। श्री शर्मा को....इसके बाद मैं दस्तावेज भी पेश करूंगा। श्री शर्मा को नौकरी से निकाल दिये जाने की धमकी दी गई। आरोप पत्र यदि दाखिल हो जाए तो उसे दाखिल मत होने दो, वरना तुम्हारी छुट्टी। और पनिशमैन्ट पोस्टिंग की गई। तुरन्त उसको हटाया नहीं गया। उनको दूर कहीं फैंका ही नहीं गया पब्लिक प्रोसीक्यूटर को बल्कि उनके कार्यालय में रेड डाली गई। धमकाने के लिए उनके कार्यालय में रेड डाली गई बिना किसी दस्तावेज के, कागज के, किसी चालान के, उनके यहां से कागज उठाए गए। उनको धमकाया गया और सब सामान वहां से ले जाया गया। बदले में कोई रसीद तक नहीं दी गई। ये जीता जागता सबूत है। अभी जो कुछ हुआ, बार-बार मुख्यमंत्री जी ने कहा, मेरे कार्यालय में टीवी पर आ करके जनता को गुमराह करने वाला बयान दिया। ''मेरे कार्यालय में'', भावनात्मक रूप से पूरे मामले को गुमराह करने की कोशिश की। ''मेरे कार्यालय में''। जब कि पार्लियामेंट के अंदर सरकार ने स्थिति स्पष्ट कर दी थी कि इस रेड का दिल्ली के मुख्यमंत्री कोई लेना-देना नहीं है। ना ही उनके कार्यकाल से कोई लेना-देना है। एक मामला है। देश में आए दिन रेड होती हैं। देश में आए दिन अधिकारियों की जांच पड़ताल होती है और अगर अधिकारी पर आरोप हैं तो फिर जांच से क्यों डरते हैं? क्यों उसको राजनैतिक रंग देते हैं? क्यों उस पूरे मामले पर बदले की भावना से कार्रवाई करते हैं

क्यों आप प्रेज्युडिस होते हैं क्या आप भ्रष्टाचार मिटाने आये थे या भ्रष्टाचार को प्रोटेक्ट करने आए हैं? आज इस सदन की चर्चा से साफ लगता है, बड़ी हैरानी होती है इस चर्चा में से कि लोगों ने इन लोगों पर विश्वास किया जो यह कह रहे थे कि हम भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं करेंगे, यहां तो भ्रष्टाचार पर राजनीति हो रही है। एक भ्रष्टाचार को आंख बंद करके जिस पर सैन्ट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वस्टिगेशन हो या और जितने इन्वेस्टिगेटिंग एजेन्सीज हो या जितने भी तथ्य हों, उनको बिना जांच परखे सदन में आंख बंद करके ऐसे अधिकारियों को तमगे दिये जा रहे हैं। ऐसे अधिकारियों के शौर्य गाथा गान किये जा रहे हैं। अच्छा होता इस सदन में यह कहा जाता कि अगर अग्नि परीक्षा भी है तो हमें विश्वास है, अग्नि परीक्षा से फलाने अधिकारी साफ पाक निकल कर सामने आएगा। आपको डर किस चीज का है? आपको भय किस चीज का है? आप कौन से उदाहरण देश के सामने और दिल्ली की जनता के सामने भ्रष्टाचार के मामले में पेश करना चाहते हैं? भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार होता है मेरा और तेरा नहीं होता है। भ्रष्टाचार किसी भी दल का नहीं, किसी पार्टी का नहीं है। भ्रष्टाचार की अपनी एक परिभाषा है, जो सर्वमान्य है। सर्व विदित है। जिसको कहीं भी जिस पर सहिष्णुता नहीं होनी चाहिए। लेकिन मैं देख रहा हूं लगातार एक-ऐसा माहौल खड़ा किया जा रहा है और माहौल बदले की भावना से खड़ा किया जा रहा है। डीडीसीए की बात यहां की जा रही है। डीडीसीए में अगर कुछ गलत है तो तथ्य निश्चित रूप से हमारे समक्ष होते लेकिन एक भी तथ्य जितनी बातें यहां की गई है या तो तथ्य विहीन की गई है या फिर लफ्फाजी की गई है या फिर गुमराह करने की कोशिश की गई है। पहला यहां पर उप मुख्यमंत्री जी ने जहां से शुरू किया मैं उनको बताना चाहता हूं, उन्होंने राजनीति से प्रेरित बयान दिया। और दिल्ली के उन तमाम खिलाड़ियों को एक प्रकार से डिमोरलाइज

किया जिन्होंने क्रिकेट में दिल्ली के नाम को उज्जवल किया है। मैं उप मुख्यमंत्री जी की जानकारी बढ़ाना चाहता हूं कि वर्तमान में ही जो नगीने दिल्ली ने दिए हैं, उनके नाम एक इशान समी के हमारे एक साथी कह रहे थे कि वहां तो बढ़िया-बढ़िया घरों के लड़के ईशांत शर्मा को आप जानते होंगे निहायती गरीब परिवार का लड़का है। पूरी दुनियां में विराट कोहली एक एलआईजी फ्लेट में रहता है, मयूर विहार, में शायद आपके ही क्षेत्र में, शिखर धवन ये अभी जिस कार्यकाल की आप बात कर रहे हैं, उसी दौरान ये अभी खेल रहे हैं या अभी हाल-फिलहाल में आशीष नेहरा, गौतम गंभीर जिसने वर्ल्ड कप में भारत का नाम रोशन किया...*(व्यवधान)* एक सेकेण्ड, एक सेकेण्ड मुझे अपनी बात कहने दो आप 50 आदमी बोलेंगे विपक्ष का एक व्यक्ति बोलेगा और वो भी तथ्यों के आधार पर आप बोलने नहीं देंगे उसको। मैं उप मुख्यमंत्री जी के सवाल का जवाब दे रहा हूं। उप मुख्यमंत्री जी ने कहा कि डीडीसीए के घोटाले के कारण दिल्ली के टैलेंट को जगह नहीं मिली। हम यह बताना चाहते हैं...*(व्यवधान)* चेयर्स से अनुमति लीजिए मैं चेयर्स से अनुमति लेकर बोल रहा हूं आप अपनी बात अनुमति लेकर बात करिए।

अध्यक्ष महोदय : एक सेकेण्ड, एक सेकेण्ड जगदीप जी, नाम लेने में आपने खुद आपत्ति की है। अभी जो नाम गिनवाये हैं आप वर्ल्ड में अच्छा खेलने वाला बोल लीजिए, अच्छा गेंदबाज बोल लीजिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : यहां पर खिलाड़ी का नाम लेने पर कोई आपत्ति नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : नहीं ऐसा नहीं है तो नाम कोट मत करिए किसी का भी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मैं पढ़ देता हूं।

अध्यक्ष महोदय : आप पढ़ने पर मत जाइए। आप आगे चलिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : फिर आप पढ़ लीजिए खिलाड़ी के शौर्य को, खिलाड़ी की प्रतिभा को यहां पर नाम लेने में कोई हर्जा नहीं है। मैं बता रहा हूं अभी आपकी पोल खुल रही है खिलाड़ियों के नाम से...*(व्यवधान)*।

अध्यक्ष महोदय : चलिए अब आगे चलिए आप। कन्क्लूड करिए आप।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : विरेंद्र सहवाग, आकाश चोपड़ा, मेरे पास एक लंबी लिस्ट है अगर मैं नेट शेल में कहूं 15 की स्कवैड में आपको मैं करंट के बता रहा हूं जो इस समय खेल रहे हैं जो प्रोडक्ट है डीडीसीए का। 15 की स्कवैर्ड में आप उठाकर के देख लीजिए पिछले 10 वर्ष 15 वर्ष का इतिहास, आप देखेंगे 15 की इंडियन टीम के स्कवैड में 4 से 5 खिलाड़ी दिल्ली के अपनी प्रतिभा के बल पर भारत का विश्व कप जीत करके आए हैं। इसके लिए बधाई देनी चाहिए।

दूसरा प्रश्न आपने उठाया। आप पढ़े लिखे लोग हैं मैं तो आपको पढ़ा हुआ मानता हूं। लेकिन बार-बार आप बोल रहे हैं कि एक लेपटॉप के 18 हजार रूपये किराया दे दिया इसका मतलब यह साफ है कि आप तैयारी से नहीं बोल रहे। आप राजनीतिक भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। कॉमेंट्री बाक्स में एक इक्यूपमेंट लगाने के लिए चार व्यक्तियों की टीम के साथ पूरे दिन वहां पर काम करना पड़ता है। चार लोग वहां पर उसके साथ सर्विस प्रोवाइड करते हैं कॉमेंट्री बाक्स में और वो आपकी जानकारी के लिए जस्टिस मुदगल ने भी जो मैच कराया है, उन्होंने भी तो आप आरोप लगाइए, अगर आप आरोप लगा रहे हैं तो लगाइए जस्टिस मुदगल पर भी आरोप लगाइए कि उन्होंने भ्रष्टाचार किया है फिर कन्फयूज नहीं कर सकते आप। अगर आप सुनी सुनाई बातों को....

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अलका जी प्लीज ऐसे समय खिंच जाएगा।

श्री विजेंद्र गुप्ता : ऐसे तो बहुत सारे नियमों का उल्लंघन इस सदन में हो रहा है और वो हो रहा है, उसका कारण है कि प्राइवेट लिमिटेड कंपनी की तरह सरकार चल रही है, ये सदन चल रहा है और लोग देख रहे हैं। लोग जरूर महसूस कर रहे होंगे कि कभी एक पार्टी को इतना बहुमत नहीं देना चाहिए कि वो निरंकुश हो जाए और मुझे लगता है कि कहीं न कहीं आपकी पार्टी के नेता भी इस बात को जरूर महसूस करते होंगे कि सदन में विपक्ष की अपनी एक भूमिका है। चैक एण्ड बैलेन्स की। जो निश्चित रूप से होना चाहिए संख्या में होना चाहिए और इसीलिए यहां पर बेतरतीब तरीके से चीजें होती हैं। आपने कहा कि हम डिस्कशन करा रहे हैं। आपको इतना जरूर मालूम होना चाहिए कि ये डीडीसीए एक कंपनी है। कंपनीज एक्ट अंडर सेक्शन 25 ये कंपनी अफेयर्स का मामला है। ये आपको जरूर मालूम होना चाहिए उप मुख्यमंत्री जी। आपने प्रस्ताव जरूर पेश किया लेकिन ये आपको जरूर मालूम होना चाहिए आपकी जानकारी बढ़ाऊंगा कि जो लिस्ट वन है कंस्टीट्यूशन आफ इंडिया की उसमें कंपनी अफेयर साथ आता है जो सेन्ट्रल सब्जेक्ट है। जमीन इसकी एलएण्डडीओ की है जो सेन्टर से संबंध रखती है। इसलिए इस पूरे मामले पर सिर्फ राजनीतिक रोटियां सेंकने की कोशिश करना। सिर्फ राजनीति चमकाना, बदले की भावना से काम करना और भ्रष्टाचार के मामले को रफा-दफा करें, उससे या फिर उसको डायवर्ट करें ध्यान लोगों का हटाएं। एक ऐसी नापाक कोशिश आपने यहां की है....

अध्यक्ष महोदय : कनक्लूड कीजिए विजेन्द्र जी 15 मिनट हो गए पूरे।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अगर हां, मेरी एक भी लाइन तथ्यों से अलग हो तो आप मुझे टोकिए, मुझे बैठाइए। मैं आपकी रूलिंग को मानूंगा।

अध्यक्ष महोदय : चलिए 5 मिनट में कनक्लूड कीजिए चलिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : लेकिन मैं तथ्य यहां पेश कर रहा हूं और जो तथ्य आपके माध्यम से सदन को बता रहा हूं और सदन के माध्यम से इस दिल्ली और देश के लोगों को पता लगनी चाहिए। आपने अभी बात की 114 करोड़। आप जानते हैं। अध्यक्ष जी, देश में 1932 से टेस्ट खेला जा रहा है और 1932 में ही डीडीसीए का भी गठन हो गया। दिल्ली के पास स्टेडियम नहीं था दिल्ली में एक मैदान जैसी स्थिति थी। उसकी कैपिसिटी लगभग 22-23 हजार थी। ईपीआईएल ने पब्लिक लिमिटेड ने उसका सिविल वर्क किया जिसकी कॉस्ट 58 करोड़ रूपये आई 43 मदों में, जब आप अपना घर भी बनाते हैं तो ईंट गारा का स्ट्रक्चर खड़ा होता है न कोई दरवाजा होता है न उसमें कोई पंखा होता है न उसकी दीवारों पर कोई पेंट होता है। ये आप समझ लीजिए एक स्ट्रक्चर खड़ा किया और 43 मदों में क्योंकि किसी भी कंस्ट्रक्टशन कंपनी का पब्लिक लिमिटेड कंपनी का काम है स्ट्रक्चर खड़ा करना, उसमें एयरकंडीशनिंग, उसके अन्दर फैनसेट। अरे सुनिए ना सुनिए रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज पर आपको मुझे मालूम है....

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कपिल जी अभी जवाब देंगे दो मिनट सब्र करो।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : संविधान को मानते हैं या नहीं मानते। ये आप जानते हो। आप कैसे देश और दिल्ली को चलाना चाहते हो, ये आपकी सोच है। जरूरी नहीं है कि आपकी सोच से हर कोई अपने आपको जोड़े या उससे एडमिट करे। लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं कि उसके अन्दर जेन सेट, लिफ्ट, टायलेट्स 45 हजार उसकी केपिसिटी लगभग दो गुणा से ज्यादा हुई।

45 हजार फ्लड लाइट ग्राउण्ड, 17 गेट जो टनस्टाइन गेट थे जो सुरक्षा की दृष्टि से मोस्ट एडवांस टैक्नोलोजी है। ऐसी 43 मदों पर कुछ स्टेडियम को इन्टरनेशनल स्टैण्डर्ड का बनाने के लिए, उस पर खर्च हुआ। लेकिन ऑडिट हुआ, एक-एक चेकिंग हुई। अभी बात आ रही थी यहां रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज ने शिकायत पर इंक्वायरी की उसमें एसएफआइओ के भी सदस्य थे। उस इंक्वायरी में अध्यक्ष जी कहा कि कोई फ्रॉड नहीं है अभी जो हमारे भारद्वाज जी, कह रहे थे। मैं आपकी बात का भी जवाब देना चाहूंगा। अब कोई एकाउंट में हेराफेरी नहीं है। इसमें जो कंपाउण्डेबल चार्जिज हैं या पेनल्टी है वा चार लोगों के अगेंस्ट हुई जिसमें से तीन ने कंपाउण्डेबल फीस पे कर दी। जो आप हाई कोर्ट की बात कर रहे हैं, वो मिस्टर सुनील देव, एक सदस्य, जिन्होंने उस कंपाउण्डेबल चार्ज को चैलेंज किया और पे करने से इंकार किया और वो हाई कोर्ट चले गए। लेकिन*...(व्यवधान)* आप बैठ जाइए मैंने जो बताया है, वही कहा है। आप बैठ जाइए। आप अध्यक्ष की अनुमति से खड़े होइए। आप बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सौरभ जी दो मिनट बैठिए प्लीज। सौरभ जी आप बैठिए, आप इधर दे दीजिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : आप मुख्यमंत्री जी को दे दीजिए वो प्वाइंट। मेरे बाद जो सदस्य बोलेगा उसे दे दीजिए आप। अब मेरे बाद जो बोलेगा उन्हें दे दीजिए....

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी पूरा करिए। सौरभ जी दो मिनट बैठिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मैं ये जानना चाहता हूं कि आप दिल्ली के क्रिकेट

को बेहतर बनाना चाहते हैं या उसको राजनीति का अखाड़ा? मुझे लगता है कि कहीं न कहीं सरकार की नीयत में खोट है और एक षड्यंत्र के तहत डीडीसीए पर कब्जा करने की एक पहल पहले की जा चुकी है, शुरूआत हो चुकी है। आपने बीसीसीआई में जाकर क्या कहा कि दिल्ली में क्रिकेट के मैच कराने का अधिकार हमको दे दो, क्यों? जस्टिस मुद्गल को हाई कोर्ट को अपाइन्ट करना पड़ा? क्योंकि डीडीसीए खुद दिल्ली सरकार के खिलाफ हाई कोर्ट चली गई। आप बदले की भावना से क्योंकि डीडीसीए ने दिल्ली सरकार के खिलाफ हाई कोर्ट में पिटिशन फाइल कर दी। आपको लगा दिल्ली के अन्दर जो मैच होने वाला था, वो खटाई में पड़ा फिर जस्टिस मुदगल उनको कोर्ट ने नोमिनेट किया। जिनकी देखरेख में सबसे अच्छा मैच दिल्ली में हुआ और इसके साथ-साथ अभी टी-20 होने वाला है। दिल्ली में वर्ल्ड कप के 11 मैचिज है दिल्ली के पास मुझे लगता है कि आप अगर इसी तरह से दिल्ली की क्रिकेट को अपनी राजनीतिक महत्वकांक्षाओं का अंखाड़ा बनाएंगे तो निश्चित रूप से दिल्ली की क्रिकेट कहीं न कहीं उससे प्रभावित होने जा रही है, हो रही है क्योंकि आप और आपकी पार्टी और आपकी सरकार उसको राजनीति का एक अड्डा बनाना चाहती है।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी आप कनक्लूड करिए प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, अभी बदले की भावना से दिल्ली सरकार ने जो जो किया, मैं बताना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी आप कनक्लूड करिए प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, मैंने 10 मिनट मांगे थे मेरे 4 मिनट बाकी हैं।

अध्यक्ष महोदय : नहीं 7 मिनट पूरे हो गए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : चार मिनट में मैं अपनी बात समाप्त कर दूंगा। उसके बाद आपके समक्ष मैं एक बात कहना चाहता हूं...*(व्यवधान)* मुझे मालूम है कि आपको तकलीफ हो रही है क्योंकि यहां पोल खोली जा रही है।

अध्यक्ष महोदय : अब आप बोलिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अभी दिल्ली की सरकार ने एक तुगलकी आदेश जारी किया और डीडीसीए को कहा एक रेट्रोस्पेक्टिव इफेक्टस से एक इन्टेन्शन से कि तंग किया जाए 43 करोड़ रूपये का इन्टरटेनमेंट टैक्स का नोटिस दे दिया। बकाया नहीं था, कोई बकाया नहीं था। एडवांस टैक्स के रूप में 23 करोड़ रूपये दिल्ली की क्रिकेट से आप कमाइए। उनका गला घोटिये। युवा खिलाड़ियों की प्रतिभा को दबाइए। लेकिन ऐसा षड्यंत्र मत कीजिए कि दिल्ली के युवक, दिल्ली के क्रिकेट खिलाड़ी निराश हो जाए और आपको कभी माफ न करें। अध यक्ष जी, आपने अभी कमीशन ऑफ इंक्वायरी की बात की, मैंने बात की थी कंपनीज एक्ट से। अध्यक्ष जी, मैं आपको बताना चाहता हूं कमीशन ऑफ इंक्वायरी गठित करने का इस सरकार को अधिकार नहीं है। आपने की थी कमीशन ऑफ इंक्वायरी गठित सीएनजी के मामले में। मिनिस्ट्री ऑफ होम अफेयर्स ने आपके उस प्रयास को रद्द कर दिया, इंकार कर दिया और उसके बाद मामला सब्ज्युडिस्ड है। हाई कोर्ट ने कहा कोई पीनल एक्शन नहीं कर सकते आप। आप इंतजार करते। हाई कोर्ट का फैसला आने दीजिए क्या आपको दिल्ली के देश के न्याय व्यवस्था पर विश्वास नहीं है? फिर आप चेयरमैन किसको बना रहे हैं? में बहुत जिम्मेदारी से कह रहा हूं। जिनको आप चेयरमैन बना रहे हैं, उनके तमाम दस्तावेज मेरे पास हैं। उनको तो आप इंगेज करते हैं जो आपके वकील हैं।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : जो आपसे पैसे लेते हैं। चार्ज लेते है, अगर आपको कमीशन आफ इंक्वारी का चेयरमैन बनाना था, पहले तो गठित नहीं कर सकते थे, लेकिन जो कुछ कर रहे हैं, कम से कम उसको सफाई से तो करते। साफ-सुथरापन दिखना था तो किसी जस्टिस को बनाते। क्यों आप प्रेजुडिस होकर ऐसे लोगों को कमीशन का अध्यक्ष बना रहे हैं, जो पहले से ही आपके साथ खड़े हैं, आपके पाले में खड़े है। ये तो वैसी ही बात हो गयी कि कांग्रेस कोई कमीशन ऑफ इंक्वारी बनाए और कपिल सिब्बल को नॉमिनेट कर दे। ऐसा मत करिए। इस तरह से लोग अंधे नहीं है। पाप का घड़ा भरता, और एक दिन जब भरेगा तब आपको मालूम पड़ेगा कि हमने कितनी बड़ी-बड़ी गलतियां की थी।

अध्यक्ष जी, ये समय की सीमा मुझे बता रहे है, लेकिन मैं इतना चाहूंगा कि बजाय इसके कि आप स्टेडियम, आप कमीशन ऑफ इंक्वारीज, आपने खेलों पर भी ध्यान नहीं दिया। जो लिस्ट-2 में आपका प्रेरागेटिव है, आपका अधिकार है। आप बात करते हैं क्रिकेट को कैसे और अच्छा करें, खिलाड़ियों को कैसे और सहूलियतें दी जाएं। आपने पिछले 10 महीनों में, मैं चुनौती देता हूं सरकार को कि बताएं कि खेलों को लेकर आपने कब चर्चा की यहां पर? मुझे मालूम है इस पर हंसने के अलावा आप कोई तथ्य पेश नहीं कर पायेंगे, क्योंकि आपकी मजबूरी है, आप अगर नाराज होंगे तो लोग हंसेंगे और आप खुद हंसेंगे तो ये आपकी अपनी बर्बादी के किस्से है। इस पर हंसने के अलावा आप और कर भी क्या सकते हैं? धन्यवाद।

...(व्यवधान)

श्री सौरभ भारद्वाज : एसएफआईओ ने कहीं भी कोई क्लीन चिट नहीं दी थी। SFIO ने ये कहा है कि most norms of cooperate governance including the basic such as preservation of records which ensure transparency have been consistently not followed by the DDCA. The DDCA has defaulted on taxes, made payments for fictitious purposes has abetted falsification of age by players, has

violated licence conditions for heavily subsidized stadium used by them and has broken tax and other laws और मैं आपको बता दूं गोपाल सुब्रह्मणयम ने आज तक आम आदमी की सरकार को किसी भी केस में रिप्रेजेंट नहीं किया है और हमारे पास वो उदाहरण भी है, जहां अमित शाह के वकील को आपने सुप्रीम कोर्ट के अन्दर जज बना दिया था।

...(व्यवधान)

श्री राजेश गुप्ता : अध्यक्ष महोदय, मैं विपक्ष के नेता की बातों पर एक बात कहना चाहता हूं कि मुझे ऐसा लगा कि 1932 में जब क्रिकेट शुरू हुआ या ध्यानचंद जैसे लोग जिन्होंने देश के लिए बहुत नाम कमाया तो क्या उसके लिए हम शाबाशी अंग्रेजों को देंगे या कलमाडी के समय में सीडब्ल्युजी के जो केसेज हुए, उसमें जिसने भी मैडल जीता तो क्या आप कलमाडी को शाबाशी देंगे? जितने भी क्रिकेटरों के आपने नाम लिए हैं, वे अपनी प्रतिभा के बल पर यहां आये हैं न कि किसी के एहसान के बल पर। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : भावना गौड़ जी, बहुत संक्षेप में रखियेगा, प्लीज।

सुश्री भावना गौड़ : शुक्रिया अध्यक्ष महोदय। डीडीसीए की कार्यप्रणाली में अनिमितताओं को लेकर जिस तरह से गंभीर आरोप लगाये जा रहे हैं, स्वाभाविक तौर पर ये अपने आप में चिंता का विषय है। अध्यक्ष महोदय, भ्रष्टाचार मुक्त शासन देने की जो बात हमारी दिल्ली सरकार लगातार करती आ रही है, विधान सभा का ये विशेष सत्र बुलाना, अपने आप में इस बात का द्योतक है। हम लोग केवल कोरी बात नहीं करते, भ्रष्टाचारियों को उसके परिणाम तक पहुँचाने के लिए हम वचनबद्ध हैं, हम प्रतिज्ञाबद्ध हैं। अध्यक्ष महोदय, राजनैतिक महत्वाकांक्षा अपने आप में कोई बुरी बात नहीं है। किन्तु व्यक्तिगत महत्वकांक्षा की पूर्ति अस्थिरता की कगार पर अगर देश को खड़ा कर दे,तो यह अपने आप में एक चिंता का विषय है। नाना पालखीवाल की एक किताब है, 'हम भारत के लोग'। उन्होंने उसमें लिखा है कि किसी भी देश में अगर अस्थिरता आती है तो उसके केवल तीन कारण होते हैं और उन्होंने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि अव्यवस्था तेरे

तीन यार, हिंसा, अनुशासनहीनता और भ्रष्टाचार। मुख्यमंत्री जी के दफ्तर में जो कुछ हुआ, अधिकारियों को जिस तरह की धमकियां मिली। उनसे जिस तरह के सवाल जवाब किए गए, स्वाभाविक तौर पर अनुशासनहीनता ही कहलायेगी। लेकिन अगर मैं भ्रष्टाचार को राष्ट्रव्यापी रोग कहूं तो शायद कोई अपने आप में अतिशयोक्ति नहीं होगी।

अध्यक्ष महोदय, भारतीय लोकतंत्र में अगर देखा जाये तो बड़े दुर्भाग्य की स्थित है। लोकतंत्र में जनता अपने बड़े अहम अधिकार के साथ में लोगों को मत देकर के संसद तक पहुँचाती है, विधान सभा तक पहुँचाती है। जिसे अपना भरोसा देती है, वह जीत जाता है और जिसे नकार देती है, वह हार जाता है। देश का दुर्भाग्य देखिये अध्यक्ष साहब, जिन लोगों को देश की जनता ने नकार दिया, उसे देश का सबसे अहम पद प्राप्त है। माननीय वित्त मंत्री जी, बिना चुनाव लड़े ही वित्त मंत्री बन गये। देश के सबसे ज्यादा अहम और केन्द्रीय पद निजी वसीयत समझकर उनको रेवड़ियों की तरह बांट दिया गया। जिसका नतीजा फिलहाल पूरा देश भुगत रहा है। पूरी दिल्ली देख रही है। यह दुर्भाग्य है कि देश का खजाना उस व्यक्ति के हाथों में सौंप दिया गया, जिसने अपने कार्यकाल में डीडीसीए के अंदर लूट मचाई और उनकी संपत्ति कहां से कहां पहुँच गयी, मुझे बताने की आवश्यकता नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, हरदोई में एक चुनावी सभा हुई। देश के प्रधानमंत्री ने खुले शब्दों में कहा कि अगर लोकसभा में उनकी सरकार आती है, देश में उनकी सरकार बनती है, तो वे एक ऐसा कानून लायेंगे, एक ऐसा नियम लायेंगे, जहां भ्रष्टाचार को लगाम लगेगी। उन्होंने स्वयं कहा कि मैं एक कमेटी का निर्माण करूंगा। उन्होंने स्वयं कहा कि मैं स्वयं सुप्रीम कोर्ट को आदेश दूंगा कि जो भ्रष्टाचार में लिप्त हैं, उन पर वह कड़ी कार्रवाई करें और उनको जेल में भेजें। मुझे जानकारी नहीं है, अभी कपिल भाई ने ये बताया कि उन्होंने धीमी आवाज में ये कहा था। लेकिन मुझे तो लगता है कि अगर वे जोर से अपनी भाषा में बोलेंगे तो किसी भी मंत्री की या केंद्रीय मंत्री की हिम्मत नहीं होगी कि वह अपनी सीट पर लगातार बना रहे।

अध्यक्ष महोदय, 'न खाऊँगा न खाने दूंगा' इस तरह का एक बहुत तेजी के साथ एक जोरदार तरीके से, पुरजोर तरीके से वो नारा लगवाते रहे हैं। अभी कल हम लोग टीवी देख रहे थे।....सॉरी, नाम मेरे मुंह से निकल गया, बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि आम आदमी पार्टी कोई दिवास्वप्न देख रही है। मुझे तो लगता है कि बीजेपी की हालत एक उस खोखले तने की तरह से है जिसके अंदर उनकी सारी संस्कृति, उनके सारे सिद्धान्त कहीं न कहीं समाप्त हो गये। कल कोर्ट के बाहर देखा, सात संसदीय मंत्री जिसमें स्मृति ईरानी, निर्मला देश पाण्डेय जी, निर्मला जी, उसके बाद में राठौर जी, वहां पर सात संसदीय मंत्री इस तरह से वहां पर अपने पूरे जोर शोर और दमखम के साथ वहां पर पहुँचे हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय, मुझे तो ये लगता है कि भारत में दो-दो चीजें हैं। दो चीजों के मतवाले हैं लोग। या तो किसी तरह का नशा हो जाये या फिर अपने धर्म के ऊपर कायम रहते हैं। मुझे लगता है कि क्रिकेट को लेकर दोनों चीजे हैं। या तो लोगों को नशा है एक अजीब तरीके का। या वे उसे अपने धर्म की तरह से मानते हैं, धर्म की तरह से उसका पालन करते हैं।

अध्यक्ष महोदय, मुझे तो लगता है कि ये जो सब घटनाक्रम हमारे सामने आया है, उससे लोग ये जान गये होंगे कि ये पूंजी और ताकत का एक अजीब सा समावेश है। उच्चस्तर पर बैठे सभी राजनीतिज्ञ इसमें दिलचस्पी लेते नजर आते हैं। क्रिकेट की तमाम इकाइयों पर विभिन्न राजनैतिक दलों के प्रभावशाली नेता आज भी कब्जा जमाए हुए बैठे हैं। इस मामले में बीसीसीआई का तो अपने आप में बहुत बुरा हाल है। लेकिन राज्य क्रिकेट संघों का भी इससे ज्यादा बुरा हाल है। राजस्थान में सिंधिया सरकार का राज है। उसके राज की मेहरबानी देखिए। ललित गेट का सारा कच्चा चिट्ठा लोगों के सामने आया। लेकिन उसके बावजूद भी कुछ नहीं हो पाया। इस सदन के माध्यम से मैं कहना चाहूंगी कि शक्ति संतुलन बदलते व बिगड़ते रहते हैं, बनते रहते हैं। लेकिन जब शक्ति संतुलन बदलेगा। उसके बाद मुझे लगता है कि ये टाइम बम फिर से फटने वाला

है। लेकिन तब तक इसकी हालत कैसी रह जायेगी, इन लोगों के कौन-कौन लोग शामिल रह जायेंगे, इसके बारे में अपने आप में कहना बहुत मुश्किल है। उधर गुजरात में भी यही हुआ। आदरणीय प्रधानमंत्री जी वहां क्रिकेट संघ के अध्यक्ष होते थे। जब वे आये तो वे अपने चहेते जो आज बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, उनके हाथ में वह अपनी सत्ता, अपनी कमान सौंप कर आये। तो ये चीज तो बिल्कुल क्लीयर है कि राजनीति के दिग्गज अपने आप को खुद कितना भी चाहें कि क्रिकेट से अलग कर लें, उसको चाहे कितना भी छोड़ दें। लेकिन उन पर कब्जा करना, उनका अपना खुद का कब्जा रहे, उनके अपने लोगों का कब्जा रहे। इस बात को वे कभी भी नहीं भूलते।

अध्यक्ष महोदय, 90 करोड़ रू. डकार जाने वाले भ्रष्टाचारी नहीं, महा भ्रष्टाचारी हैं। और मुझे लगता है कि अभी भी उन्हें क्या जरूरत पड़ गई 10 करोड़ रू. की मानहानि का मुकदमा उन्होंने कोर्ट में जाकर सौंप दिया। देश की मौजूदा हालत आप देखें। देश में स्वास्थ्य सेवा ठीक नहीं है, बिजली की सेवा चरमरा रही है। भीषण ठण्ड पड़ रही है, महंगाई है, असंतुलन है, असुरक्षा है। उसके बाजवूद भी हमारे देश के वे 5-7 संसदीय व्यक्ति जो कल कोर्ट में हाजिर रहे। वैंकैया नायडू जी वहां थे, धर्मेन्द्र प्रधान, स्मृति ईरानी, जे. पी. नड्डा, पीयूष गोयल, राज्यवर्द्धन राठौर और निर्मलासीतरमण भी वहां पर मौजूद थी और इन सबके अलावा हमारे विजेन्द्र गुप्ता जी वहां पर थे। प्रदेश के सारे पदाधिकारी और विधायक वहां मौजूद थे। ढेर सारे निगम पार्षद मौजूद थे। मुझे तो समझ में नहीं आता कि ये सब क्या हो रहा है? हम सब देश को किस दिशा में ले जा रहे हैं। यह अपने आप में एक बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न है। देश को संभालने वाले लोग एक भ्रष्टाचारी की हिम्मत को बढ़ाने के लिए कोर्ट के दरवाजे तक भीड़ लेकर पहुँचते हैं।

अध्यक्ष महोदय, अब एक बहुत महत्वपूर्ण सवाल है। वीआईपी के लिए वीआईपी जितने भी हमारे लोग हैं, उनके लिए भ्रष्टाचार का अलग मापदण्ड क्यों और न्याय के दोहरे मापदण्ड क्यों है? वह सब लोगों के लिए अलग-अलग क्यों हैं?

वित्त मंत्री जी को बचाने के लिए सीबीआई का इस्तेमाल क्यों हो रहा है? यह अपने आप में एक बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न है। डीडीसीए की आंतरिक रिपोर्ट के अनुसार डीडीसीए में भारी वित्तीय अनिमितताएं पाई गई। नकली कम्पनियां बनाई गई। अवैध तरीके से बिलों का भुगतान किया गयां बहुत सारा पैसा कर्मचारियों की भरती के लिए खर्च किया गया। बड़े भुगतान को ओवर टाइम दिखाकर के उन्होंने उस पैसे को,उन्होंने अपने जिन लोगों को वे फायदा पहुँचाना चाहते थे, वहां तक पहुँचाया। उसमें डुप्लिकेट बिल बनाये गये।

अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन के माध्यम से एक अंतिम बात और कहूंगी। देश के अंदर एक प्रदेश है मध्य प्रदेश। उसमें व्यापम घोटाला हुआ। अपने आपमें दुर्भाग्यपूर्ण घोटाला हुआ। बहुत सारे लोग उसमें शामिल थे। 37 लोग व्यापम घोटाले के दौरान जमीन पर थे। कहां चले गये, किसी दूसरे लोक में, किसी को कोई जानकारी नहीं। उन लोगों को दूसरे लोक तक पहुंचाने वाले कौन लोग थे, जानकारी होने के बावजूद भी उन लोगों को न्याय नहीं। तो अध्यक्ष महोदय, इस सदन के माध्यम से मैं यह प्रस्ताव रखती हूं कि कम से कम दिल्ली के अंदर व्यापम जैसे जो घटनाचक्र देश में हुआ, उस तरह की घटना की पुनरावृत्ति न हो, इसलिए डीडीसीए के अंतर्गत जिन लोगों के नाम हैं, जिन लोगों की जानकारी हम सब लोगों तक है, उन लोगों की एक सूची तैयार की जाये। उस सूची को सब के सामने रखा जाये कि कौन-कौन लोग इस कार्य में लिप्त रहे हैं और उन्हें सिक्योरिटी प्रदान की जाये क्योंकि कोर्ट का डिसिजन आने में समय लगता है और तब तक इन लोगों के साथ में भी व्यापम जैसी घटनायें न घटे, यह अपने आप में एक चिंता का विषय है। मैं अपने इस प्रस्ताव पर सब लोगों का समर्थन चाहूंगी तथा इसके साथ में भ्रष्टाचार को खत्म करने और भ्रष्टाचारियों को सजा दिलाने के लिए हम कोर्ट भी जायेंगे और अपनी जंग को अगर हमें सड़कों पर लड़ना पड़ा, तो वो भी लड़ेंगे और मैं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप कन्क्लूड कीजिए।

सुश्री भावना गौड़ : अध्यक्ष जी, एक सैकेंड में खत्म करूंगी। लेशमात्र अगर शर्म बची है हमारे वित्त मंत्री जी में, हमारे प्रधानमंत्री जी में या तो उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए या अपने वित्त मंत्री से इस्तीफा मांग लेना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, आखिरी बिंदु कहकर के अपनी बात को खत्म कर रही हूँ। जो भी कुछ देश में घट रहा है, उसकी सर्वप्रथम अगर जिम्मेदारी है तो हमारे प्रधानमंत्री जी की है और जैसा कि अक्सर यह रहता है कि जब से हम लोगों को जान रहे हैं, समझ रहे हैं वो अक्सर हिंदुस्तान से बाहर रहते हैं। इस सदन के माध्यम से उन तक एक संदेशा है क्योंकि देश में जो भी कुछ घटेगा, अच्छा या बुरा उनकी जिम्मेदारी तय होती है इसलिए मैं आदरणीय प्रधानमंत्री जी को एक संदेशा देना चाहूँगी और उनको कहना चाहूंगी कि आप लौट आओ और भारत में ही रहो, क्योंकि तुमसे कोई बिहार के बारे में नहीं पूछेगा। 60 से 65 का बंधन भी तुम्हारे लिए क्या है इसके बारे में तुमसे कोई कुछ नहीं कहेगा। 15 लाख की तो तुमसे कोई बात भी नहीं करेगा और ना ही तुमसे कोई अच्छे दिन मांगेगा। ना ही कोई तुम्हारा 56 इंच का सीना नापेगा। आज दिल्ली में जनलोकपाल आ गया है और आप ही का एक चहेता आपकी लुटिया भी डुबो रहा है इसलिए इसे स्वीकारो और तुरंत भारत लौट आओ और आकर के भारत में ही रहो। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय भारत।

अध्यक्ष महोदय : श्री गोपाल राय जी, माननीय ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर।

परिवहन मंत्री (श्री गोपाल राय) : अध्यक्ष महोदय, जब सदन के नेता प्रतिपक्ष, अपनी बात रख रहे थे, समय कम पड़ रहा था लेकिन पूरी कोशिश करके जो उन्होंने बातें रखी, दो बात सिद्ध करने के लिए। पहली बात कि राजेन्द्र

कुमार महा भ्रष्ट आदमी है और उसके खिलाफ सीबीआई के छापे पड़ने चाहिए और वो जायज है, मुख्यमंत्री के कार्यालय में ही क्यों न हो। दूसरी बात सारी ताकत इन्होंने लगाई कि डीडीसीए में जो कुछ हुआ। उसमें रत्ती भर भी भ्रष्टाचार नहीं है और देश के जो वर्तमान वित्त मंत्री है, वो महा ईमानदार आदमी है। सच्चाई क्या है? दिल्ली के अंदर जो वर्तमान सरकार है, वो सरकार भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष करने के लिए बनी है और उसके खिलाफ लगातार कार्रवाई कर रही है। दिल्ली के अंदर जब से सरकार बनी है, अरविंद जी ने उस दिन कहा था और आज मैं फिर कहना चाहता हूं, अन्य सदस्यों ने भी कहा है पूरे हिंदुस्तान नहीं, पूरी दुनिया के सामने यह साफ है कि राजेन्द्र कुमार बहाना थे और अरविंद केजरीवाल निशाना थे। क्यों? क्योंकि दिल्ली के अंदर जब से सरकार बनी है। लगातार इस सरकार को पैरालाइज करने की कोशिश की जा रही है। पहले होम मिनिस्ट्री से फरमान जारी हुआ, सरकार का कोई मतलब नहीं होता, यहां का हर फैसला नल एण्ड वॉएड हो जाता था। होम मिनिस्ट्री से काम नहीं चला, एलजी साहब को मोर्चा संभालना पड़ा। एलजी साहब ने हर फैसले को नल एण्ड वॉएड कर दिया। हमारा हर फैसला गलत होता है। कहते हैं कि दिल्ली की सरकार का मतलब होता है लेफ्टिनेंट गवर्नर। यहां ये बैठे हैं, क्या करने के लिए बैठे हैं सारे? लेफ्टिनेंट गवर्नर साहब तो थे ही, चुनाव क्यों करवा दिये? अगर उस समय दिल्ली के संविधान के तहत, भारत के संविधान के तहत् विधान सभा की कोई मान्यता नहीं होती है, अगर मंत्रिमण्डल की कोई मान्यता नहीं होती है, मुख्यमंत्री की कोई मान्यता नहीं होती है तो राष्ट्रपति शासन तो था एलजी महोदय का, उन्हीं का शासन चलाये होते। चुनाव क्यों कराये? आज तक इसका जवाब नहीं है। लेकिन बार-बार कोशिश क्या करते हैं, होम मिनिस्ट्री का हमला किया फेल हो गया, एलजी साहब का हमला किया फेल हो गया, एसीबी पर कब्जा किया फेल हो गया, एमएलए को जेल भेजा, फेल हो गया,

अब ब्रह्मास्त्र चलाया इन्होंने, किसका? सीबीआई का। अब इसके बाद क्या करोगे? अब क्या करोगे क्योंकि आज तक हिंदुस्तान के अंदर जितनी सरकारें बनी हैं, उन सरकारों के पास सीबीआई के माध्यम से राजनीतिक पक्ष को और राजनीतिक प्रतिपक्ष को बार-बार बदलने की कोशिश की जाती रही है। उत्तर प्रदेश इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। बिहार के अंदर एक महा गठबंधन बना। जो व्यक्ति उस महा गठबंधन का नेतृत्व कर रहा था, जो व्यक्ति वहां के वर्तमान मुख्यमंत्री को उम्मीदवार घोषित करा रहा था, सीबीआई का तोता छूटा तो रिश्तेदारी भी भूल गया, गठबंधन भी भूल गया, सब कुछ भूल गया और आकर के विपक्ष में चुनाव लड़ने लगा। पहले भी हुआ है। कांग्रेस सरकार बार-बार करती रही है। हमें इस बात का यकीन था कि नई सरकार आयेगी, वो नये तरीके से काम करेगी। लेकिन अब तो सब कुछ कर लिया, अब आगे क्या करोगे? यह सरकार तो पांच साल चलेगी, सीबीआई के बाद क्या करोगे? सुनने में यह भी आ रहा है यह विचार चल रहा है कि ऐसा चक्र बनाओ, क्योंकि सीबीआई के बाद भी अब ये नहीं डर रहे तो इस सरकार को बर्खास्त करने का कोई न कोई, कोई न कोई रास्ता निकालो। ऐसा भी विचार और सलाह लोगों के मन में चल रही है।

अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूँ, दिल्ली के अंदर छापे मारे गये राजेन्द्र कुमार जी के भ्रष्टाचार को पकड़ने के लिए, सीबीआई ने छापे मार लिये, 14 जगह, 15 जगह मार लिये, पांच दिन तक उनसे पूछताछ कर ली, निकला क्या? निकला क्या? अगर बेईमानी होती राजेन्द्र कुमार के ऊपर तो मैं दावे के साथ कहता हूं राजेन्द्र कुमार को यह केन्द्र की सरकार आज तिहाड़ जेल में बंद कर चुकी होती। अगर भ्रष्टाचार होता राजेन्द्र कुमार के ऊपर, छूटे नहीं होते। क्योंकि हमारे विधायकों के तो छोटे-छोटे, छोटे-छोटे मुकदमे में तिहाड़ जेल ऐसे आना-जाना होता है जैसे हम लोगों की ससुराल हो तिहाड़ जेल। ऐसे भेज देते हो। राजेन्द्र कुमार के ऊपर कोई भी बेईमानी का आरोप अभी तक कोई सिद्ध नहीं कर

पा रहा है। हम कह रहे हैं कि अगर आरोप है, कह रहे थे प्रतिपक्ष के नेता की जांच करा लो, जांच करा लो, अगर तेरा भी भ्रष्टाचार भ्रष्टाचार होता है और मेरा भी भ्रष्टाचार भ्रष्टाचार होता है तो अरूण जेटली जी के भ्रष्टाचार की जांच कराने से क्यों डर रहे हो, इसका जवाब क्यों नहीं देना चाहते। जांच करा लो आप। डीडीसीए के घोटाले बाजों का सरगना के ऊपर जो आरोप लगे हैं, आप कहते हो कुछ हुआ ही नहीं, खुद वो सरगना कहता है कि इर-रेग्युलैरिटी हुई। मैं उसमें नहीं था। मैं उसमें शामिल नहीं था, इर-रेग्युलरिटी हुई, आप कहते हो कुछ हुआ ही नहीं। वो सरगना सही कह रहा है या आप सही कह रहे हो, इस बात को तय करो। और तीसरा भी पक्ष है इस दिल्ली के अंदर आपकी पार्टी का सांसद, आपकी पार्टी के वर्तमान और तमाम जो लोग हैं, उनके मन में भी यह बात, सच्चाई चारों तरफ बोल रहे हैं कि यह सच आज तक दबाया गया, कोई तो हिम्मत वाला आया, जिसने उजागर किया है। इसलिए अध्यक्ष महोदय, आपसे कहना चाहता हूं कि आज जिस तरह के भ्रष्टाचार और जिस तरह की कार्रवाइयों की आड़ लेकर की दिल्ली सरकार को दबाने की कोशिश की जा रही है, मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि आज सदन के अंदर सारे सदस्य बैठे हैं। डीडीसीए के उस समय के घोटाले बाजों के सरगना ने कहा, उनकी बात कह रहा हूं कि इर-रेग्युलरिटी हुई, इर-रेग्युलरिटी हुई, जिसको भ्रष्टाचार कहते हैं, मैं उस समय नहीं था। लेकिन आपके ही पार्टी के सांसद ने पूरी दुनिया को सीडी के माध्यम से दिखाया कि जिस समय वो अध्यक्ष थे, सार्वजनिक सभा में कीर्ति आजाद ने सवाल उठाये थे और बताये थे कि डीडीसीए में बेईमानी और भ्रष्टाचार चल रहा है, इसकी जांच कराओ। उस समय वो कहते है। कि मेरा दायित्व है कि अपने साथियों का मैं बचाव करूं। आप तो थे उस समय, आप थे इर-रेग्युलरिटी भी हुई आपके हिसाब से, आप उस समय अध्यक्ष भी थे, आपको यह बताया भी गया था कि भ्रष्टाचार हो रहा है लेकिन आपने कहा

कि मेरा दायित्व है कि अपने सरगना के नीचे जितने गैंग मैम्बर हैं उनके भ्रष्टाचार को बचाना मेरा दायित्व है। कई लोग कह रहे हैं, हमारे सरगना साहब को, डीडीसीए के घोटाले बाजों के जो सरगना है, उनको पता नहीं चल पाया कि अंदर भ्रष्टाचार चल रहा है। दिल्ली के एक-एक अधिकारी के कारनामों का हिसाब-किताब रखते हैं, दिल्ली के एक-एक विधायक के कारनामों का हिसाब-किताब रखते हैं।

पीएमओ में पैरलल पीएमओ चलता है और तीन तिकड़ी है जो देश के बारे में नहीं सोचती। दिन-रात आम आदमी पार्टी को कैसे बरबाद कर दिया जाए, इसका हिसाब-किताब रखती है और वो अपने सरगना साहब अपने अंदर के जो मेम्बर थे, उनके भ्रष्टाचार के बारे में जान नहीं पाये। उनको इस बात का पता नहीं चल पाया कि भ्रष्टाचार उनके अंदर हो रहा है। साथियों, अध्यक्ष जी के माध्यम से मैं कहना चाहता हूं कि ये डीडीसीए का केवल एक घोटाला नहीं है, घोटाला टूजी स्पेक्ट्रम का हुआ, एक मामले का घोटाला था। कोयला घोटाला हुआ, एक मामले का घोटाला था। इसमें तो लैपटाप घोटाला भी है, इसमें तो निर्माण घोटाला भी है, इसमें तो थाली घोटाला भी है और इतना ही नहीं अभी पता चला कि अगरबत्ती वाले का भी घोटाला है, घोटाला दर घोटाला, घोटाला दर घोटाला, घोटाला दर घोटाला और इन घोटालेबाजों का सरगना आज तिलमिला रहा है क्योंकि आज तक पक्ष हो या प्रतिपक्ष, राजनीति को मैनेज करता रहा है। आज पहली बार इस देश ने एक लाल पैदा किया है जिसका नाम केजरीवाल है जिसको मैनेज करने की औकात नहीं है उसमें, इसलिए खलबली मची है। इतनी बैचेनी, अरे हिम्मत है तो जांच करा लो न डर क्यों लग रहा है? एक जांच कमेटी ही तो बिठा रहे हैं तोप-गोले तो नहीं छोड़ रहे हैं दनादन। एक जांच कमेटी से डर क्यों रहे हैं? आप तो सीबीआई के छापे मरवा रहे हो और यहां एक जज के नेतृत्व में इन्क्वायरी ऑफ कमीशन बैठ रहा है तो कागज लहरा रहे हो कि उसका कागज हमारे पास है, क्यों डर लग रहा है भाजपा को?

क्यों डर लग रहा है प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को? क्यों डर लग रहा है भाजपा के नेताओं को? अगर हिम्मत है तो राजेन्द्र कुमार की जांच आप कर रहे हो तो इन घोटालेबाजों के सरगनाओं की जांच कराकर दिखाओ। मान जाएंगे तुम्हारे अंदर ईमानदारी बची हुई है। क्यों डर रहे हो? हम भाग रहे हैं, हम भाग रहे हैं और हम भाग भी जाएं तो जाएंगे कहां? हम कहां जाएंगे? इस दिल्ली के अंदर हमारे अधिकारी ने लगातार जाकर के अपना जवाब सबमिट किया है। तो साथियो, फाईल जो खोजी जा रही थी, उस फाईल की फोटोकापी भी उधर पहुंची है। लेकिन मैं कहना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय, आज इन घोटालेबाजों का जो सरगना है, उसने कहा कि तूने तो मेरी फाईल पकड़ ली लेकिन मेरे पास बहुत बड़े-बड़े वकील हैं। मैं तो जज बनाता हूं, जज बिगाड़ता हूं कोर्ट में तुमसे निपट लूंगा, इस हौसले के साथ कोर्ट में भाग करके गये हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि केवल एक अरविन्द केजरीवाल नहीं है इस लड़ाई में। हमारी पार्टी के जिन नेताओं का उन्होंने मानहानि का दावा किया है वो नहीं है, इस सदन के जो आम आदमी पार्टी के सारे सदस्य हैं, उनकी तरफ से कहना चाहता हूं कि हां, ''हम सारे मिलकर कहते हैं कि डीडीसीए में जो घोटाला हुआ है, उसके घोटालेबाज भी उसमें शामिल हैं और उसमें घोटालेबाजों का सरगना भी शामिल है।'' हम सब मिलकर के ये कहते हैं और ये भी कहते हैं कि सरगना साहब हिम्मत है, तो केवल सात को क्यों किया? कल हम सारे के सारे विधायक तुम्हारी मानहानि के दावे को बर्दाश्त करने को तैयार हैं और यहां से लिखित एप्लीकेशन भी भेज देंगे, हम सब कोर्ट में जाना चाहते हैं, हम सब जेल में जाना चाहते हैं। लेकिन हम सब मिलकर दिल्ली की एक-एक पाई का हिसाब रखना चाहते हैं। हमारे प्रतिपक्ष के नेता ऐसे कह रहे थे कि जैसे दिल्ली सरकार खिलाड़ियों की दुश्मन है। हम

खिलाड़ियों के दुश्मन नहीं हैं। आज तक जो खिलाड़ियों के आड़ में जो गंदा खेल खेला जाता रहा है, ये दिल्ली में केवल खेल नहीं हुआ, पूरे देश में ये खेल हो रहा है, जहां-जहां क्रिकेट है, वहां-वहां बेईमानी है। लोग क्रिकेट से मोहब्बत करते हैं लेकिन बेईमानी से नफरत करते हैं। दिल्ली की सरकार क्रिकेट के लिए सब कुछ करेगी, लेकिन बेईमानों के खिलाफ भी उन्हें तिहाड़ जेल पहुंचाने के लिए भी सब कुछ करेगी। इसमें हम समझौता नहीं करेंगे और इसलिए अध्यक्ष महोदय, हम एक बात आपसे आखिर में कहना चाहते हैं कि आज जो देश के अंदर माहौल बनाया जा रहा है, यही माहौल बनाने की कोशिश कांग्रेस बार-बार करती आई है। यहीं कोशिश वह करती थी, अपनी ताकत के दम पर, अपनी सत्ता के दम पर, अपनी सीबीआई के दम पर, अपने वकीलों के दम पर, सारा यही काम करती रही जो काम आज केन्द्र की सरकार दोहरा रही है और मैं यह कहना चाहता हूं कि एक बात ठंडे दिमाग से आप लोग भी सोच लेना। मैंने पिछली बार भी कहा था कि हर सदन के बाद हमारा एक जो विधायक जेल जाता है, लिस्ट बन रही है, दो-चार हो सकता है कि इस बार चूंकि बड़ी मछली पकड़ में आई है, बेचैनी बहुत ज्यादा है, तो संख्या भी बढ़ सकती है लेकिन तिहाड़ जेल जैसे हमारे लिए आज विधानसभा है, भ्रष्टाचार मुक्त भारत की लड़ाई के लिए जो हमारा ये केन्द्र है, उसी तरह से तिहाड़ जेल को भी हम सारे विधायक पहुंच जाएंगे और वहां से ही विधानसभा चला लेंगे, ये हमारा भरोसा है, बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री सत्येन्द्र जैन जी।

स्वास्थ्य मंत्री (श्री सत्येन्द्र जैन) : आदरणीय अध्यक्ष जी, मुझे बोलने का मौका देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। सबसे पहले तो मैं कंपाउंडिंग के

बारे में क्लीयर करना चाहूंगा कि कंपाउंडिंग होती क्या है? लोगों को ऐसा लगता है कि कंपाउंडिंग कर ली तो जुर्म खत्म हो गयां छोटा सा एग्जाम्पल है, आपने रेड लाईट जंप की, उसकी कंपाउंडिंग की जाती है और सौ रुपये का चालान कर देते हैं। सौ रुपये के चालान का मतलब यह नहीं है कि आपने गलती नहीं की है, अगर आपके रेड लाईट जंप करने की वजह से एक एक्सीडेंट जो होता है, उसमें लोग मर भी सकते हैं तो जुर्म तो रहा, अब इन्होंने कहा कि हमने भ्रष्टाचार तो किया, ये मान रहे हैं, खुद मान रहे हें कि हमने भ्रष्टाचार किया परन्तु उसको कंपाउंड कर दिया, बड़ी अच्छी डेफीनेशन है। करोड़ों रूपये के घपले किये, करोड़ों रूपये की बेईमानी की, करोड़ों रूपये का भ्रष्टाचार किया और उसको कुछ हजार करके कंपाउंड कर दिया, ये तो कमाल हो गया। इसको समझने के लिए जो जीरो लॉस थ्योरी थी उस पर वापस जाना पड़ेगा। एक. ...थ्योरी बनाई थी कांग्रेस के समय में, आदरणीय, नाम तो लूंगा नहीं मैं, हम सबको पता है कि उन्होंने कब बताई थी कि जीरो लॉस थ्योरी। अब वो भी इसी जीरो लॉस थ्योरी क्योंकि मित्र भी है आपस में। एक दूसरी पार्टी में है, और एक इस पार्टी में बताइये समझ भी नहीं आता कि कौन सी पार्टी क्या है, कांग्रेस कौन है, बीजेपी कौन है। एक ही तरह की बातें बोलते हैं, दोनों के दोनों। वो कहते हें जी हमने तो कंपाउंड कर लिया इसलिए खत्म हो गया जी अब तो, अब कोई गड़बड़ हीं रही क्योंकि हमने हजार रूपये का चालान कर दिया, दो हजार रूपये का चालान कर दिया, जो हजार करोड़ कमाये या अब सौ करोड़ कमाये या दस करोड़ कमाये वो दस करोड़ रूपये हमारे हजम हो गये, तो सबसे पहले तो आपको ये क्लीयर होना चाहिए सभी लोगों को कि कंपाउंडिंग का मतलब यह नहीं होता कि वो आपने जो बेईमानी की वो बेईमानी खत्म हो गई है बेईमानी वहीं की वहीं रही और इस कंपाउंडिंग को उस हाईकोर्ट

ने स्टे किया, उनके सामने जब गयां कंपाउंडिंग करके अपनी इररेगुलेटिरीज को, अपनी बेईमानी को, अपने भ्रष्टाचार को सही सिद्ध करना चाह रहे हैं तो हाईकोर्ट ने उसको रोक दिया। ये अपने आप में एक क्लीयर इंडीकेशन है कि कंपाउंडिंग करने से वो अपराध कम नहीं हुआ है। दूसरी बात मैं यह कहना चाहूंगा कि जैसे अभी साथियों ने भी कहा, पहले तो वो कह रहे थे कि मैं बेकार की बातों का जवाब नहीं दिया करता, बिना बात की बातों का जवाब नहीं दूंगा। अब उसका जवाब ही दे रहे हो। कुछ दे ही नहीं रहे और तो और उनकी पार्टी एक सदस्य हैं, उनका नाम है के. ए. परन्तु थोड़ा ओबसेस्ड हैं ए. के. सिंह, उन्होंने एक बहुत बड़ी प्रेस कॉन्फ्रेंस की, उन्होंने बहुत सारे आरोप लगाये। इन्होंने किया मानहानि का मुकदमा, किसके ऊपर? अरविन्द केजरीवाल के ऊपर। ए. के. के ऊपर। क्योंकि ए. के. के अलावा कुछ दिखता नहीं है उनको। भाई वो कह रहे हैं मेरे ऊपर मानहानि करो मैंने आरोप लगाये हैं। अरविन्द केजरीवाल जी ने, मैं देख रहा था कि पिछले एक सप्ताह के अंदर माननीय वित्तमंत्री जी के खिलाफ कौन-से आरोप लगा दिये। हमारे मुख्यमंत्री जी ने उनके खिलाफ क्या बोला? मुझे किसी पेपर में, किसी ट्वीटर पर कहीं कुछ नहीं मिला, मिला तो मिला ए.ए. नाम नहीं बोलूंगा नाम के लिए मना किया गया है। सब सदस्य समझते हैं, वो आज आ गये हैं कुछ भी बोल सकते हैं। उन्होंने आजादी से बोला, उन्होंने एक बात और भी बोल दी साथ-साथ कि मेरे पास एक ऐसी सीडी है, अगर वो सीडी बाहर आ गई तो आग लग जाएगी।

अगर लगने के डर की वजह से उन्होंने के. ए. की जगह ए. के. कर दिया, अरे भाई हिम्मत है तो वो कह रहे हैं उनके खिलाफ मानहानि का मुकदमा करो न। तो मैं तो आजाद साहब को उनकी आजादी के लिए बधाई देना चाहूंगा कि उन्होंने हिम्मत की है, उन्होंने ललकारा है एक भ्रष्ट सिस्टम को और सिस्टम के अंदर रहते हुए ललकारा है और ऐसा नहीं है कि उन्होंने पहली बार ऐसा

किया है, वो पिछले कई वर्षों से सरेआम इस भ्रष्टाचार के खिलाफ बोल रहे हैं, आज तक उस भ्रष्टाचार की जांच करने की हिम्मत किसी की नहीं हुई। पहली बारी दिल्ली के अंदर एक ऐसी सरकार बनी है, जिसके संज्ञान में ये सारी चीजें लेकर आया गया, उस सरकार ने हिम्मत की है और उसकी जांच करवाने का निश्चय किया है। अध्यक्ष जी, मैं एक चीज और भी कहना चाहूंगा कि मुख्यमंत्री जी के कार्यालय पर छापा मारा गया उसके पीछे कारण क्या है? ऐसी भावना क्या है और ऐसी आफत क्या आ गई थी कि देश की राजधानी, देश के दिल, उसके अंदर मुख्यमंत्री के कार्यालय पर छापा मारा जाए। किसी भी अपराध के पीछे कोई न कोई कारण होता है कि उसका मोटिव क्या था? मोटिव ये था कि दिल्ली सरकार को पंगु बनाया जाए।

अध्यक्ष जी, जब हमारी सरकार बनी थी, काफी सारे हमारे अधिकारी बैठे हैं। यह सबको पता है, हम लोग बहुत बड़ी-बड़ी आदर्शवादी बातें करते हैं तो उनको लगा करता था कि कुछ दिनों के बाद सब बराबर हो जाएगा परन्तु मैं कहना चाहूंगा चार-पांच महीनों के बाद सबको लगा नहीं ये सिर्फ कह नहीं रहे हैं, काम कर रहे हैं। दिल्ली के अंदर आठ हजार स्कूलों के कमरे बनाये जा रहे हैं। आठ हजार स्कूलों के अंदर कमरे बनाने का मतलब हुआ लगभग दो सौ स्कूल नये बनाये जा रहे हैं जो कि जुलाई तक बनाने का वायदा किया है हमने। दिल्ली के अंदर एक हजार मोहल्ला क्लीनिक बनाये जा रहे हैं। दिल्ली सरकार ने दो सौ एफिडेविट्स खत्म कर दिये जिनकी जरूरत ही खत्म कर दी। दिल्ली के अंदर कास्ट सार्टीफिकेट बनवाना इनकम सार्टीफिकेट बनवाना जो कि नाइटमेयर था, जिसको बनवाने के लिए धक्के खाने पड़ते थे, चक्कर लगाने पड़ते थे। वो कम्प्यूटर से क्लिक दबाकर एक मिनट में आप ले सकते हैं उनको लगने

लगा कि अगर ये सरकार इसी तरह से काम करती रही तो ये सब काम कर डालेंगे।

अध्यक्ष जी, दौड़ जीतने के दो तरीके होते हैं या तो एक दौड़ने वाले से ज्यादा तेज दौड़ो और दूसरा तरीका जो हमें पता लगा बीजेपी से, लगभग 10 महीने पहले सरकार बनी। हमने दौड़ना स्टार्ट किया, बहुत तेजी से दौड़ना स्टार्ट किया जैसे कि मैंने कुछ काम गिनाये इन्होंने कहा इससे तेज तो हम दौड़ नहीं सकते क्योंकि इनकी सरकार बने हुए एक साल नौ महीने हो चुके हैं। दौड़ने का समय भी नहीं है, काम करने का कल्चर भी नहीं है। सिर्फ बड़ी-बड़ी बातें और विज्ञापन करने की कल्चर रही है। उन्होंने दूसरा तरीका निकाला अडंगी मारो, इसको गिरा दो। जीत तो हम सकते नहीं, इनको गिराइयेगा। मैं बताना चाहूंगा आप जितनी बारी मर्जी अडंगी मारियेगा, हम खड़े होंगे, दौड़ेंगे। फिर से दौड़ेंगे पीछे हटेंगे नहीं। सर, इसी दिल्ली के अंदर दिल्ली की जनता ने एम पी इलेक्शन के अंदर बीजेपी को सात में से सात सीटें दी थीं। अरे! हमारी मत सोचो उस जनता की तो सोचियेगा दिल्ली इसी देश का पार्ट है कितनी जिम्मेदारी देश की है। जितनी मुख्यमंत्री की जिम्मेदारी दिल्ली की है, उतनी ही जिम्मेदारी प्रधानमंत्री की भी है। अगर दिल्ली के लोगों से इस बात का बदला लिया जायेगा कि उन्होंने क्यों केजरीवाल को 67 सीटें दे दीं तो वे जनता कभी माफ नहीं करेगी। इस बात को बार-बार जनता को महसूस कराया जा रहा है कि आपने दिल्ली में आम आदमी पार्टी को, अरविंद केजरीवाल को 67 सीटें दी हैं, इसलिए आप से बदला लिया जा रहा है। आपको काम नहीं करने दिया जायेगा, आप जा कर पूछियेगा किसी से भी पूछ लीजियेगा जनता के अंदर हर आदमी यही कहेगा कि काम नहीं करने दिया जा रहा है। अरे भई, आप अपना काम कीजियेगा, हम अपना काम कर रहे हैं। अभी स्वच्छ दिल्ली अभियान स्टार्ट किया, मुख्यमंत्री जी ने बहुत अच्छी बात कही थी अगर ओबामा जी हिंदुस्तान आते हैं वो तो अरविंद

जी को जानते ही नहीं। अगर दिल्ली साफ सुथरी मिलने लगी तो तारीफ तो मोदी जी की होगी कि भई देखो दिल्ली साफ हो गई। हम तो सिर्फ इनसे यही कह रहे हैं कि सर बड़े लोगों को बड़े लोग जानते हैं...*(व्यवधान)* चलो ठीक है अब जान भी जायेंगे। अध्यक्ष जी, अक्सर कई बार कहा जाता है कि आप तो रोजाना सेन्टर गवर्नमेंट के पास पहुंच जाते हैं। देखियेगा, अगर सुबह, दोपहर और शाम तीन बारी भी हमें दण्डवत कहीं करना पड़े, जाने को तैयार है। प्रोवाइडिड के दिल्ली की जनता को काम होता हो। हमें कोई अहंकार नहीं है हम काम करने के लिए तैयार हैं। हम तो हाथ जोड़कर विनती करते हैं। कृपया जिम्मेदारी तो आपकी भी उतनी ही है, जितनी हमारी है। काम तो आपको भी करना चाहिये। अगर आप नहीं करना चाहते, कम से कम हमें तो करने दो। हम तो करना चाहते हैं। जनता अपने आप देख लेगी कि हमने वादे पूरे किये हैं, नहीं किये हैं हम जो काम कहे थे, करे या नहीं करे। अगर हम अच्छा काम करेंगे तो जनता देखेगी। बुरे काम करें तो जनता देखेगी? कम से कम काम में अड़ंगे मत अड़ाइयेगा। काम को रोकियेगा नहीं।

अध्यक्ष जी, मुझे कई बार क्या लगता है कि ये पोलिटिक्स है ना जी, पोलिटिक्स में जितने भी लोग आते हैं एक बिजनेस करने के लिये आते हैं। इसलिए दो साल से एक्टिव राजनीति में आने का मोका मिला, यहां पर क्या लगता है कि इन लोगों ने अपना काडर बना लिया है कोई पार्टी नही है। सब एक हैं ये। जितने भी पोलिटिशियन्स हैं, इनको कोई फर्क नहीं पड़ता। सारे पोलिटिशियन एक ही थैली की चट्टे-बट्टे हैं। इन लोगों को फर्क इस बात से भी नहीं पड़ता था कि आम आदमी पार्टी जीत गई और उसकी सरकार बन गई। फर्क इस बात से पड़ता है कि जीतने के बाद भी ये पोलिटिशियन नहीं बने। जीतने के बावजूद भी कहते हें हमारे जैसे क्यों नहीं बने? हमसे अक्सर कहा जाता है अकेले में, कहते हैं अब तो सरकार बन गई, अब क्यों लड़ रहे हो? अब लड़ने

की जरूरत क्या है? अब तो आपकी सरकार है अब तो आप हमारे साथ बैठियेगा। जैसे हम हैं, वैसे आप बन जाइयेगा। एक छोटा सा एग्जाम्पल बताना चाहूंगा पिछली सरकार की कहानी है सच्ची कहानी है नाम नहीं लूंगा। एक विधायक जी पहली बारी बने, बनते ही मुख्यमंत्री जी के पास गये मैडम इतने सारे काम हैं अभी करने हैं। उन्होंने कहा, ''लगता है पहली बारी बने हो। अभी पता नहीं है। आपको। चार साल के बाद आना जो भी काम करना, पांचवें साल में करना। अब मैं बताता हूं आपको एक बार मुख्यमंत्री जी के पास चला गया मैंने कहा सर, ''ये काम करना है इसका डेट क्या रख लें?'' कहते हैं, क्या मतलब, इसका मतलब क्या होता है? मैंने कहा सर, ''अगले इलेक्शन से पहले कुछ प्लान कर लें।'' तो उस दिन मेरी जिंदगी में पहली बारी डांट पड़ी थी, कहते हैं हम यहां काम करने के लिये आये हैं डेट फिक्स करने नहीं आये, कहते हैं, ''राजनीति करने के लिये नहीं आये हैं, सिर्फ काम करने के लिये आये हैं और अपना काम कीजियेगा, ईमानदारी से काम कीजियेगा।'' मैं एक बात कहना चाहूंगा केन्द्र सरकार का जो बिहेवियर है वो एक घर के बुजुर्ग जैसा होना चाहिये, यहां तो ऐसा लग रहा है कि वो छोटे बच्चे की तरह कर रहे हैं। बच्चे का बिहेवियर हम कर सकते हैं, गलती हम कर सकते हैं। हमें माफ किया जा सकता है,उन्हें नहीं किया जा सकता है। सर, वो हमारे पूरे देश को चला रहे हैं। पूरे देश को चलाने वाले को बड़ा दिल रखना चाहिये वो तो इतना छोटा दिल ले के बैठे हुए हैं। अरे! दिल्ली सरकार अच्छा काम कर रही है, तो उसे शाबाशी देना चाहिये। शाबाशी देने के बजाय हर काम में अड़ंगें अड़ा रहे हैं हर काम में अड़गें अड़ा रहे हैं। हर काम में अड़गें अड़ा रहे हैं, शोभा नहीं देता। इस बात की शोभा नहीं देगा जनता पूछेगी कि प्रधानमंत्री जी, कि हमने आपको भी सात सीटें दी थी दिल्ली सरकार को काम तो करने देते और दूसरी बात जितने

मरजी अड़ेंगे अड़ा लें काम तो हम करके रहेंगे ज्यादा से ज्यादा यही हो सकता है जो काम दस महीने में होना था, बारह में हो जायेगा, तेरह में हो जायेगा। हमारा ये मानना है कि जितने भी अधिकारी हैं, जो ईमानदारी से काम कर रहे हैं, उनके खिलाफ किसी भी तरह की कार्रवाई के लिये हम चट्टान की तरह सामने खड़े होंगे। किसी तरह की कार्रवाई नहीं होने देंगे। ईमानदारी से काम करने वाले के साथ हम खड़े हुए हैं और हमेशा खड़े रहेंगे। आज सीबीआई ने छापा मारा। कहते हैं, जी हमने छापा तो मुख्यमंत्री जी के आफिस में नहीं मारा। बाद में उन्होंने चेंज कर लिया हमने प्रिंसिपल सेक्रेट्री के आफिस में मारा था। अच्छा जी, कोई बात नहीं, छह दिन की कार्रवाई में मिला क्या? छह दिन की कार्यवाही करने के बाद कहते हैं जी बारह बोतल शराब की मिली। तो सीबीआई जो इतना बड़ा डिपार्टमेंट बना रहा है, क्या शराब की बोतलें ढूंढने के लिए बनाया हुआ है? कितना पैसा खर्च किया, इस कार्रवाई पर उनसे पूछा जाना चाहिये और उनके खिलाफ पुलिस में एफआईआर दर्ज कराई गई कहते हैं कि उनके पास लिमिट से ज्यादा शराब थी। जब कि 18 बोटल की लिमिट है, कहते हैं नौ बोटल होती हैं 18 दो लोग हैं तो 18 हो सकती हैं और उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज करा दी, दबाव डाल कर। एक्साईज डिपार्टमेंट के ऊपर दबाव डाला, लिखित में दबाव डाला और उनसे कहा गया एफआईआर दर्ज कराई जाये। मैं पूछना चाहता हूं मैं खुद शराब नहीं पीता जी, पहले बता रहा हूं फिर भी अगर जो पीते हैं अगर अपने घर के अंदर एक लिमिट के अंदर रखते हैं.. .*(व्यवधान)* हां, जी इसलिए देनी पड़ी आप लोग काम नहीं कर रहे, आपको अगर इसके अलावा...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : चलो चलो विजेन्द्र जी।

स्वास्थ्य मंत्री : दिल्ली सरकार ने अभी एक अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई की थी। उसके खिलाफ ट्रैप मचाया और उस अधिकारी के खिलाफ सीबीआई ने रिपोर्ट करके उनको अरेस्ट कराया। वहां पर छापा पड़ा था सर, उस छापे में क्या मिला था? अखबारों में पढ़िये, पचास करोड़ रूपये, सर दो दिन के छापे में पचास करोड़ रूपये मिले थे। अगर किसी अधिकारी के 27 साल की सर्विस के बाद ढाई लाख रूपये उसके घर में मिलते हैं, तो कहते हैं पता नहीं खजाना मिल गया कुबेर का। पर मैं तो ये कहना चाहूंगा कि जितने काउंसलर्स हैं, उनके घर पर जाया जाये उनसे पूछा जाये कि तीन हजार रूपये महीना कमाने वाले लोग जिनको तीन हजार रूपये महीना मिलते हैं, वो कैसे इतनी बड़ी-बड़ी गाड़ियों में चलते हैं? जितकी बिल्डिंगों को आप देख लें, तो शरमा जायें। आपको पता लगेगा कि उनके घरों के अंदर कितने करोड़ एक-एक काउंसलर के घर में मिलेगा।. ..*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : चलिये, चलिये गुप्ता जी चलिये।

स्वास्थ्य मंत्री : अध्यक्ष जी, मेरा ये मानना है कि ये सारी की सारी कार्रवाई सिर्फ और सिर्फ बदला लेने के लिये की गई है। इसका किसी भी तरीके से किसी भी केस से कोई संबंध नहीं है। अगर राजेन्द्र कुमार जी के किसी केस से संबंध होता सात साल पहले आठ साल पहले बताया गया था, उस जमाने के उनसे नीचे भी अधिकारी रहे होंगे। उनसे ऊपर भी अधिकारी रहे होंगे, सबके यहां छापे पड़ने चाहिये थे। ऐसा कभी नहीं होता मुझ को भी लगभग अब एक साल हो ही गया है। एक्सपीरियंस हो गया है कोई फाईल ऐसी नहीं है जिस पर सिर्फ प्रिंसिपल सेक्रेट्री के साईन होते हें। उसके नीचे भी कई लोगों के साईन होते हैं। उसके ऊपर मंत्री के साईन भी होते हैं अगर उन्होंने कोई अनियमितता

की थी, अगर उसमें सच्चाई होती उन सभी अधिकारियों के यहां छापे पड़ते तो हमें लगता कि इसमें कुछ ज्येनुइन्युटी है। मंत्रियों के यहां छापे अगर पड़े होते तो हमें लगता कि वाकई में इनकी नियत साफ है। मंत्रियों के यहां तो डाल नहीं सकते तो मैंने बताया ना कि अभी अंदर से ब्लैक है। वो कहते हैं कि मैं तुम्हें बचाऊंगा, तुम मुझे बचाना और बाहर जाकर रोज चिल्लाना। यही काम इनका है और करना कुछ नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, मनीष जी ने जो प्रस्ताव रखा है, मैं उसका समर्थन करता हूं और मैं चाहूंगा इसके खिलाफ इन्क्वायरी बिठाई जाये और दिल्ली के अंदर कम से कम दिल्ली के अंदर खेलों के अंदर जो भ्रष्टाचार चल रहा है, उसको खत्म किया जाये और मैं मुख्यमंत्री कार्यालय में की गई कार्रवाई का घोर विरोध करता हूं। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल जी।

मुख्यमंत्री : माननीय अध्यक्ष महोदय मई 2014, में इस देश के लोगों ने भारतीय जनता पार्टी को भारी बहुमत देकर, ऐतिहासिक बहुमत देकर जिताया था और लोकसभा में भेजा था, केन्द्र में सरकार बनाई थी। लोगों को यह उम्मीद थी कि कांग्रेस ने और यूपीए की सरकार ने बहुत जबरदस्त भ्रष्टाचार किया और अब यह नयी सरकार आकर कुछ बदलाव करेगी। मात्र 9 महीने के अन्दर पता नहीं ऐसा क्या हुआ कि मई 2014 के बाद फरवरी 2015 में जब दिल्ली के अन्दर चुनाव हुए तो दिल्ली के लोगों ने भारतीय जनता पार्टी को इतनी बुरी तरह से नाकारा कि दिल्ली विधानसभा में 70 में से केवल 3 सीट रह गई। आम आदमी पार्टी को 67 सीट दी। उसके पहले पूरे देश में कहते थे मोदी वेव, मोदी वेव, मोदी वेव चल रही है। पहले यह लोग लोकसभा जीते, हरियाणा

जीते, झारखण्ड जीते, महाराष्ट्र जीते, दिल्ली में आकर इनका रथ रूक गया। वो पीड़ा, दिल्ली की हार की जो पीड़ा है, वो माननीय प्रधानमंत्री जी भुला नहीं पा रहे हैं। पिछले कुछ महीनों में मैं भारतीय जनता पार्टी के बहुत सीनियर लोगों से मिला, कई केन्द्रीय मंत्रियों से मिला, बीजेपी के कई सीनियर लीडर से मिला। उन्होंने प्राईवेट में बताया कि जब से दिल्ली के अन्दर हार हुई है, दिल्ली के अन्दर न केवल भाजपा हारी बल्कि दिल्ली के अन्दर भाजपा का पूरी तरह से सफाया हो गया तो जब भी आपका नाम प्रधानमंत्री जी के सामने आता है, वो ऐसे तिलमिला जाते हैं, जैसे उनका खून खौल उठता है। कोई अरविन्द केजरीवाल का नाम प्रधानमंत्री जी के सामने ले रहा है तो बुरी तरह से वो बौखला जाते हैं। जब से हमारी सरकार बनी है, हमने पूरी कोशिश की है। हमें जनता ने वोट दिया है। जनता की हमसे बहुत उम्मीदें हैं और जो भारी बहुमत दिल्ली की जनता ने आम आदमी पार्टी को दिया है, उससे लगता है कि जनता की जितनी अपेक्षायें, कितनी उम्मीदें हम लोगों से हैं। उन्हीं उम्मीदों को पूरा करने के लिये हम लोग रात-दिन लगे हुए हैं। हम लोग चौबीसों घण्टे काम कर रहे हैं। राजनीति चुनाव से पहले होनी चाहिए, चुनाव लड़ लिये, अब जो भी सरकार बनी, जिस भी पार्टी की सरकार बनी, उसके साथ मिलकर सब लोगों को देश के हित के लिए और दिल्ली के हित के लिए काम करना चाहिए। इसी भावना के साथ पिछले कई महीनों से हम पूरी कोशिश कर रहे हैं। केन्द्रीय मंत्रियों के पास जा रहे हैं। मैं खुद केन्द्रीय मंत्रियों के पास जा रहा हूं। मेरे अपने मंत्री हर केन्द्रीय मंत्री के पास जा रहे हैं। हम उनसे सहयोग लेने के लिए जा रहे हैं, उनको सहयोग देने के लिए जा रहे हैं। क्योंकि हम चाहते हैं कि दिल्ली का विकास, केन्द्र और दिल्ली की सरकार दोनों मिलकर करें। मैं माननीय प्रधानमंत्री जी से भी मिला। शायद दो या तीन बार उनसे मुलाकात प्राईवेट में

हुई है। उनको मैंने एक ही बात कही। मैंने कहा, ''प्रधानमंत्री जी, हमें आपसे पैसा नहीं चाहिए, हमें आपसे जमीन भी नहीं चाहिये, जितनी जमीन है उसी से काम चला लेंगे। ये जो रोज-रोज की किच-किच है, कभी एलजी को पीछे छोड़ देते हो, कभी एसीपी को पीछे छोड़ देते हो, ये बन्द कर दो। हमें तंग करना बंद कर दो। रोज-रोज की जो हमारी सरकार के अन्दर अड़चन डाल रहे हो, वह बन्द कर दो। आपके जितने प्रोग्राम हैं, मैं पूरा करके दूंगा। आपका स्वच्छ भारत का प्रोग्राम है, मैं दिल्ली को स्वच्छ बना कर दिखाऊंगा और मैं यह सारा क्रेडिट आपको दूंगा। मैं खड़ा होकर कहूंगा कि मोदी जी ने साथ दिया था।'' मैंने बोला मोदी जी को अपनी मीटिंग के अन्दर। जो अभी सत्येन्द्र जैन जी ने कहा, मैंने कहा था मोदी जी को। मैंने कहा दिल्ली के अन्दर एक साल के अन्दर, एक साल दिल्ली में अड़चन डालना बन्द कर दो तो एक साल के अन्दर हम दिल्ली चमका कर दिखा देंगे। अगली बार जब प्रेसिडेंट बराक ओबामा दिल्ली आयें तो सारा क्रेडिट आपको मिलेगा। बराक ओबामा मुझे थोड़े ही न जानता है, वो मोदी जी को जानता है। वो कहेगा आज तो मोदी जी ने दिल्ली चमका दी तो सारा क्रेडिट हम आपको देंगे। आपका स्किल इण्डिया मिशन है, हम दिल्ली में स्किल करके दिखायेंगे। आपका स्वच्छ भारत है, हम दिल्ली में स्वच्छ करके दिखायेंगे। आपका योगा का सपना है, हम योगा दिल्ली करके दिखायेंगे। लेकिन आप अड़चनें डालना बन्द कर दो। वो नहीं माने, कुछ नहीं बोले, वो अड़चनें जारी रही। लेकिन 15 दिसम्बर को जो हुआ, उससे पहले वो हमारे विधायकों को गिरफ्तार करते रहे। हम चुप रहे। वो एलजी के जरिये नल एण्ड वॉएड करते रहे, हम चुप रहे। हर किस्म की अड़चन अड़ाते रहे, हम चुप रहे। लेकिन 15 दिसम्बर को जो उन्होंने किया, वो भारत के इतिहास में एक शर्मनाक दिन है, काला दिन है। शर्म आनी चाहिये कि भारत का जो प्रधानमंत्री है, उसने

इस किस्म की हरकत की है। जब मैं सुबह-सुबह दफ्तर के लिए निकलने लगा तो 15 तारीख को दस बजे के करीब तो मुझे फोन आया कि आपके दफ्तर पर सीबीआई की रेड हो गई है। मुझे यकीन नहीं हुआ। रेड करनी थी तो चारा घोटाले वालों पर करते, कोयला घोटाले वालों पर करते रेड करनी थी तो टू जी वालों पर करते, सारे भूल गये यह लोग। व्यापम वाले पर करते। मेरे पर किस चीज की रेड हो गई है? मैंने ऐसा क्या कर दिया और कोई आरोप नहीं, कुछ नहीं है, बोले कि मेरे दफ्तर पर रेड हो गई है। फिर दो-तीन फोन और आये मैंने अपने डिप्टी सैक्रेटरी को बोला कि जा कर देखो तो वो बोले कि अन्दर नहीं घुसने दे रहे तो पता चला कि हां, रेड हो गई है। मेरे दफ्तर पर रेड हो गई है। फिर घंटे दो घंटे बाद सीबीआई का बयान आया कि मुख्यमंत्री के दफ्तर पर रेड नहीं हुई है, उनके प्रिंसीपल सैक्रेटरी पर रेड हुई है। उनको डर था। चलो, भाजपा वाले इतने तो मानते हैं कि केजरीवाल ईमानदार है, केजरीवाल का नाम ले लिया तो बदनामी हो जायेगी। बोले केजरीवाल पर रेड नहीं हुई है, उनके प्रिंसीपल सैक्रेटरी पर रेड हुई है। प्रिंसीपल सैक्रेटरी पर रेड हुई है तो मेरे दफ्तर आने की क्या जरूरत है?

शाम तक बोले कि प्रिंसीपल सैक्रेटरी 2007 में जब एजुकेशन के दफ्तर में थे, जब वो वैट में 2008 में थे तो उन्होंने किसी एक कम्पनी को ठेके दिये थे, उसकी छानबीन हो रही है। तो मैंने कहा कि एजुकेशन की छानबीन 2007 की हो रही है। तो एजुकेशन डिपार्टमेंट में जाओ। फाईल तो वहां मिलेगी। मेरे दफ्तर में फाईल कहां से मिलेगी। मुख्यमंत्री के दफ्तर में फाईलें नहीं होती, मुख्यमंत्री के दफ्तर में फाईल आती है, मैं साईन करता हूं और फाईल उस विभाग को वापिस चली जाती है। मेरे विभाग में तो 10-15 दिन की फाईल मिलेगी और अगर एजुकेशन डिपार्टमेन्ट का कोई 2007 का घपला पकड़ना है तो एजुकेशन

डिपार्टमेंट में जाओ, वहां नहीं गये सीबीआई वाले। अगर वैट डिपार्टमेंट का 2008 का घपला पकड़ना है तो वहां जाओ, सीबीआई वाले वहां नहीं गये। मेरे दफ्तर के अन्दर एजुकेशन डिपार्टमेन्ट की 2007 की फाईलें ढूंढने आये तो यह तो साबित हो गया कि राजेन्द्र तो सिर्फ बहाना था केजरीवाल निशाना था। इनकी काली करतूतें धीरे-धीरे सामने आ गई। कहते हैं कि सच्चाई के रास्ते पर चलते हैं तो ऊपर वाला साथ देता है। उसके बाद पता चला, मेरे पास किसी का फोन आया कि यह जो सुबह से जब से आये हैं, सीबीआई वाले मेरे आफिस में, एक डीडीसीए की फाईल है, उसी को लेकर बैठे हैं और कोई फाईलें नहीं देख रहे। एक डीडीसीए की फाईल थी, सीक्रेट फाईल मेरे दफ्तर के अन्दर वो लेकर बैठे हैं सुबह से, वही पढ़ रहे हैं, तो पता चला कि यह डीडीसीए की फाईल की वजह से आये हैं। कुछ दिन पहले चेतन सांघी ने डीडीसीए की इन्क्वायरी करी और महा घोटाले निकले उसके अन्दर। उसके खिलाफ दो फर्जी एफआईआर दर्ज करा दी इन लोगों ने। और अब डीडीसीए की फाईल की वजह से वहां पर छापा मारने आये थे। आज आठवां दिन है पिछली 15 तारीख को रेड हुई थी।

आज आठवां दिन है, आज 22 तारीख हो गई, इन आठ दिनों में छः दिन तक लगातार राजेन्द्र कुमार की इंटोरेगेशन की गई है, 50 घंटे से ज्यादा की इंटेरोगेशन हुई, 14 घंटे से ज्यादा रेड चली, 14 ठिकानों पर रेड चली। मैं माननीय प्रधानमंत्री से ये पूछना चाहता हूं क्या मिला आपको? कुछ नहीं मिला अगर मिलता तो सीबीआई को मिलता बाद में है, बाहर आकर पहले बताते हैं, ये मिल गया, ये मिल गया, लीक करने में सीबीआई से ज्यादा माहिर कोई नहीं है। अभी तक कुछ नहीं मिला, क्या मिला, कह रहे हैं राजेन्द्र जी के एकाउंट में 27 लाख

रूपए मिले। अरे डेढ़-दो लाख रूपए तनख्वाह है उस आदमी की, सैलरी एकाउंट में डिक्लेयर कर रखा है वो एकाउंट नंबर। 27 लाख रूपए जो मिले है वो एकाउंटेंड फोर मिले, सेविंग एकाउंट है। 2,39,000 रूपए का कैश मिला उनके घर में। मोदी जी का एक सूट बना था, पता नहीं कितने लाख का था, दस लाख का, मोदी जी का एक सूट दस लाख रूपए का। हमारा अफसर....हां चाय बनाते थे, बताते हैं पता नहीं चाय वाले के पास दस लाख रूपए का सूट कहां से आ गया? ऐसी कौन सी चाय बेचा करते थे, दस-दस लाख रूपए के सूट और बता रहे हैं एक लाख रूपए से कम तनख्वाह है। इस अफसर की दो लाख रूपए महीने की तनख्वाह और 2,39,000 रूपए कैश मिल गया वो भी एकाउंटेंड फॉर है। एक लॉकर मिला उसमें कुछ नहीं, खाली लॉकर और 12 दारू की बोतलें मिली। इस दुनिया के सबसे बड़े जनतंत्र के सबसे बड़े प्रधानमंत्री रेड करवाए और 12 दारू की बोतलें मिले तो शर्म की बात है। वाकई शर्म की बात है। इसके बाद इनको अगर कुछ मिला, अब ये मीडिया वाले कल चलाएंगे सारे जने केजरीवाल प्रोटक्ट करैप्ट बाबू, केजरीवाल प्रोटक्ट करैप्ट बाबू। करप्शन साबित तो हो। कौन सी करप्शन है? कहां है वो करप्शन? मैं अकेला मुख्यमंत्री हूँ जिसने जरा से एक एविडेन्स के ऊपर अपने मंत्री को बाहर कर दिया था। मैं अकेला मुख्यमंत्री हूं जिसके ऑफिस में प्रिंसिपल सैक्रेटरी एक है, उनके खिलाफ भ्रष्टाचार का मामला मिला। मेरे दफ्तर ने वो ट्रैप आर्गनाइज करवाया था। अगर भ्रष्टाचारियों को सजा दिलवाना मेरा काम है, तो ईमानदार अफसरों के साथ खड़ा होना भी मेरा काम है और मैं हिम्मत करता हूं जो ईमानदार अफसरों के साथ खड़ा होता हूं। अगर कल को कुछ मिलेगा, राजेन्द्र मेरा चाचा नहीं लगता, ताऊ नहीं लगता। राजेन्द्र से मेरा कोई रिश्ता नहीं है। लेकिन अगर उसने कुछ नहीं किया और अगर कोई उसकी तरफ आंख उठाकर देखेगा, तो मजाल जो उसकी हिम्मत और अगर राजेन्द्र ने कल कुछ किया तो छोड़ेंगे नहीं उसको।

अच्छा जी अब छः दिन इंटरोगेशन हुई सीबीआई के अंदर। क्या पूछा राजेन्द्र

से? ये नहीं पूछा कि वो ठेके किसको दिए थे। वो डीडीसीए की फाइल ले गए थे। उसकी फोटो कापी कराकर ले गए थे, उसके बारे में पूछ रहे थे। उस फाइल में क्या था। उस फाइल में एक नोट था। उसकी फोटो कापी कराकर ले गए थे, डीडीसीए के अंदर एक अफसर मुझसे मिलने आया करता था, डीडीसीए का एक ह्विसल ब्लोअर मेरे से मिलने आया करता था। उस फाइल में लिखा था, उस अफसर ने मुझे बताया कि कुछ महीने पहले जेटली जी के यहां पर मीटिंग हुई, डीडीसीए के सारे अफसरों की मीटिंग हुई। उस मीटिंग में जेटली ने कहा कि एसएफआईओ की चिंता मत करो, मेरे अंडर में आता है, ये सारे तो मैं कंपाउंड करा दूंगा। दिल्ली पुलिस के अंदर जितनी एफआईआर हैं, वो मैं रफा-दफा करा दूंगा, पुलिस अपने अंडर में है और अगर केजरीवाल ने कमीशन आफ इन्कारी बनाया तो एलजी अपना खास आदमी है मैं नल एण्ड वॉएड करा दूंगा। ये रिटिन में है उस फाइल के अंदर। उस फाइल के अंदर ये रिटिन में है, वो नोट था तो वो मानसिक प्रताड़ित कर रहे थे। राजेन्द्र जी को, पूछ रहे थे उससे कि बताओ कौन आया करता था केजरीवाल के पास। डीडीसीए से कौन अफसर आया करता था, मानसिक रूप से उनको प्रताड़ित किया गया, उनका ब्लडप्रैशन बढ़ गया। ये मकसद था इन लोगों का। ये पूरी रेड करने का। मैं इनकम टैक्स में काम किया करता था। हम भी रेड मारने जाया करते थे अगर इतनी बुरी तरह से कोई रेड फ्लॉप हो जाती तो किसी न किसी की नौकरी जरूर जाती। सीबीआई का इस टाइम हैड कौन है, सीबीआई किसको रिपोर्ट करती है, माननीय प्रधानमंत्री जी को। सीबीआई सीधे प्रधानमंत्री जी के अंडर में आती है। सीबीआई का डिपार्टमेंट सीधे, मैं आज इस सदन के माध्यम से प्रधानमंत्री का इस्तीफा मांगता हूं इतनी फ्लॉप रेड करवाने के लिए और सीबीआई का गलत इस्तेमाल करने के लिए। प्रधानमंत्री जी ने ये रेड केवल और केवल जेटली जी बचाने के लिए की है और उनका कोई मकसद नहीं था इस रेड को करवाने का।

...व्यवधान

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी बैठिए, विजेन्द्र जी बैठ जाइये।

मुख्यमंत्री : ये जो प्रधानमंत्री जी ने किया, ये वाकई बहुत शर्मनाक बात है। हमारे देश के संघीय ढांचे के लिए ये बहुत ही खतरनाक बात है। अगर किसी फाइल को लेने के लिए वो सीबीआई की किसी भी मुख्यमंत्री के यहां रेड करा सकते हैं तब तो कोई भी बचा नहीं रहा। कल महाराष्ट्र के सीएम के खिलाफ रेड करा देंगे, असम के सीएम के खिलाफ रेड करा देंगे, वैस्ट बंगाल के सीएम के खिलाफ रेड करा देंगे, किसी के यहां रेड करा देंगे और फाइलें उठा के ले आएंगे। फिर क्या बचा, फिर कोई जनतंत्र नहीं बचा। मेरे पास तीन चार दिन पहले एक सीबीआई का आफीसर आया था। मुझे कहता है सर ऊपर से इंस्ट्रक्शन हैं हम लोगों को कि जितने भी अपोजिशन के मुख्यमंत्री हैं, जितने भी अपोजिशन के लीडर्स हैं, सब को सैट कर दो,

अध्यक्ष महोदय : किसी का नाम मत लेना।

मुख्यमंत्री : सीबीआई को सबके पीछे लगा दो। जो-जो पार्टियां हमारी बात मानना चालू कर दे वो तो ठीक है, जो पार्टी हमारी बात ना माने 2018 तक उनका कुचल दो सारी पार्टियों को। ये सीबीआई को इन्होंने इंस्ट्रक्शन दी हुई है। जो गुजरात मॉडल है या तो अपने सामने वाले अपोजिशन को खरीद लो और या उसको खत्म कर दो। ये ही इनका मॉडल है। ये तो जनतंत्र नहीं है। वो चुने हुए सीएम्स को सीबीआई से डराना चाहते हैं लेकिन मैं उनको कहना चाहता हूं प्रधानमंत्री जी आप बाकियों को डरा सकते हैं, दूसरी पार्टी वालों को डरा सकते हैं दूसरे नेताओं को डरा सकते हैं, यहां आपका रॉग नंबर लग गया, हम डरने वाले नहीं हैं और वैसे भी मैं सोच रहा था प्रधानमंत्री जी को इस

देश के लोगों से क्या लेना-देना? आधे से ज्यादा समय तो वो विदेशों में रहते हैं एक बहुत बड़ा हवाई जहाज है अकेले उनका। उसके अंदर सारी सुविधाएं हैं, अंदर अपना बैडरूम वगैरह सारा बना रखा है बताते हैं। सारी सुविधाएं बढ़िया से बढ़िया सुविधाएं उस हवाई जहाज के अंदर कर रखी हैं। पूरी दुनिया में घूम रहे हें। पहले तो वीजा नहीं मिला कई सालों तक, अब वो सारे सपने पूरे कर रहे हैं तो वो पूरी दुनिया में घूम रहे हैं। फाइव स्टार होटल्स में रूक रहे हैं, करोड़ों रूपए खर्च कर रहे हैं और जितनेक दिन देश में आते हैं, उतने दिन बस सीबीआई, कभी सीबीआई को पीछे छोड़ दिया, कभी एल.जी. को नल एण्ड वाएड कर दिया, ये ही काम करते हैं। जितेन दिन देश के बाहर रहते हैं, दिल्ली ठीक ठाक चलती है। जैसे ही देश में आते हें, कबाडा करना शुरू कर देते हैं। कहते थे 'ना खाऊंगा ना खाने दूंगा।' वो तो सब खत्म हो गया है, अब है ना काम करूंगा और ना काम करने दूंगा।' ये कुछ अखबार वाले और माननीय विपक्षी हमारे जो लीडर आफ अपोजिशन हैं। उन्होंने एक मुद्दा उठाया है कि हमारी ज्यूरिस्डिक्शन नहीं बनती है। पहली चीज तो ये हमने एक ट्रान्सपोर्ट स्कैम में कमीशन आफ इन्क्वारी बनाया था अगस्त के महीने में। ट्रांस्पोर्ट स्कैम के अंदर पुरानी जो मुख्यमंत्री थी उनके और उनके चेहते कुछ आफिसर फंस रहे थे, मुझे समझ में नहीं आया, उनको बचाने की इस सरकार को क्या पड़ी थी, इन्होंने क्यों उस ट्रान्स्पोर्ट स्कैम के ऊपर जो इन्क्वारी बिठाई। एमएचए ने उसको नल एण्ड वॉएड कर दिया। इनको क्या पड़ी थी उनको क्यों बचा रहे थे। उनको किस लिए बचा रहे थे क्योंकि इनके एलजी साहब फंस रहे थे। उसके अंदर। एलीजी साहब भी फंस रहे थे। एलजी साहब दौड़े-दौड़े गए। मैंने एमएचए वालों से पूछा था, एमएचए के सीनियर अफसरों से पूछा था, बोले जी दौड़े-दौड़े रोज चक्कर लगाया करते थे एलजी पागलों की तरह से एएचए के पागलों की तरह

से किसी तरह से ये कमीशन आफ इन्क्वारी ठप्प होजाए तो आप कुछ अखबारों ने छापा था कि हाई कोर्ट ने उसको एमएचए ने नल एण्ड वॉएड किया था। एमएचए की कोई पावर नहीं है हमारी कमीशन आफ इन्क्वारी नल एण्ड वॉएड करने की। एमएचए का कोई पावर नहीं दी हुई। उन्होंने कहा हाई कोर्अ ने उसको स्टे किया हुआ है। ये हाई कोर्ट का आर्डर है, हाई कोर्ट ने कोई स्टे नहीं कर रखा। अभी भी चल रहा है। केवल काऊंसिल स्टैप्स क्योंकि उस इन्क्वारी आफ कमीशन ने एक आफिसर को गिरफ्तार करके नान वेलेबल वारण्ट उसके खिलाफ जारी कर दिए थे केवल उसके ऊपर स्टे लगाया था कि इस किस्म की कोआर्सिव कार्रवाई नहीं की जाएगी तो जैसे हमने ट्रांसपोर्ट स्कैम के ऊपर कमीशन आफ इन्क्वारी बनाया था, वैसे ही यहां पर डीडीसीए के स्कैम के ऊपर कमीशन आफ इन्क्वारी बनाने का अधिकार इस हाउस को है। दूसरी चीज, केंद्र सरकार ने हमको खुद जुलाई के महीने में चिट्ठी लिखी है कि इसकी इंक्वायरी करो। जब चिट्ठी लिखी थी, तब ये नहीं पता था कि कौन फंसेगा इसके अंदर। आज ये पता चल रहा है कौन फंसेगा तो कह रहे हैं, ''नहीं-नहीं तुम इंक्वायरी नहीं कर सकते। अरे! तुम्हारी चिट्ठी आई हुई है, जुलाई के महीने की तुम्हारी चिट्ठी है कि तुम इंक्वायरी करो। और तीसरी चीज जो बार-बार कही जा रही है डीडीसीए कंपनी है जो, कंपनी के खिलाफ आप नहीं कर सकते। कल को डीडीसीए बिजली के बिल नहीं देगी तो बिजली के बिल नहीं काटने जाएंगे क्या हम लोग? कल वो पानी के बिल नहीं देगी डीडीसीए तो पानी नहीं काअने जाएंगे क्या? तो अगर बिजली का कोई वॉयलेशन करेगी डीडीसीए, हमारा अधिकार है। पानी का कोई वायलेशन करेगी डीडीसीए, हमारा अधिकार है, कंपनी इस एक्ट का वॉयलेशन अगर डीडीसीए करेगी तो कंपनी वाले देखेंगे केंद्र सरकार का अधिकार है। आज उन्होंने स्पोटर्स के अंदर जो घोटाले किये, स्टेडियम बनाने के अंदर जो घोटाले

किये हैं, खेल-कूद के अंदर जो घोटाले किए हैं, सलैक्शन ऑफ प्लेयर्स के अंदर जो घोटाले किये हैं उसकी जांच हम लोग इसके जरिये कर रहे हैं इस कमीशन ऑफ इंक्वायरी के जरिय इस हाउस की पूरी पावरर्स हैं। अब ये तो साबित हो चुका है जो कि घोटाला हुआ ये माननीय लीडर ऑफ अपोजिशन चाहे ना माने आपके बॉस भी मान रहे हैं कि घोटाले हुए हैं सारे मान रहे हैं कि घोटाले हुए हैं। इंटर्नल इंक्वायरी रिपोर्ट है कहती है कि घोटाले हुए हैं, एसएफआईओ की रिपोर्ट कहती है घोटाले हुए, दो जजीज की इंक्वायरी कमेटी बैठी थी, वो कहती है कि घोटाले हुए। पर अभी हाईकोर्ट को जस्टिस मुद्गल को क्यों बनाना पड़ा? क्योंकि घोटाले हुए थे, क्योंकि हाईकोर्ट भी मानता है कि घोटाले हुए हैं। लेकिन वो कह रहे हैं कि घोटाले में इनके बॉस का नाम नहीं है, लेकिन अब जब कीर्ति आजाद जी ने कल या परसों उन्होंने जो वीडियो दिखाया था, वीडिया में कीर्ति आजाद जी उनके सामने कह रहे हैं। इनके बॉस के सामने कि जो ये घोटाला चल रहा है और इनके बॉस ने साफ-साफ बोला कि मेरी ये जिम्मेदारी है किसारे घोटालेबाज अपने ही आदमी हैं, इनको बचाना मेरी जिम्मेदारी है। ये तो क्रिमिनल कोंस्प्रेसी है, सीधा-सीधा क्रिमिनल कोस्प्रेसी का केस बनता है। तो ये साबित हो चुका है अब कि घोटाले हए, ये साबित हो चुका है। अब इनके बोस उनको बचाने की कोशिश कर रहे थे, ढूंढना केवल इतना है कि इनके बॉस उनको बचाने की कोशिश क्यों कर रहे थे। उनका क्या इन्ट्रस्ट था? उनका क्या इन्ट्रस्ट था कि वो क्यों बचाने की कोशिश कर रहे थे? अगर उनको लगता है वो कह रहे हैं, सारी पार्टी इनकी खड़ी होके कह रही है इनोसेंट हैं, इनोसैंट है, अगर इनोसैंट है तो साबित करें, कमीशन ऑफ इन्क्वायरी के सामने आएं। डर किस चीज का लग रहा है? आपने हमारे ऊपर सीबीआई की रेड की। हम नहीं डरे, हमने जांच के साथ सहयोग किया अब छह दिन हो गए आज, आठ

दिन हो गए। आज हमने कुछ कहा, हमको डर नहीं लगता तुम्हारी सीबीआई से। एक कमीशन ऑफ इंक्वायरी से तुमको डर लगता है तो दाल में कुछ न कुछ तो गड़बड़ है। ऐसे अगर होने लग गया तो हर्षद मेहता भी खड़ा होके कह देगा कि मैं तो पाक साफ हूं, कलमाड़ी भी कह देगा मैं तो पाक साफ हूं, राजा भी कह देगा मैं तो पाक-साफ हूं। अपनी-अपनी पार्टी के चार मंत्री ले आएंगे और कह देंगे पाक साफ हूं। ऐसे नहीं चलता। देश में कुछ कानून है। अब कमीशन ऑफ इन्क्वायरी बैठी है। अगर आपको लगता है कि आप पाक साफ हैं तो कमीशन ऑफ इंक्वायरी के साथ सहयोग कीजिए और ये कुछ चैनल वाले चला रहे थे तीन-चार दिन पहले, क्या केजरीवाल बदल गए हैं। पहले केजरीवाल कहते थे सीबीआई इंडिपैंडेंट होनी चाहिए। हम आज भी कहते हैं कि सीबीआई ईंडिपैंडेंट होनी चाहिए लेकिन जिस दिन सीबीआई इंडिपैंडेंट होएगी वो राजेंद्र कुमार के खिलाफ आकर रेड नहीं मारेगी। सबसे पहले शिवराज सिंह चौहान के यहां जाकर रेड मारेगी। जिस दिन सीबीआई इंडिपैंडेंट हो गई सबसे पहले एक नोटिस प्रधानमंत्री जी को भेजेगी और पूछेगी कि आपके कोट के पैसे कहां से आए 10 लाख रूपये आपके पास कहां से आए जब आप चाय बेचा करते थे, जिस दिन सीबीआई इंडिपैंडेंट होएगी उस दिन वो सुषमा स्वराज जी और वसुंधरा राजे के यहां जाके रेड मारेगी, ये सीबीआई राजेंद्र जी के यहां रेड मारके इंडिपैंडेट नहीं होती ये सीबीआई इंडिपैंडेंट नहीं है किसको बेवकूफ बना रहे हो आप लोग। डीडीसीए पर आरोप लगे हैं।

अच्छा, ये एक ओर बड़ी मजे की चीज देख रहा हूं 3-4 दिन से सब लोग ये कह रहे हैं डीडीसीए पर आरोप, डीडीसीए में घोटाले हो गए, डीडीसीए में घोटाले हो गए, अचानक जेटली जी खड़े होके कहते हैं कि मेरी मानहानि कर दी। अरे आपका तो नाम ही नहीं लिया किसी ने डीडीसीए कह रहे हैं,

डीडीसीए के घोटालों को वो कहते हैं ना कि चोर की दाढ़ी में तिनका, तो जैसे ही लोग कहते हैं डीडीसीए में घोटाला तो वो खड़े हो के कहते हैं कि मेरी मानहानि कर दी, मेरी मानहानि कर दी। तो समझ में नहीं आ रहा कि अचानक उनको तकलीफ क्यों होती है। जरा सा सबूत होते ही हमने अपने मंत्री को निकाल दिया था। अगर प्रधानमंत्री जी के अंदर दम है और प्रधानमंत्री जी कहते हें कि मैं भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ रहा हूं तो वो भी अपना दम दिखाएं और सबसे पहले उनको अपनी कैबिनेट से बाहर कारास्ता दिखाएं तो जनता समझेगी कि उनके अंदर भी दम है जैसा आम आदमी पार्टी ने करके दिखाया, वैसे ये भी करके दिखाएं। उन्होंने हमारे खिलाफ मानहानि का केस किया है। हम तहे दिल से अरूण जेटली जी का शुक्रिया अदा करते हें इसके लिए उन्होंने बहुत अच्छा किया। मैं अब आपको बता दूं कि अब क्या-क्या स्टेज है, अब 5 जनवरी को पटियाला हाउस में अगली तारीख लगेगी उसमें प्रि-समनिंग एविडेन्स होता है, जेटली जी जा के बताएंगे कि क्यों हमें सम्मन किया जाए, हम चाहते हैं कि कोर्ट हमें सम्मन करे तो कोर्ट हमें सम्मन करेंगे तो जब कोर्ट हमें सम्मन करेंगे तब फिर हम जाएंगे वहां पे और उसके बाद ट्रायल चालू होगा, ट्रायल में पहले जेटली जी को विटनेस बॉक्स में खड़ा किया जाएगा और उनसे हमारा वकील क्रॉस एग्जामिन करेगा जितने भी सबूत है अभी तक वो सारे क्रास एग्जामिन किए जाएंगे आपको इस बिल के बारे में पता है, ये बिल आपने साइन किया था, सारा मुझे लगता है ये शानदार नजारा होगा पूरे देश के लिए। मुझे लगता है कि एक साल तक चलेगा अरूण जेटली जी का क्रॉस एग्जामिनेसन अपने पैर पे इतनी बड़ी कुल्हाड़ी कोई वकील मार ले, मैंने तो सोचा भी नहीं था और 7 लोगों के खिलाफ किया है तो उन सात लोगों के सात वकील क्रॉस एग्जामिन करेंगे जेटली जी को सबसे पहले। तब तक अगले चुनाव आ जाएंगे।

....व्यवधान

मुख्यमंत्री : बचना किस चीज से हैं जी?

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी बोल कैसे रहे हैं, ये निकाल दिया जाए, बिजेन्द्र जी ये आप गलत कर रहे हैं, आप बैठ जाइये विजेन्द्र जी।

मुख्यमंत्री : कल आप लोगों ने टीवी में देखा होगा। लोकसभा या राज्य सभा में मुझे बताया जा रहा है कि जेटली जी इतने ज्यादा नाराज हो गए, इतने ज्यादा नाराज हो गए बहुत गुस्से में आ गए और उन्होंने अपोजिशन को काफी उल्टा-सीधा बोला और उसके बाद वो अपने 6 या 7 मंत्रियों को लेके और सारी बीजेपी पार्टी को लेके केस दर्ज कराने के लिए गए। मैं ये सोच रहा था केस दर्ज कराने के वक्त इतने घबराए हुए हैं अगर वो कि उनको 6 मंत्रियों की जरूरत पड़ी और इतनी बड़ी पार्टी हम तो अगर हेयरिंग होती है तो हम तो यूं ही चले जाते हैं उठकर। हमारे खिलाफ इतने केस कर रखें हैं इन लोगों ने, हम को डर नहीं लगता, दिल में कुछ काला नहीं है, हमारा सब कुछ साफ है, हमको डर नहीं लगता हमें जहां मर्जी बुला लो। इतने सारे केस चल रहे हें पूरे देश के अंदर। तो अगर केस फाईल करने के वक्त इनको इतना डर लग रहा है कि 6 मंत्रियों की जरूरत पड़ रही है जब क्रॉस एग्जामिनेशन होगा तो पूरी कैबिनेट को बुलाना पड़ेगा और शायद बराक ओबामा को भी फोन करना पड़ेगा कि वहां से अपनी भी कैबिनेट भेज दे जरा। ये हमारी लड़ाई क्रिकेट को सुधारने के लिए है। आज दिल्ली के अंदर बिना पैसे दिए, इतने बच्चे मिलते हैं आज सलैक्शन होना लगभग नामुमकिन है। या तो सिफारिश होनी चाहिए या पैसे दिए जाने चाहिए। अभी किसी ने बताया कि किसी तरह से अंडर सिक्सटिन में 18 साल के झूठे-झूठे एज सर्टिफिकेट देकर बच्चों को खिलाया जा रहा है

और इतना बुरा हाल है। उसी क्रिकेट के गेम को ठीक करने के लिए, हमारी कोई किसी जेटली जी से कोई दुश्मनी नहीं है हमारी मोदी जी से कोई दुश्मनी नहीं है हमारी, हमारी किसी पार्टी से कोई दुश्मनी नहीं है,ह मारी ये सारी की सारी कवायद, दिल्ली के अंदर क्रिकेट के गेम को सुधारने की कवायद है। हमारी किसी से कोई दुश्मनी है। और ये जो कमीशन ऑफ इंक्वायरी बिठा रहे हैं, ये दिल्ली में क्रिकेट के सारे पहलुओं को परखेगा। पता चला बैटिंग भी बहुत होती है, आईपीएल में भी बहुत घपले हुए हैं, बता रहे हैं, सारी चीजों को देखेगा। अब देखना ये है कि जेटली जी ने जो उस अफसरों को आश्वासन दिया था कि आप चिंता मत करना कि एलजी अपना आदमी है, केजरीवाल ने अगर कोई कमीशन ऑफ इंक्वायरी बनेगा, तो क्या जेटली जी एलजी साहब को फोन करके इस कमीशन को नल एंड वॉयड कराते हैं कि नहीं कराते अब देखना अपने को ये है। मैं जेटली जी से निवेदन करूंगा कि इस कमीशन ऑफ इंक्वायरी के साथ सहयोग करें, अपना सारा पक्ष उधर रखें। देश के सामने अपनी इनोसैंस साबित करें। मैं कई बार ये सोचता हूं कहते हैं दिल्ली हाफ स्टेट है, हाफ स्टेट है, हाफ स्टेट है। आधे राज्य का चौथाई मुख्यमंत्री हूं मैं और इतना डरे हुए हैं ये सारे, रात को सपने में हम लोग आते हैं इनके, इनका एक ही मकसद है कि किसी भी तरह से केजरीवाल को और आम आदमी पार्टी को बर्बाद कर दो। हम लोगों को बर्बाद करने में लगे हुए हैं। इनका एक ही मकसद है, पूरी भारतीय जनता पार्टी का, नरेंद्र मोदी जी का, प्रधानमंत्री जी का, कि ये किसी भी तरह से केजरीवाल को और इसको बर्बाद करना चाहते हैं। कभी ये एमएलएज को पकड़ लेते हैं, कभी अफसरों को तंग करते हैं, एलजी को पीछे छोड़ रखा है, एसीबी को पीछे छोड़ रखा है और अब तो इन्होंने अपना ब्रह्मास्त्र चला दिया सीबीआई भी हमारे पीछे दोड़ दी। अब क्या करेंगे? अब क्या बचा, लेकिन एक कहावत है जाको राखे साईंसा मार सके ना कोई। हमारा मकसद केवल और

केवल जनता की सेवा करना है, जनता के लिए आए हैं, हमारी कोई ईगो नहीं है।

अभी भी अगर जैसा मैंने कहा। हमने पूरी कोशिश की इन लोगों के साथ दोस्ती के साथ हाथ बढ़ाके काम करने की। अभी भी अगर हमें कहीं भी झुकना पड़ेगा जनता की सेवा करने के लिए। किसी के सामने भी झुकना पड़ेगा, हम लोग झुकने के लिए तैयार हैं। हमारा एक ही मकसद है कि किसी भी तरह से भ्रष्टाचार दूर करना और जनता की सेवा करना। हम फिर से निवेदन करते हैं हम प्रधानमंत्री जी से कि हमारे इस काम में हमें सहयोग करें। हमें आपसे कुछ भी नहीं चाहिए। केवल आप हमारे कामकाज में टांग अड़ाना बन्द कीजिए। जो सी.बी.आई. की रेड हुई। उसे मैं भारतीय जनतंत्र के लिए और संघीय ढांचे के लिए बहुत खतरनाक मानता हूं और कड़े से कड़े शब्दों में उसकी निन्दा करता हूं और जो आज इस सदन के जरिये कमीशन ऑफ इन्क्वायरी बनाया जा रहा है उसका मैं समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : माननीय उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी।

श्री मनीष सिसोदिया (माननीय उप मुख्यमंत्री) : अध्यक्ष महोदय, यदि सदन अनुमति दें तो मैं नियम 90 के अन्तर्गत निम्नलिखित संकल्प प्रस्तुत करना चाहूंगा जिस पर अभी चर्चा हुई। जिसमें।

अध्यक्ष महोदय : हां, करिए-करिए।

श्री मनीष सिसोदिया (माननीय उप मुख्यमंत्री) : कि यह सदन राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार के सचिवालय में स्थित माननीय मुख्यमंत्री के कार्यालय में दिनांक 15 दिसम्बर, 2015 को सी.बी.आई. द्वारा डाले गये छापे के प्रति गम्भीर चिन्ता व्यक्त करता है। यह सदन ऐसे कृत्यों को अपनाने के लिए भारत सरकार

की निरंकुशता की कड़ी निन्दा करता है जो देश के संघीय ढांचे और भारत के संविधान की आत्मा का अतिक्रमण करते हैं।

अध्यक्ष महोदय : अब माननीय उप मुख्यमंत्री जी के द्वारा प्रस्तुत किये गये सदन के सामने हैं–

जो इसके पक्ष में हैं वो हां कहें।

जो इसके विरोध में हैं वो ना कहें।

सदस्यों के हां कहने पर।

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता।

संकल्प स्वीकार हुआ।

माननीय सदस्यगण, मुझे आप सबको यह सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि इस विधान सभा के इतिहास में पहली बार विधान सभा सचिवालय द्वारा विशेष थीम पर आधारित वॉल कलेन्डर तथा टेबल कलेन्डर और विधायकों के उपयोग के लिए डायरी का प्रकाशन किया जा रहा है। इन कलेन्डर तथा डायरी का विमोचन दिनांक 25 दिसम्बर, 2015 को पूर्वाह्न 11.00 बजे किया जायेगा। माननीय मुख्यमंत्री जी ने इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि अपनी गरिमामयी उपस्थिति के लिए सहमति दे दी है। मेरा सभी सदस्यों से अनुरोध है कि वे दिनांक 25 दिसम्बर, 2015 को पूर्वाह्न 11.00 बजे विधान सभा सचिवालय के मुख्यमंत्री समिति कक्ष में उपस्थित होकर इस कार्यक्रम को सफल बनायें।

मैं मीडिया के बन्धुओं को भी इस अवसर पर आमंत्रित करता हूं कि कलेन्डर और डायरी के विमोचन समारोह के वो भी साक्षी बनें। इससे पहले कि मैं सदन को अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित करूं, सदन के नेता और माननीय

मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल जी, माननीय उप मुख्यमंत्री जी मनीष सिसौदिया जी, सभी माननीय मंत्री गण, श्री विजेन्द्र गुप्ता जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष तथा सदन के सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक आभार प्रकट करता हूं। इसके अलावा विधान सभा सचिव तथा सचिवालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ दिल्ली पुलिस, खुफिया एजेन्सियों, सी.आर.पी.एफ. बटालियन 55 तथा लोक निर्माण विभाग के सिविल, इलेक्ट्रिकल व हॉर्टिकल्चर डिवीजन, अग्नि शमन विभाग आदि द्वारा किये गये सराहनीय कार्यों के लिए भी उनका धन्यवाद करता हूं। विधान सभा की कार्रवाई को मीडिया के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाने वाले सभी पत्रकार बन्धुओं का मैं हार्दिक धन्यवाद करता हूं। अब मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध्या करूंगा कि वे राष्ट्रगान के लिए खड़े हों।

(राष्ट्रगान जन-गण-मन)

अब सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित की जाती है। एक बार सभी का धन्यवाद। नमस्कार।

(सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित की गयी।)

विषय सूची

सत्र-2 भाग (2) मंगलवार, 22 दिसम्बर, 2015/1 पौष, 1937 (शक) अंक 26		
Ø- l-	fo"k;	i"B l-
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	1–2
2	शोक संवेदना	3–4
3	माननीय अध्यक्ष द्वारा व्यवस्था	4–10
4	नियम–107 एवं नियम–90 के अंतर्गत उप मुख्यमंत्री द्वारा प्रस्ताव	10–137

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

प्रसन्ना कुमार सूर्यदेवरा

सचिव

PRASANNA KUMAR SURYADEVARA

Secretary

एम.एस. रावत

उप-सचिव (सम्पादन)

M.S. RAWAT

Deputy Secretary (Editting)